अक्तूबर में वृद्धि दर सुस्त पड़कर 0.4 प्रतिशत पर आई, आईआईपी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर-12

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान वक्फ संपत्ति विवरण पर समय सीमा बढ़ाने से किया इन्कार-12

एस जयशंकर बोले- जैविक हथियार की चुनौती से निपटने को खाका तैयार करने की जरूरत-13

कोच ने की तारीफ कहा- फिटनेस और फॉर्म बरकरार विराट के भविष्य को लेकर सवाल ही नहीं उठता-14

6th वार्षिकोत्सव विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

मुरादाबाद

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वादशी 03:57 उपरांत त्रयोदशी विक्रम संवत 2082

मंगलवार, 2 दिसंबर 2025, वर्ष 6, अंक 245, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

संसद ड्रामा करने की जगह नहीं : मोदी

शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले प्रधानमंत्री बोले-विपक्ष इसे हताशा निकालने का मंच बना रहा

पहले दिन गूंजे एसआईआर बंद करो के नारे, बार बार गतिरोध के बाद लोस की कार्यवाही स्थगित

हंगामे के बीच एक विधेयक पारित, सरकार ने माना-देशभर के एयरपोर्ट्स पर साइबर अटैक हुए

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्ष पर कड़ा हमला बोलते हुए कहा कि संसद ड्रामा करने की जगह नहीं है, यह काम करने की जगह है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विपक्ष संसद को चुनावी हार के बाद हताशा निकालने का मंच बना रहा है। संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले संसद परिसर में प्रधानमंत्री ने कहा कि सत्र को राजनीतिक ड्रामे का रंगमंच नहीं बनाना चाहिए, बल्कि यह रचनात्मक और परिणामोन्मुखी बहस का मंच होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि विपक्ष चाहे तो वह उसे राजनीति में सकारात्मकता लाने के कुछ सुझाव देने को तैयार हैं। मोदी ने संसद की कार्यवाही बाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा, हमें जिम्मेदारी की भावना से काम करने की जरूरत है। पिछले सत्रों के दौरान संसदीय कार्यवाही बाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, नाटक के लिए बहुत जगह है जो लोग यह करना चाहते हैं, वे इसे करते रहें। संसद नाटक के लिए जगह नहीं है, यह काम करने की जगह है। हाल में संपन्न बिहार विधानसभा चुनावों में राजग को मिली शानदार जीत से उत्साहित मोदी ने विपक्षी दलों पर कटाक्ष करते हुए कहा, यहां तक कि आप देश भर में ऐसा कर सकते हैं। आपने वहां बोला है जहां आप हार गए हैं। आप वहां भी बोल सकते हैं जहां आपको हार का सामना करना बाकी है। लेकिन संसद में, ध्यान नीति पर होना चाहिए, न कि नारों पर। बिहार में मतदाता सूची के एसआईआर का विरोध कर रहे विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण संसद के मानसून सत्र में दोनों सदनों की कार्यवाही बार बार बाधित हुई थी। कहा कि पिछले 10 वर्षों से विपक्ष जो खेल खेल रहा है, वह अब जनता को स्वीकार नहीं है। मोदी ने उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन को राज्यसभा के सभापति के तौर पर पहले सत्र की अध्यक्षता के लिए बधाई दीं।

संसद सत्र की कार्रवाई के पहले दिन मौजूद प्रधानमंत्री मोदी, स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा व संसदीय कार्यमंत्री मंत्री किरेन रीजीजू। ● एजेंसी

सरकार एसआईआर पर चर्चा के खिलाफ नहीं : रीजीजू

नई दिल्ली। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने राज्यसभा में जोर दिया कि सरकार मतदाता सूची के एसआईआर व चुनाव सुधारों पर चर्चा के खिलाफ नहीं है, लेकिन उसे जवाब देने के लिए कुछ समय दिया जाए। मंत्री के जवाब से असंतुष्ट विपक्ष ने सदन से बहिर्गमन किया। रीजीजू ने उच्च सदन में यह टिप्पणी उस समय की जब कांग्रेस नीत विपक्ष एसआईआर पर तत्काल चर्चा की मांग कर रहा था। उन्होंने कहा कि सरकार एसआईआर पर चर्चा की विपक्ष की मांग पर विचार कर रही है और इस मांग को खारिज नहीं किया गया है। विपक्ष की इस मुद्दे पर तत्काल चर्चा कराए जाने की मांग पर कहा कि वह एसआईआर पर चर्चा के समय के लिए शर्त नहीं रखे।

विपक्ष का हंगामा

पहले दिन लोकसभा में एसआईआर और कुछ अन्य मुद्दों को लेकर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण सदन की बैठक दो बार स्थगन के बाद दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। हंगामे के बीच ही लोकसभा ने 'मणिपुर माल और सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2025' पारित किया। विपक्ष की नारेबाजी के बीच ही वित्त मंत्री सीतारमण ने 'केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025' व 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पेश किया। सुबह 11 बजे सदन की बैठक राष्ट्रगान की धुन के साथ शुरू हुई। इससे पहले लोकसभा अध्यक्ष ने कुछ दिवंगत पूर्व सदस्यों के निधन की जानकारी दी जिसके बाद कुछ पल मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद बिरला ने महिला विश्वकप क्रिकेट और महिला कबड्डी विश्वकप में भारत की जीत पर खिलाड़ियों को बधाई दी। इसके बाद जैसे ही उन्होंने प्रश्नकाल शुरू करने का निर्देश दिया, कांग्रेस, सपा समेत विपक्षी दलों के सदस्य एसआईआर समेत कुछ मुद्दों पर चर्चा की मांग करते हुए अपने स्थानों पर खड़े हो गए। कुछ सदस्य आसन के समीप आ गए। बिरला ने कार्यवाही चलने देने की अपील की। वहीं सरकार ने माना-देशभर के एयरपोर्ट्स पर साइबर अटैक हुए थे।

सदन की लक्ष्मण रेखा का पालन करें सदस्य : राधाकृष्णन

नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति सीपी राधाकृष्णन ने सोमवार को उच्च सदन में अपने प्रथम संबोधन में सदस्यों से संविधान के प्रति निष्ठावान रहने और संसदीय आचरण की निर्धारित लक्ष्मण रेखा का पालन करने की अपील की। सोमवार को सभापति के तौर पर पहली बार सदन की कार्यवाही की अध्यक्षता कर रहे राधाकृष्णन ने अपने पहले भाषण में सदस्यों से संस्थानों का सम्मान करने और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का भी आह्वान किया।

तीन नवनिर्वाचित सांसदों ने राज्यसभा में शपथ ली

नई दिल्ली। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर से राज्यसभा के लिए नवनिर्वाचित तीन सदस्यों को सोमवार को सभापति सीपी राधाकृष्णन ने शीतकालीन सत्र के पहले दिन शपथ दिलाई। चौधरी मोहम्मद रमजान, सज्जाद अहमद किचलू और गुरविंदर सिंह ओबेरॉय समेत तीनों सदस्य सत्तारूढ़ नेशनल कांफ्रेस के हैं।

रेणुका चौधरी कुत्ते के साथ संसद पहुंचीं, विवाद खड़ा हुआ

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद रेणुका चौधरी सोमवार को अपनी कार में एक आवारा कुत्ते को लेकर संसद पहुंच गईं जिससे विवाद खड़ा हो गया और सत्तापक्ष के सांसदों ने उन पर नाटक करने का आरोप लगाया। विवाद के बीच रेणुका ने कहा कि जो लोग अंदर बैठे हैं वो काटते हैं, कुत्ते नहीं काटते। उनका कहना था कि वह आवारा जानवर को उठाकर पशु चिकित्सक के पास ले जा रही थीं। उन्होंने यह भी दावा किया कि सरकार को जानवर पसंद नहीं हैं और उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि आवारा कुत्ते को बचाने के खिलाफ कोई कानून नहीं है।

न्यूज ब्रीफ

सीमा पर 10,000 से अधिक बांग्लादेशी पकड़े गए: बीएसएफ

कोलकाता। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की पूर्वी कमान ने सोमवार को कहा कि पिछले एक साल में सीमापार से घुसपैठ करने या देश से बाहर जाने का प्रयास करते समय 10,263 बांग्लादेशियों को पकड़ा। सुरक्षा बल ने कहा कि हिरासत में लिए गए लोगों की संख्या घुसपैठ रोधी उपायों में की गई वृद्धि दर्शाती है, विशेष रूप से बांग्लादेश में अशांति के दौरान, जब बीएसएफ के जवानों ने अवैध प्रवासियों को भारत में प्रवेश करने से रोकने के लिए कड़ी निगरानी की।

वाणिज्यिक एलपीजी की दरें घटीं

नई दिल्ली। विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमतों में 5.4 प्रतिशत की सोमवार को वृद्धि की गई, जबकि वाणिज्यिक रसोई गैस की कीमतों में 10 रुपये प्रति सिलेंडर की कटौती की गई है। सरकारी तेल कंपनियों ने वैश्विक रुझानों के अनुरूप मासिक मूल्य संशोधन की घोषणा की है। सरकारी ईंधन खुदरा विक्रेताओं के अनुसार, दिल्ली में विमान ईंधन की कीमतें 5,133.75 रुपये प्रति किलोलीटर बढ़कर 99,676.77 रुपये प्रति किलोलीटर हो गईं। यह तीसरी मासिक वृद्धि है। एक नवंबर को कीमतों में करीब एक प्रतिशत और एक अक्टूबर को 3.3 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी।

पराली जलाने को दोष नहीं दे सकते वायु प्रदूषण के कई अन्य कारक

नई दिल्ली, एजेंसी

- **शीर्ष कोर्ट ने कहा- प्रदूषण संकट पर सर्दियों में केवल रस्मी सुनवाई नहीं, नियमित निगरानी की जरूरत**
- **अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान के के लिए महीने में दो बार होगी सुनवाई**

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर सुनवाई को केवल सर्दियों के महीनों में 'रस्मी' सुनवाई के तौर पर नहीं देखा जा सकता है, और इस समस्या के अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए महीने में दो बार सुनवाई की जाएगी। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने सामान्य विमर्श में एक अहम बदलाव करते हुए कहा, पराली जलाने का मुद्दा अनावश्यक रूप से राजनीतिक मुद्दा या अहम का मुद्दा नहीं बनना चाहिए।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने दिल्ली- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण के लिए पराली जलाने को मुख्य कारण बताए जाने पर सवाल उठाते हुए पूछा, कोविड के दौरान पराली जलाई जा रही थी, लेकिन फिर भी लोगों को साफ नीला आसमान क्यों दिखाई दे रहा था? इससे ज्ञात होता है कि इसके पीछे अन्य कारक भी हैं। न्यायमूर्ति सूर्यकांत के स्वयं का पैतृक निवास हरियाणा के हिसार में स्थित है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, हम पराली जलाने पर टिप्पणी नहीं करना चाहते, क्योंकि इसका बोझ उन लोगों (किसानों) पर डालना गलत है, जिनका इस न्यायालय में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों में स्पष्टता की मांग करते हुए केंद्र से वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अन्य के विशिष्ट कदमों को बताने को कहा ताकि वह जान सके कि वायु प्रदूषण के खतरे से निपटने के लिये क्या अल्पकालिक और दीर्घकालिक कदम उठाए गए। शीर्ष अदालत ने इसी के साथ मामले की अगली सुनवाई के लिए 10 दिसंबर की तारीख तय की।

डिजिटल अरेस्ट मामलों में तुरंत एक्शन ले सीबीआई

नई दिल्ली। शीर्ष कोर्ट ने सीबीआई को देशभर में डिजिटल अरेस्ट घोटाले की एकीकृत जांच का सोमवार को निर्देश दिया और आरबीआई से पूछा कि वह साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे बैंक खातों का पता लगाने और उन्हें फ्रीज करने के लिए एआई का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहा है? प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति बागची की पीठ ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना सहित गैर-राजग शासित सभी राज्य सरकारों से कहा कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में डिजिटल अरेस्ट के मामलों की जांच के लिए सीबीआई को अनुमति दें। शीर्ष अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपति की शिकायत पर स्वत: संज्ञान वाले मामले में निर्देश पारित करते हुए कहा कि साइबर अपराधी ज्यादातर वरिष्ठ नागरिकों को निशाना बनाते हैं और उनकी गाढ़ी कमाई हड़प लेते हैं।

एनआईए ने लखनऊ में कई घंटे खंगाला डॉ. शाहीन का घर, डिजिटल सामग्री की जब्त

दिल्ली विस्फोट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। दिल्ली लाल किला मेट्रो स्टेशन के बाहर हुए बम धमाके की मास्टर माइंड डॉ. शाहीन शाहिद के खंदारी बाजार स्थित आवास पर सोमवार को एनआईए की टीम पहुंची। एनआईए के अधिकारियों ने यहां करीब छह घंटे तक पूरे घर की तलाशी ली। वहीं, भाई व पिता से लगातार पूछताछ की गई। तलाशी के दौरान घर के अंदर से कई दस्तावेज और डिजिटल डिवाइस बरामद हुए। जिनको जांच टीम साथ लेकर गई।

- **खंदारी बाजार में छह घंटे तक रही एनआईए की टीम**

इसके पहले टीम के आने की सूचना मिलते ही पर इलाके में भारी पुलिस तैनात कर दिया गया था। खंदारी बाजार की कई गलियों में आवागमन पर रोक लगा दी गई थी। टीम में फोरेंसिक विशेषज्ञ समेत आठ सदस्य शामिल थे। इसके अलावा दो अन्य टीमें भी लखनऊ के कई इलाकों में जांच कर रही थीं।

एनआईए ने कश्मीर में आठ स्थानों पर छापे मारे

नगर। एनआईए ने पुलवामा, शोपियां और कुलगाम जिलों में कई स्थानों पर छापेमारी की। टीम ने शोपियां में मौलवी इरफान अहमद वागे के आवास पर छापा मारा। वागे का नाम कट्टरपंथ को बढ़ावा देने और सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल में लोगों की शामिल करने के मुख्य साजिशकर्ता के रूप में उभरा है। उसे अक्टूबर में पुलिस ने गिरफ्तार किया था और एनआईए ने कार विस्फोट मामले की जांच अपने हाथ में लेने के बाद उसे हिरासत में ले लिया था।

पछुआ पवन ने ठिठुराया प्रदेश में गिरा तापमान

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश में पछुआ पवन के चलते तापमान तेजी से गिर रहा है। कई जिलों में सोमवार को मौसम बदला है, लखनऊ, कानपुर, इटावा, बरेली में मध्यम शीतलहर की स्थिति है। इस बीच कई शहरों में न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस से नीचे जाने की संभावना है। वहीं, चक्रवात दित्वाह के असर से कई इलाकों में तेज हवाओं के साथ बारिश की भी आशंका है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक अब पछुआ हवा की रफ्तार बढ़ेगी और ठंड का प्रभाव तेजी पकड़ेगा। मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार, हाल के दिनों में सक्रिय रहे दो पश्चिमी विक्षोभ अपना प्रभाव खो चुके हैं। जिसके चलते प्रदेश में ठंडी और सूखी पछुआ, उत्तर-पश्चिमी हवाएं तेज होने लगी हैं। अगले तीन–चार दिनों में तापमान में 2C से 4C तक गिरावट की संभावना है। जिसके साथ ठिठुरन और कोहरे का असर दिखेगा।

लखनऊ में धूप तो निकली, मगर पछुआ हवाओं ने उसकी गर्माहट को कमजोर कर दिया। हवा के झोंकों में ठंडक तेज रही और दोपहर में भी हल्की सिहरन महसूस होती रही। आने वाले दिनों में सुबह और शाम दोनों समय ठंड और गलन का असर साफ महसूस होगा। लखनऊ में हवा की गुणवत्ता की बात करें तो रविवार रात सात बजे एक्यूआई 200 के पार दर्ज किया गया, जो स्वास्थ्य के लिए खराब श्रेणी में आता है।

बरेली में सोमवार को न्यूनतम तापमान 6.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार को तापमान 8 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। मुरादाबाद में सोमवार को न्यूनतम तापमान 11.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं दिन में तापमान 24.2 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है, जबकि रात में यह 11.2 डिग्री सेल्सियस तक गिरने की उम्मीद है।

- **कई जिलों में बदला मौसम, कानपुर, इटावा, बरेली में शीतलहर**
- **कई शहरों में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री सेल्सियस से नीचे पहुंचा**

आचार संहिता को कानूनी रूप देने से इसे लागू करने में आएगी रुकावट: विधि आयोग

नई दिल्ली, एजेंसी

- **संसद की संयुक्त समिति को दी अपनी राय**

विधि आयोग ने कहा है कि आदर्श आचार संहिता लागू करने के लिए कानून लाने से चुनावों के दौरान इसके क्रियान्वयन में रुकावट आएगी और हो सकता है कि निर्वाचन आयोग की शक्ति कम हो जाए, जो स्वतंत्र, निष्पक्ष और समय पर चुनाव कराने के अनुकूल नहीं होगा।

लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने से जुड़े विधेयकों का अध्ययन कर रही संसद की संयुक्त समिति को दी गई अपनी राय में, विधि आयोग ने कहा कि आदर्श आचार संहिता की 'सबसे बड़ी ताकत' इसकी तेजी से सुधार करने की क्षमता में है।

उसने कहा, चुनाव सख्ती से समय पालन करते हुए होते हैं, जिसके कारण उल्लंघन पर कुछ दिन या घंटों के भीतर ही ध्यान देना होता है, ताकि चुनावी प्रक्रिया को ऐसा नुकसान न हो जिसकी भरपाई ही न हो सके। विधि आयोग ने कहा कि अगर आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) वैधानिक हो जाती है, तो उल्लंघन के बाद औपचारिक कानूनी कार्रवाई शुरू हो जाएगी, जिससे न्यायिक पड़ताल शुरू हो सकती है।

2001 में भी आयोग ने ऐसा ही पक्ष रखा था

आयोग ने चेतावनी दी कि फैसले की प्रक्रिया हमेशा तेज, निर्णायक और असल कार्रवाई की जरूरत को पूरा नहीं कर सकती। निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी ने याद दिलाया कि 2001 के आसपास, जब आयोग से चुनाव सुधार के बारे में पूछा गया था, तो उसने ऐसा ही पक्ष रखा था। विधि आयोग ने कहा कि मौजूदा प्रणाली निर्वाचन आयोग को अनुच्छेद 324 के तहत अपनी संपूर्ण शक्तियों का इस्तेमाल करके बिना किसी प्रक्रियागत देरी के समय पर दखल देने की इजाजत देती है।

निर्देश | मुख्यमंत्री योगी ने कहा- धान उठान, मिल मैपिंग की प्रक्रिया और सरल होगी

धान खरीद के बाद भुगतान में देरी नहीं करेंगे बर्दाश्त

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए हैं कि धान क्रय केंद्र पर आने वाले प्रत्येक किसान का धान खरीदा जाए और भुगतान समय पर सीधे उनके खाते में पहुंच जाए। चेतावनी दी कि भुगतान में देरी किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं होगी। उन्होंने धान उठान, मिल-मैपिंग और अन्य प्रक्रियाओं को और सरल बनाने पर भी जोर दिया, ताकि खरीद सुचारु और निरंतर गति में बनी रहे।

मुख्यमंत्री ने सोमवार को आवास पर शासन के शीर्ष अधिकारियों के साथ धान खरीद की स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि धान खरीद की गति तेज हो और किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। बैठक में बताया गया कि इस वर्ष कॉमन धान का एमएसपी 2369 रुपये और ग्रेड-ए का 2389 रुपये प्रति क्विंटल तय हुआ है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 69 रुपये अधिक है। अधिकारियों ने जानकारी दी कि 30 नवंबर तक 1,51,030 किसानों से 9.02 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा जा चुका है और 1,984 करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे किसानों के खातों में भेजी गई है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि भुगतान में देरी किसी भी स्तर पर स्वीकार्य नहीं होगी।

आंगनबाड़ी में फोर्टिफाइड चावल की आपूर्ति के निर्देश : मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिया कि मिड-डे मील और आंगनबाड़ी केंद्रों में फोर्टिफाइड चावल की सप्लाई निर्बाध रूप से सुनिश्चित की जाए। इसके लिए पर्याप्त उपलब्धता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एफआरके सप्लाई सुचारु रखने हेतु वेंडरों की संख्या बढ़ाई जाए और तकनीकी अड़चनों का तत्काल समाधान किया जाए। बैठक में बताया गया कि अब तक लगभग 2,130 मीट्रिक टन एफआरके गुणवत्ता परीक्षण में उत्तीर्ण हुआ है।

- **1,984 करोड़ रुपये किसानों के खातों में ट्रांसफर, सीएम ने सभी किसानों का धान खरीदने का दिया निर्देश**

खाद-बीज की कमी नहीं होनी चाहिए

बैठक में खाद और बीज की उपलब्धता पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि किसी भी जिले में खाद या बीज की कमी नहीं होनी चाहिए और किसानों को दोनों वस्तु आसानी से उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग स्टॉक और आपूर्ति की नियमित समीक्षा सुनिश्चित करें।

धान क्रय केंद्रों की संख्या होगी 5 हजार

राज्य कुल 4,227 खरीद केंद्र संचालित हैं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि क्रय केंद्रों की संख्या बढ़ाकर 5000 की जाए, ताकि किसानों को अपने गांव-कस्बे के निकट ही सुविधा उपलब्ध हो सके। उन्होंने खरीद केंद्रों पर आवश्यकता के अनुसार मैनपावर बढ़ाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि केंद्र पर भीड़ न लगे और किसानों को वापस न जाना पड़े, यह प्रशासन की जिम्मेदारी है।

अमृत विचार

मुरादाबाद , मंगलवार,2 दिसंबर 2025

आज का मौसम

22.0⁰ अधिकतम तापमान

13.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.39

सूर्यास्त 05.16

न्यूज ब्रीफ

एसआईआर फार्म भरने के लिए समय बढ़ने से राहत

मुरादाबाद, अमृत विचार : मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की जटिल प्रक्रिया के चलते मतदाताओं को हो रही परेशानी में थोड़ी सहूलियत निर्वाचन आयोग के द्वारा एक सप्ताह का समय बढ़ाने से मिल गई है। अब 4 दिसंबर की जगह 11 दिसंबर तक एसआईआर प्रक्रिया में गणना प्रपत्र भर कर जमा किया जा सकता है। कार्य 4 दिसंबर तक हर हाल में शत प्रतिशत पूरा करने के चलते बीएलओ भी दबाव में चल रहे थे। वहीं बहुत से ऐसे मतदाता हैं जिनका नाम या तो वर्तमान मतदाता सूची में नहीं मिल रहा है या 2003 की सूची में उनके माता-पिता का विवरण नहीं मिल रहा था। ऐसे में आखिरी सप्ताह के चलते आपाधापी मची थी। इस कार्य में लगे बीएलओ भी समय से कार्य पूरा न होने की स्थिति देखकर मानसिक दबाव महसूस कर रहे थे। ऐसे में रविवार को आयोग के द्वारा एक सप्ताह समय बढ़ाकर गणना प्रपत्र 11 दिसंबर तक भरने का समय देकर काफी राहत मतदाताओं व बीएलओ को दी है।

सुबह छाया कोहरा तो दिन में तेज धूप से मिली राहत

मुरादाबाद, अमृत विचार : सुबह के समय मौसम में घना कोहरा छाया रहा, जिससे दृश्यता कम रही और लोगों को सड़कों पर आवागमन में परेशानी हुई। कोहरा सुबह आठ बजे के बाद धीरे-धीरे छंटने लगा, जिससे दिन में साफ वातावरण देखने को मिला। सुबह की ठिठुरन के बाद जब कोहरा छंट गया तो तेज धूप निकलने लगी, जिससे मौसम में गर्मी का अहसास हुआ और लोगों को राहत मिली। सोमवार को अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिन में सूरज की रोशनी ने वातावरण को गर्म किया, लेकिन शाम होते-होते तापमान फिर से कम होने लगा और ठंडक बढ़ गई। रात को ठिठुरन महसूस की गई।

बीएलओ को ब्रेन हेमरेज, भर्ती

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

- रविवार को कार्य के दौरान बेहोश होकर गिर पड़ीं पाकबड़ा के प्राइमरी स्कूल की शिक्षिका

अमृत विचार : पाकबड़ा क्षेत्र के प्राइमरी स्कूल में तैनात शिक्षिका रविवार को घर में बेहोश होकर गिर पड़ीं। गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डॉक्टर ने ब्रेन हेमरेज बताया। वह वेंटिलेटर पर हैं।

आभा सोलोमन।

सिविल लाइंस थाना क्षेत्र की रहने वाली आभा सोलोमन (57) प्राथमिक विद्यालय पाकबड़ा में सहायक अध्यापिका हैं। वह इस समय एसआईआर के कार्य में बीएलओ ड्यूटी में लगी हुई थीं। रविवार को परिवार के लोग चर्च गए थे तभी आभा घर पर एसआईआर से संबंधित फार्म अपलोड करने का काम कर रही थीं। दोपहर करीब 2 बजे जब उनकी बहन चर्च से वापस लौटीं, तो आभा बिस्तर पर लेटी मिलीं। दवा देने के लिए उठाने पर पता चला कि वह बेहोश हैं। परिजनों ने तुरंत उन्हें निजी अस्पताल में भर्ती कराया,जहां डॉक्टरों ने ब्रेन हेमरेज और लो बीपी की आशंका जताते हुए उन्हें वेंटीलेटर पर शिफ्ट कर दिया। उनके बेटे साहलोन के अनुसार उनकी मां आभा पहले से ही बीपी की मरीज थीं और उनका इलाज चल रहा था। फिलहाल परिवार ने घटना में एसआईआर कार्य के दबाव का उल्लेख नहीं किया है। डॉक्टरों के मुताबिक आभा की स्थिति नाजुक बनी हुई है। पुलिस व शिक्षा विभाग भी मामले की जानकारी जुटा रहे हैं।

कल्कि महोत्सव में प्रवचन करने पहुंचे जगदगुरु ने आर्थिक आधार पर आरक्षण का किया समर्थन

जगदगुरु रामभद्राचार्य बोले, भारत जल्द बनेगा हिंदू राष्ट्र

कार्यालय संवाददाता,संभल

- मोदी के फिर प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी की
- पश्चिमी यूपी में जनसांख्यिकीय बदलाव पर भी गंभीर चिंता जताई

अमृत विचार: संभल के ऐंचोड़ा कंबोह में आयोजित कल्कि महोत्सव में श्री कल्कि कथा वाचन के लिए पहुंचे जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि बहुत जल्द भारत हिंदू राष्ट्र बनेगा, इसके लिए संसद में 370 रामभक्तों की आवश्यकता है। उन्होंने जातीय आधार पर दिए जा रहे आरक्षण को समाप्त कर आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू करने का समर्थन किया।

कल्कि धाम में पत्रकारों से बातचीत में जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने राममंदिर के ध्वजारोहण के मुहूर्त को पूर्णतः सही बताया और नरेंद्र मोदी के दोबारा सत्ता में आने की भविष्यवाणी की। धर्माचार्यों को संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य बताया। संभल के भविष्य को लेकर दावा किया कि संभल में भगवान कल्कि का अवतार होना है। संभल का महत्व आने वाले समय में अयोध्या, मथुरा और चित्रकूट जैसा होगा। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के मस्जिदों में मंदिर खोजे जाने के बयान पर उन्होंने कहा कि धर्माचार्यों की बातों पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि हमारे एक करोड़ मंदिर तोड़े गए और जब तक वे वापस नहीं मिल जाते, हम विश्राम नहीं करेंगे।

श्री कल्कि कथा वाचन करते रामभद्राचार्य महाराज व आरती करते कमिश्नर आंजनेय कुमार सिंह, डीएम राजेंद्र पैंसिया व आचार्य प्रमोद कृष्णम। ● अमृत विचार

सनातन धर्म को एकजुट करने के सवाल पर उन्होंने कहा कि बहुत जल्द सनातन समाज एकजुट होगा। आज देश सही राह पर आगे बढ़ रहा है। भारत देश हिंदू राष्ट्र बनने की राह पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि इसके लिए समाज को सहयोग देना होगा। पश्चिमी यूपी में जनसांख्यिकीय बदलाव और हिंदुओं के पलायन के सवाल पर रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि हालात सभी के सामने हैं। संभल में हम कितने प्रतिशत हैं, यह आप स्वयं जानते हैं।

हमारी संस्कृति में महिलाओं का सम्मान

रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि मैं जगतगुरु भी ही हूं एक धर्माचार्य हूं। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जो ऋग्वेद से लेकर हनुमान चालीसा पर यंत्र सम्पूर्ण वांग्मय पर आधिकारिक वक्तव्य देने में समर्थ है। वाइफ कहकर मैंने निंदा नहीं की थी केवल यह बताया था कि विदेशी संस्कृति में महिलाओं की निंदा है और हमारी संस्कृति महिलाओं का सम्मान है। विदेशी संस्कृति में कहीं बेबी है, कहीं बीवी है केवल भारतीय संस्कृति में महिला न बेबी है न बीबी है वह केवल देवी है तो मैं क्या अनुचित किया था। केवल मेरी प्रतिभा को धूमिल करने के लिए कतिपय भारत में अभी भी जयचंद के अंश अवतार मेरी निंदा करते हैं उन्हें करने दीजिए।

पिता की मौत के बाद बहन मांगने लगी जमीन में हिस्सा, भाई ने मार डाला

हत्या करने के बाद अभियुक्त पत्नी और बच्चों को लेकर घर से भाग गया

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

- मृतका मुरादाबाद के निजी अस्पताल में नर्स थी और एक युवक के साथ लिव-इन में रहती थी

अमृत विचार : पिता के निधन के बाद जमीन में हिस्सा मांग रही बहन की भाई ने धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी। इसके बाद आरोपी भाई पत्नी व बच्चों के साथ फरार हो गया। पुलिस ने जांच पड़ताल की। एसपी ने भी घटनास्थल का मुआयना किया। फारेंसिक टीम ने मौके से साक्ष्य जुटाए। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

मृतका संयोगता।

घटनास्थल पर जांच पड़ताल व पूछताछ करते एसपी अमित कुमार आनंद।

यह घटना थाना अमरोहा देहात क्षेत्र के गांव नन्हेड़ा अल्यारपुर की है। यहां पर भगवान दास का परिवार रहता है। 16 अक्टूबर को भगवान दास का निधन हो गया था। वह सिंचाई विभाग में चपरासी रहे थे। उनकी गांव में जमीन है। परिवार में पत्नी हुकुम देवी के अलावा बेटा श्योराज, तीन बेटी शकुंतला, ममता और संयोगता हैं। शकुंतला और ममता की शादी हो चुकी है। छोटी बेटी संयोगता मुरादाबाद के निजी अस्पताल में नर्स थी और वहीं पर एक युवक के साथ लिव-इन में रहती थी। पिता के निधन के बाद से वह गांव में आकर रहने लगी थी। वह अपने पिता की जमीन में बराबर का हिस्सा मांगती थी। अक्सर इसी बात को लेकर संयोगता और उसके भाई श्योराज के बीच विवाद रहता था।

सोमवार की सुबह संयोगता, श्योराज और माता हुकुम देवी घर पर थे। इस बीच संयोगता और श्योराज के बीच जमीन को लेकर विवाद हो गया। हुकुम देवी नहाने के लिए बाथरूम गईं तभी गुस्साये श्योराज ने चारपाई पर बैठी संयोगता के सिर पर धारदार हथियार से वार कर दिया। संयोगता की मौके पर ही मौत हो गई। हुकुम देवी ने बेटी को लहूलुहान पड़ा देखा तो उनकी चीख निकल गई। हत्या कर भाई श्योराज पत्नी व बच्चों के साथ भाग गया। मां की चीखें सुनकर भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलते ही देहात थानाध्यक्ष सनोज प्रताप सिंह फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गए और जांच-पड़ताल की। कुछ ही देर में सीओ सिटी अभिषेक यादव व डिडौली और नौगांवा सादात थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई। एसपी अमित कुमार आनंद ने भी घटनास्थल का मुआयना कर पूछताछ की। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए।

> भाई- बहन के बीच जमीन का विवाद था जिसके चलते भाई ने बहन की हत्या कर दी। मृतका की मां हुकुम देवी की तहरीर पर श्योराज के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की जा रही है। गिरफ्तारी के लिए तीन टीमें में लगाई गई हैं। जल्दी ही पकड़ लिया जाएगा।
> -अमित कुमार आनंद, एसपी अमरोहा

सड़क दुर्घटना में स्कूटी सवार युवक की मौत

संवाददाता, काठ

अमृत विचार : खनन में लगे डंपर चालक ने स्कूटी सवार युवक की स्कूटी में सामने से टक्कर मार दी जिससे स्कूटी पर सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया और उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। घटना से लोगों में रोष व्याप्त है और उन्होंने अवैध रूप से चल रहे डंपरों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

मृतक अर्पित।

नगर के मोहल्ला पट्टी वाला निवासी अर्पित विश्नोई(29) पुत्र संजय कुमार रविवार शाम 7:30 बजे स्कूटी से ऊमरी चौराहे की तरफ जा रहा था। रेलवे फाटक पार कर अमरोहा बस अड्डे से आगे पहुंचा तभी सामने से तेज रफ्तार से आ रहे चालक ने लापरवाही से डंपर चलाते हुए अर्पित की स्कूटी में टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना गौरव सिंह निवासी ग्राम काज़ीखेड़ा ने परिजनों को दी, इसके बाद पुलिस को घटना की जानकारी दी गई। गंभीर रूप से घायल युवक को उपचार के लिए मुरादाबाद के कॉसमॉस अस्पताल में भर्ती कराया गया। रविवार देर रात उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। थाना पुलिस ने मृतक के भाई आदित्य की तहरीर के आधार पर अज्ञात डंपर चालक के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कर मामले की विवेचना शुरू कर दी है। सोमवार को गमगीन माहौल में युवक का अंतिम संस्कार कर दिया गया।

लोगों में रोष, खनन वाहनों पर रोक लगाने की मांग: हादसे के बाद लोगों में रोष व्याप्त है। भाकियू के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष चौधरी ऋषिपाल सिंह, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष हरदीप सिंह सहित पदाधिकारियों ने अवैध रूप से चल रहे खनन के डंपर चालकों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर रोक लगाने की मांग की है।

रिश्तेदार के जनाजे में शामिल होने जा रहे बाइक सवार की हादसे में जान गई

मुरादाबाद, अमृत विचार : रिश्तेदार के जनाजे में शामिल होने जा रहे बाइक सवार की सोमवार सुबह आठ बजे सड़क हादसे में मौत हो गई। बाइक सवार मोहम्मद अहमद बिलारी से मैनाठेर पुराने टोल टैक्स पर पहुंचा ही था कि एक अज्ञात वाहन ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची मैनाठेर पुलिस ने मृतक के मोबाइल से हादसे में मौत हो जाने की परिवार वालों को दी। थाना मूंढापांडे क्षेत्र के गांव धतुरा मेघा नगला निवासी मोहम्मद अहमद(50) पुत्र बुंदू बिलारी तहसील क्षेत्र में मजदूरी के संबंध में रविवार की रात वहीं रुक गया था। सुबह पत्नी सलमा ने फोन कर एक रिश्तेदार के देहांत होने की जानकारी देकर उसके अंतिम संस्कार में शामिल होने की बात कही, जिस पर वह बाइक से सोमवार सुबह सात बजे बिलारी चल दिया। मोहम्मद अहमद पुराने टोल टैक्स मैनाठेर पहुंचा था तभी पीछे से आ रहे वाहन ने टक्कर मार दी। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। दुर्घटना के बाद वाहन चालक फरार हो गया। मैनाठेर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक किरन पाल ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम करा दिया गया है। पत्नी सलमा की तहरीर पर अज्ञात वाहन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

मृतक दिखाकर रोक दी ग्रामीणों की पेंशन, ग्राम पंचायत अधिकारी निलंबित

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

शमीम अहमद।

अमीर अहमद।

अमृत विचार: डीएम अजय कुमार द्विवेदी ने जनसुनवाई के दौरान शमीम एवं अमीर अहमद निवासी ग्राम पंचायत रहसैना तहसील मिलक ने प्रार्थना पत्र दिया। बताया कि वे पैरों से विकलांग हैं और विकलांगता, वृद्धावस्था पेंशन प्राप्त कर रहे थे।

सत्यापन के दौरान ग्राम पंचायत अधिकारी मोहसिन ने उन्हें मृतक दिखाकर उनकी पेंशन रोक दी, दोनों वर्तमान में जीवित हैं। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने तत्काल प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए खंड विकास अधिकारी मिलक को जांच के लिए निर्देश दिए। जांच में प्रार्थियों के जीवित होने की पुष्टि हुई। इसके आधार पर ग्राम पंचायत अधिकारी मोहसिन को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया। मृतक दिखाकर रोकी गई पेंशन की धनराशि संबंधित लाभार्थियों को तुरंत दिलाने के निर्देश दिए गए। खंड विकास अधिकारी मिलक को शिथिल पर्यवेक्षण के लिए कारण बताओं नोटिस जारी किया। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही एवं शिथिलता कदापि स्वीकार नहीं की जाएगी। इसे तत्काल गंभीरता से लिया जाएगा।

प्रेमी के घर पर निकाह की जिद पर अड़ी तलाकशुदा

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : ठाकुरद्वारा करन पुर मार्ग स्थित एक गांव निवासी महिला प्रेमी के घर पहुंच निकाह की जिद पर अड गई। परिजनों के विरोध करने पर हंगामा खड़ा कर दिया। काफी समझाने-बुझाने के बाद भी महिला नहीं मानी।

गांव निवासी एक महिला का पति से तलाक के बाद गांव के ही एक विवाहित युवक से काफी समय से प्रेम प्रसंग चल रहा था। कुछ दिनों से युवक ने परिजनों के डर के चलते उससे दूरी बनानी शुरू कर दी। जिससे नाराज महिला शनिवार की शाम प्रेमी के घर पहुंच निकाह की जिद पर अड़ गई। वह पांच घंटे धरने पर बैठ हंगामा करती रही। करीब एक घंटे तक दोनों पक्षों में कहासुनी चलती रही, लेकिन कोई समाधान नहीं निकल सका। महिला ने युवक के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराने की चेतावनी दी। ग्रामीणों ने निकाह का आश्वासन देकर शांत कराया। पुलिस का कहना है कि उन्हें शिकायत नहीं मिली है ।

तेज रफ्तार पिकअप ने बाइक को मारी टक्कर, महिला की मौत

संवाददाता, ठाकुरद्वारा

मृतक महिला के बाद जाम लगने ग्रामीण रिश्तेदार। ● अमृत विचार

परिजनों से जानकारी करती पुलिस। ● अमृत विचार

- बेटा घायल, डॉक्टर ने हायर सेंटर किया रेफर

अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र में रविवार दोपहर सड़क हादसे में बाइक सवार महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद पिकअप चालक वाहन को छोड़कर फरार हो गया। गुस्साए ग्रामीणों ने पिकअप चालक की गिरफ्तारी की मांग करते हुए करीब तीन घंटे तक जाम लगाकर हंगामा किया, जिससे सूरजननगर-मलकपुर सेमली मार्ग पर यातायात पूरी तरह अवरुद्ध हो गया।

कोतवाली क्षेत्र के गांव बहापुर निवासी सुमन देवी(45) पत्नी यशपाल कश्यप बेटे विराट के साथ किसी काम से सूरजननगर गई थीं। लौटते समय जैसे ही वह गांव के निकट गन्ना क्रय केंद्र के पास पहुंचीं, पीछे से आई तेज रफ्तार पिकअप ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि सुमन सड़क पर गिरते ही गंभीर रूप से घायल हो गईं और मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

बेटा विराट लहूलुहान हो गया। खबर मिलते ही परिजन और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। गंभीर रूप से घायल विराट को डॉक्टरों ने हालत नाजुक होने पर हायर सेंटर रेफर कर दिया। पुलिस ने पिकअप को कब्जे में लेकर गन्ना क्रय केंद्र पर खड़ा कर दिया है। सुमन के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पति यशपाल, बेटी अनीता, रिश्तेदार और ग्रामीणों का रो-रोकर बुरा हाल था। गांव में मातम छा गया।

चालक की गिरफ्तारी की मांग को लेकर लगाया जाम, हंगामा

गुस्साए ग्रामीणों ने पिकअप चालक की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क पर जाम लगा दिया। देखते ही देखते लंबा जाम लग गया और दोनों ओर वाहनों की कतारें लग गईं। यातायात लगभग तीन घंटे तक ठप रहा, जिससे लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। सूचना मिलने पर एसडीएम प्रीति सिंह, कोतवाली प्रभारी मनोज परमार तथा भारी पुलिस बल मौके पर पहुंचा। अधिकारियों ने ग्रामीणों और परिजनों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वह तुरंत गिरफ्तारी पर अड़े रहे। काफी मशक्कत के बाद एसडीएम ने हर संभव सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन दिया, जिसके बाद ग्रामीण शांत हुए और जाम खोल दिया गया।

कार्रवाई | ज्वाइंट मजिस्ट्रेट राम मोहन मीणा ने जारी किया पत्र

बीएलओ सर्वेश की पत्नी को दस दिन में मिलेगी अनुकंपा नियुक्ति

संवाददाता, भोजपुर

अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव बहेड़ी ब्रहमान निवासी मृतक बीएलओ सर्वेश सिंह की पत्नी बबली को मृतक आश्रित कोटे से आवेदन करने के दस दिन में अनुकंपा के आधार पर योग्यतानुसार नियुक्ति मिलेगी।

इस संबंध में सोमवार को ज्वाइंट मजिस्ट्रेट राम मोहन मीणा ने पत्र जारी किया है। रविवार को एसआईआर की ड्यूटी में लगे गांव जाहिदपुर सीकमपुर के कंपोजिट स्कूल के प्रधानाध्यापक बीएलओ सर्वेश सिंह ने काम के दबाव के चलते अपने पैतृक गांव बहेड़ी ब्रहमान में कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। मृत शिक्षक ने तीन पन्नों के सुसाइड नोट में अपनी पीड़ा बयां करते हुए बताया था कि अनुभव की कमी के चलते दिन रात के कठिन परिश्रम के बाद भी लक्ष्य तक नहीं पहुंचने का डर दिल दिमाग में रहता था। मानसिक तनाव के चलते मात्र दो तीन घंटे ही सो रहा था।

बीएलओ के घर जाकर शोक व्यक्त करते सपा विधायक कमाल अख्तर, सपा जिलाध्यक्ष आदि।

शिक्षक ने आत्महत्या के लिए स्वयं को जिम्मेदार ठहराते हुए चार बेटियों की अच्छी परवरिश करने के लिए पत्नी बबली को शिक्षा विभाग में की गई सेवाकाल की सभी सुविधाएं देने की बात लिखी है। ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने पत्र में कहा है कि चार नाबालिग बेटियों तनिष्का, माही, नाइपु और रूही की शिक्षा पूर्ण करने की जिम्मेदारी प्रशासन की रहेगी। सोमवार को मृतक बीएलओ के घर विभागीय साथियों के साथ ही राजनीतिज्ञ लोगों को आवाजाही रही। सपा विधायक कमाल अख्तर के नेतृत्व में कांठ विधानसभा का सपाइयों का प्रतिनिधि मंडल पत्नी, पिता और परिजनों को चारों बेटियों की परवरिश करने के लिए सरकार से हर संभव मदद दिलाने का आश्वासन दिया।

2003 की मतदाता सूची में खामियों का आरोप

बीएलओ सर्वेश सिंह की आत्महत्या के बाद मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। सपा जिलाध्यक्ष और बिलारी विधायक के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने डीएम से मुलाकात की और शासन-प्रशासन की जिम्मेदारी तय करने की मांग उठाते हुए ज्ञापन सौंपा। सोमवार को डीएम अनुज सिंह से मिलकर विधायक फहीम इरफान ने कहा कि जब अधिकारियों को पहले से पता था कि कर्मचारियों पर अत्यधिक कार्यभार और अव्यवस्थित प्रणाली का दबाव है, तो इस दुखद स्थिति को रोकने के लिए कदम क्यों नहीं उठाए गए। उन्होंने 2003 की मतदाता सूची में भारी खामियों का आरोप लगाते हुए कहा कि कई विधानसभा क्षेत्रों के अनेक बूथों पर मतदाताओं का नाम गायब हैं, जिससे बीएलओ पर अनावश्यक बोझ बढ़ा है। सपा नेताओं ने भाजपा सरकार की कार्यशैली पर आरोप मढ़ा। जिलाध्यक्ष जयवीर सिंह यादव ने कहा कि भाजपाई संवेदनहीन हो गए हैं। इसदौरान सपा के जिला उपाध्यक्ष हाजी उस्मान और जिला प्रवक्ता धर्मेंद्र यादव भी मौजूद रहे।

अव्यवस्था से परेशान मॉर्केटिंग इंस्पेक्टर धरने पर

संवाददाता,टांडा

अमृत विचार : मंडी समिति में सोमवार को मार्केटिंग इंस्पेक्टर दिव्यांगना शर्मा अचानक धरने पर बैठ गईं। उनके इस कदम के चलते मंडी परिसर में मौजूद किसान, जो धान तौल कराने आए थे, वह भारी विलंब का सामना करते नजर आए।

इंस्पेक्टर का कहना है कि उन्हें अपने अधीनस्थ क्रय केंद्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों से धान लेकर पहुंच रहे किसानों के कारण समस्याओं का बोझ उठाना पड़ रहा है। मार्केटिंग इंस्पेक्टर ने बताया कि वह टांडा मंडी समिति में संचालित दो क्रय केंद्रों की प्रभारी हैं। अतिरिक्त लखमन नगला, बाकी दढ़ियाल, पीपली और चंद्रपुर शुमाली में भी शासन द्वारा क्रय केंद्र स्थापित किए हैं। संबंधित क्षेत्रों के किसानों को धान बेचने की सुविधा उपलब्ध है। इसके बावजूद उन इलाकों के किसान टांडा मंडी समिति का रूख कर रहे हैं, जिससे अब अचानक मना किया जा रहा है। दिव्यांगना शर्मा ने स्पष्ट किया कि बाहरी किसानों की वजह से वेटिंग समय अत्यधिक बढ़ जाता है। टांडा के किसानों की बारी देर से लगती है। ऐसे में असहमति तथा असुविधा बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि यदि सभी किसान अपने-अपने क्षेत्र के क्रय केंद्रों पर धान तौल कराएं तो प्रक्रिया सुचारू, प्रबंधन पारदर्शी तथा क्रय व्यवस्था निर्विघ्न बनी रहेगी।

धरने पर बैठीं मार्केटिंग इंस्पेक्टर दिव्यांगना शर्मा। ● अमृत विचार

- कहा, दूसरे केंद्रों के किसान भी उनके केंद्र पर आते हैं तौल कराने

स्थानीय अधिकार क्षेत्र के भीतर आने वाले किसानों के धान तौल में बाधा उत्पन्न हो रही है। गांव रामपुर धम्मन के किसान कुलवीर सिंह की ट्राली इस्लाम लेकर मंडी पहुंचे। इस्लाम तथा पर्वतपुर निवासी किसान सुखवंत सिंह ने बताया कि उन्हें धान तौल के लिए टॉकन तो मिल गया है,

शहर में आज

☞हिंदू कॉलेज में राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार पर कार्यशाला सुबह 10 :00 बजे
☞चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में बाल विज्ञान प्रदर्शनी का दूसरा दिन सुबह 12 :00 बजे
☞पेंशन बचाओ मंच अटेवा के शिक्षक व कर्मचारीजिला चिकित्सालय परिसर में जलाएंगे प्राथमिकी की कॉपी 2 :00 बजे

निवेश जागरुकता पर छात्रों को मिला व्यावहारिक प्रशिक्षण

मुरादाबाद, अमृत विचार : हिंदू कॉलेज के वाणिज्य संकाय द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान (एनआईएसएम) के सौजन्य से युवा नागरिकों के लिए वित्तीय शिक्षा विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत सोमवार को हुई। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वित्तीय साक्षरता, निवेश जोखिम और बाजार की अनियमितताओं से बचाव के उपायों की समझ प्रदान करना है। 80 सीटों वाली कार्यशाला में पंजीकरण पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किया गया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्राचार्य प्रो. एसएस रावत ने वित्तीय जागरुकता को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताई। कहा कि छात्र सही जानकारी के साथ निवेश करें और ऑनलाइन धोखाधड़ी व बाजार जोखिमों से सतर्क रहें। पहले दिन डॉ.अ जीत कुमार मौर्य कार्यशाला संयोजक ने वित्तीय योजना, निवेश प्रबंधन, जोखिम विश्लेषण और सुरक्षित निवेश तकनीकों पर प्रभावी प्रस्तुति दी। संकाय अध्यक्ष प्रो. कमल सिंह ने वित्तीय जागरूकता और पूंजी बाजार की भूमिका पर विस्तृत चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को अपने भविष्य के वित्तीय व्यवहार के प्रति सजग रहने को प्रेरित किया। कार्यक्रम में प्रो.एसके रस्तोगी, डॉ. रमेश चंद्र, डॉ.सुनील कुमार, डॉ. सोहन कुमार रजक, प्रो.एनयू. खान सहित कई वरिष्ठ संकाय सदस्य उपस्थित रहे। प्राचार्य प्रो.रावत ने सफल आयोजन के लिए वक्ताओं, शिक्षकों और प्रतिभागियों को बधाई दी। कार्यशाला का संचालन डॉ. दीपा बालियान ने किया।

कृषि, कचरा प्रबंधन व प्लास्टिक के विकल्प पर आधारित मॉडल बनाए

मंडल स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में बाल वैज्ञानिकों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता,मुरादाबाद

अमृत विचार : चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में सोमवार को मंडल स्तरीय 53वीं बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मंडल के संयुक्त शिक्षा निदेशक मनोज कुमार द्विवेदी, जिला विद्यालय निरीक्षक देवेंद्र कुमार पांडे और प्रधानाचार्य मेजर सुदेश भटनागर ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। प्रधानाचार्य ने मुख्य अतिथियों का पुष्पगुच्छ और बैज लगाकर स्वागत किया।

उद्घाटन समारोह में संयुक्त शिक्षा निदेशक और जिला विद्यालय निरीक्षक ने छात्र-छात्राओं को विज्ञान के प्रति जागरूक कर भविष्य में वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में सराहनीय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। प्रदर्शनी में छात्रों ने चिरस्थायी कृषि, कचरा प्रबंधन व प्लास्टिक के विकल्प, हरित ऊर्जा, उभरती प्रौद्योगिकी, गणितीय मॉडलिंग, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, जल संरक्षण व प्रबंधन जैसे सात उप-विषयों पर आधारित मॉडल प्रस्तुत किए। पहले दिन मुरादाबाद और अमरोहा जनपद के 65 प्रतिभागियों ने विज्ञान मॉडल प्रस्तुत किए। 2 दिसंबर को बिजनौर, रामपुर और संभल जनपद के छात्र अपने मॉडल प्रस्तुत करेंगे।

विज्ञान प्रदर्शनी में मॉडल के बारे में अतिथियों को जानकारी देती छात्रा। ● अमृत विचार

● 65 प्रतिभागी हुए शामिल
● विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत थीम रहा प्रदर्शनी का विषय

एहसास और रितु गर्ग के मॉडल को मिली सराहना

कई छात्र-छात्राओं ने नवाचारपूर्ण मॉडल प्रस्तुत कर सभी का ध्यान आकर्षित किया। इनमें डॉ. देवेंद्र पाल सरस्वती विद्या मंदिर, बिलारी के छात्र एहसास गौड़ और रितु गर्ग के मॉडल विशेष रूप से सराहे गए।

प्रदर्शनी का मुख्य विषय विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत रखा गया है, जिस पर आधारित मॉडलों का मूल्यांकन निर्णायक मंडल के सदस्य वीरेश कुमार (गणित विभाग), डॉ. मधुसूदन यादव (रसायन विज्ञान, हिंदू कॉलेज), और डॉ. राजीव कुमार (भौतिक विज्ञान, के.जी.के. कॉलेज) ने किया। कार्यक्रम का संचालन विज्ञान प्रभारी नरेंद्र सिंह ने किया, जबकि नोडल अधिकारी बबीता मेहरोत्रा ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम को सफल बनाने में मोहम्मद शारिब, अनुज त्यागी, विशाल अग्रवाल, नितिन कुमार, अनिल कुमार, जितेंद्र सिंह और वरिष्ठ लिपिक पंकज कुमार शर्मा ने विशेष सहयोग दिया।

महिला उद्यमिता पर चुनौतियां और अवसर पर निबंध प्रतियोगिता

मुरादाबाद, अमृत विचार : मिशन शक्ति अभियान फेज 5.0 के अंतर्गत गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा सोमवार को महिला उद्यमिताः चुनौतियां और अवसर विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता में 25 छात्राओं प्रतिभाग किया। छात्राओं ने महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों पर विचार प्रस्तुत किए।

प्राचार्या प्रो.चारु मेहरोत्रा ने कहा कि घर-परिवार और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाना महिलाओं की सबसे बड़ी चुनौती होती है। आज परिस्थितियां काफी बदल चुकी हैं। सरकार द्वारा महिलाओं के लिए विभिन्न स्टार्टअप योजनाएं चलाई जा रही हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने का अभूतपूर्व अवसर दिया है। संयोजन और संचालन डॉ. सीमा मलिक ने किया। आहिला, समरा, सुरभि, सौम्या सैनी, जोहा, फाकेहा, लाएबा, सुमेरा, शुमायला सहित लगभग 25 छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान प्रो. किरण साहू, प्रो. मीनाक्षी शर्मा, प्रो. किरन त्रिपाठी, प्रो. वंदना पांडे, प्रो. सुदेश, प्रो. करुणा आनंद और प्रो. प्रवीण सैनी मौजूद रहे।

क्वार्टर फाइनल में पहुंची गुरु जंभेश्वर विवि की टीम

नॉर्थ जोन इंटर-यूनिवर्सिटी क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता गुरु जंभेश्वर विवि की टीम।

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

● अलीगढ़ में चल रहा नॉर्थ जोन इंटर-यूनिवर्सिटी क्रिकेट टूर्नामेंट

अमृत विचार : अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की ओर से मार्क क्रिकेट अकादमी के ग्राउंड पर आयोजित नॉर्थ जोन इंटर-यूनिवर्सिटी क्रिकेट टूर्नामेंट में गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय की पुरुष क्रिकेट टीम ने शानदार प्रदर्शन के दम पर क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली। सोमवार को हुए पांचवें मुकाबले में टीम ने अमृतसर के गुरु नानक देव विश्वविद्यालय को हराकर जीत दर्ज की।

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी गुरु नानक देव विश्वविद्यालय की टीम को गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय के गेंदबाजों ने कड़ी चुनौती दी। विशाल तोमर ने चार ओवर में 24 रन देकर तीन महत्वपूर्ण विकेट लिए, जबकि सार्थक चौधरी ने तीन ओवर सिर्फ 14 रन देकर तीन और अजय यादव ने दो ओवर में 12 रन देकर दो विकेट हासिल किए। आक्रामक गेंदबाजी के सामने गुरु नानक देव की टीम 18.2 ओवर में 110 रन पर सिमट गई। लक्ष्य का पीछा करते हुए गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय की ओर से तुषार धारिवाल ने 36 गेंदों पर 69 रन की तेज-तर्रार पारी खेली, जबकि आकाश रावत ने 35 गेंदों में नाबाद 38 रन बनाकर टीम को बिना कोई विकेट गंवाए 11.4 ओवर में जीत दिलाई। यह आत्मविश्वासपूर्ण और संयमित बल्लेबाजी टीम की बेहतरीन योजना को दर्शाती है। टीम मंगलवार को क्वार्टर फाइनल में दिल्ली विवि के खिलाफ खेलेगी।

विधायक ने 888 पात्रों को सौंपे गृहस्थी राशन कार्ड

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

● कुंदरकी और मूंडापांडे के ब्लॉक सभागार में लगा शिविर

अमृत विचार : कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र के गांवों के राशन कार्ड आवेदनों को पूर्ति विभाग द्वारा सत्यापित करने के बाद सोमवार को ब्लॉक सभागार कुंदरकी में 421 और ब्लॉक सभागार मूंढापांडे में 467 लाभार्थियों को पात्र गृहस्थी राशन कार्ड कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह ने वितरित किया।

इस अवसर पर विधायक ने कहा कि अगले महीने तक उनके विधानसभा में कोई भी पात्र परिवार राशन कार्ड से वंचित नहीं रहेगा। हमारे कार्यकर्ताओं ने गांव गांव जाकर पात्र परिवारों से आवेदन कराए हैं। जिस राशन कार्ड को बनवाने के लिए पहले लोगों को सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे, आज लाभार्थी के घर आवेदन फॉर्म पहुंच रहा है। यह आपके वोट की ताकत जो आपने मुझे एक साल पहले दी, उसके चलते वह उनकी सेवा कर पा रहे हैं। कहा कि उनका प्रण है कि विधानसभा में कोई भी व्यक्ति केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित न रहे। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण खाद्यान्न योजना की वजह से कोई गरीब व्यक्ति भूख नहीं सोता है।

लोगों को समय पर और पूरा राशन मिल रहा है। इस दौरान मंडल अध्यक्ष संजय कश्यप, बबलू सैनी, नीरज चंद्रा, महेंद्र सैनी, ब्लॉक प्रमुख कुंदरकी के प्रतिनिधि गुलाम जिलानी, ब्लॉक प्रमुख मूंढापांडे डॉ. नवदीप यादव, नूरी मौलाना, रोहित सिंह, सोनू रस्तोगी, रामकिशोर लोधी सहित पूर्ति विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

मैराथन में कृष्व, लंबी कूद में सार्थक और आयना विजेता

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेती छात्राएं।

● नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्पोर्ट्स स्टेडियम में मार्च पास्ट के साथ शुरू हुआ सीनियर स्पोर्ट्स डे

अमृत विचार : नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्पोर्ट्स स्टेडियम में विल्सोनिया कॉलेज के सीनियर स्पोर्ट्स डे का सोमवार को आयोजन हुआ। इसकी शुरुआत क्रीड़ाधिकारी सुनील कुमार सिंह ने मार्च पास्ट की सलामी लेकर किया। इसके बाद उन्होंने विद्यालय प्रबंधक डॉ. आशीष संतराम, स्कॉलर्स होम की प्रधानाचार्या श्वेतांगना संतराम और कॉलेज की प्रधानाचार्या संगीता रेविस के साथ गुब्बारे उड़ाकर उद्घाटन किया।

टॉर्च रैली आयोजित हुई और सभी खिलाड़ियों ने शपथ ग्रहण की। इसके बाद कॉलेज के हेड ब्याय आशीष खन्ना ने वर्ष 2025 की खेलकूद रिपोर्ट प्रस्तुत की। अगले चरण में विभिन्न एथलेटिक प्रतियोगिताएं हुईं। 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर दौड़, लंबी कूद और डिस्कस थ्रो जैसी प्रतिस्पर्धाओं में विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट शारीरिक क्षमता, सहनशीलता और खेल भावना का प्रदर्शन किया। मैराथन दौड़ में कृष्व मिश्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। लंबी कूद के बालक वर्ग में कक्षा 6 के सार्थक और बालिक वर्ग में आयना खान ने प्रथम स्थान हासिल किया। रिले रेस में बालक वर्ग के राजपूत हाउस और बालिका वर्ग में वाइसराय हाउस विजेता रहा। मदर्स रेस में हैड गर्ल भव्या त्रिवेदी की मां सरिता त्रिवेदी विजेता रहीं। कार्यक्रम के अंत में लैडर रेस आयोजित की गई, जिसमें लड़कों में मुगल हाउस और लड़कियों में मराठा हाउस विजेता रहे। जूनियर में बेहतरीन एथलीट के पुरस्कार आमिर नूर और तहरीमा को और सीनियर बेहतरीन एथलीट का खिताब कृष्व मिश्रा और कनिका को मिला। पुरस्कार वितरण समारोह में विद्यालय प्रबंधन ने विजेताओं को पदक, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किए।

वार्षिक खेलकूद में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

मुरादाबाद, अमृत विचार : गोविंद नगर स्थित एसएनडी चिल्ड्रन अकादमी में सोमवार को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता हुई। इसका शुभारंभ मुख्य अतिथि नितिन अरोरा, गोकुलदास गर्ल्स डिग्री कॉलेज की प्रो. अनीता फर्शवान ने किया। उन्होंने बच्चों को खेलकूद को अपनाने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिता की शुरुआत प्ले ग्रुप के छोटे बच्चों के रिले रेस, बैलून रेस, स्पून-लेमन रेस, हॉपिंग रेस और बाधा दौड़ जैसी स्पर्धाओं से हुई। बच्चों ने फुर्ती और टीमवर्क का प्रदर्शन किया। बैलून रेस में बच्चों की हंसी-मजाक ने माहौल को खुशनुमा बना दिया। प्रधानाचार्य सीवी गिरी और निदेशक संजय यादव ने कहा कि खेलकूद न केवल शारीरिक विकास के लिए जरूरी हैं, बल्कि ये बच्चों में मानसिक मजबूती, अनुशासन और आत्मविश्वास भी बढ़ाते हैं। इसलिए विद्यालय निरंतर खेल गतिविधियों को बढ़ावा देता है। प्रतियोगिता के अंत में विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रधानाचार्या ने सभी प्रतिभागियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

23 व 24 को होंगी जनपद स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताएं

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित होने वाली जनपद स्तरीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं को लेकर सोमवार को समीक्षा बैठक कंपोजिट विद्यालय मझोला में हुई। बैठक की अध्यक्षता बीएसए विमलेश कुमार ने की। बैठक में सभी ब्लॉकों के बीईओ, डीसी और व्यायाम शिक्षक मौजूद रहे।

बैठक में प्रतियोगिता से पूर्व की सभी तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गई। इसमें प्रतिभागियों के चयन एवं पंजीकरण,विभिन्न खेलों के संचालन की रूपरेखा,स्थल व्यवस्था,सुरक्षा प्रबंध,खेल सामग्री की उपलब्धता,विभागीय अधिकारियों एवं शिक्षकों की ड्यूटी, चिकित्सकीय सुविधाओं तथा आपात व्यवस्थाओं पर गहन मंथन किया गया। तय किया गया कि जनपद स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 23 और 24 दिसंबर को होगी। उद्देश्य प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में खेल भावना,अनुशासन,नेतृत्व क्षमता,टीमवर्क और शारीरिक विकास को प्रोत्साहित करना है।

मझोला कंपोजिट विद्यालय में बैठक करते खंड शिक्षा अधिकारी और शिक्षक।

सुलेख प्रतियोगिता (हिंदी एवं अंग्रेजी) आयोजित की जाएगी। बैठक में खंड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार बोस, डीसी डॉ. तारा सिंह, अमित सिंह, जिला व्यायाम शिक्षक गंगासरन, शिक्षक नेता शांति भूषण वर्मा, राजबहादुर, करन सिंह, आदर्श त्यागी, डॉ. हरनन्दन प्रसाद, चंचल सक्सेना, राजेश कुमार, करतार सिंह, खिलेंद्र सिंह, दीप्ति ग्रेवाल, पंकज पुष्कर, कोशर अशरफ, वसीम मसरूर खान, रेहाना परवीन, राजकुमार शर्मा, भीम सिंह और व्योम गुप्ता सहित कई शिक्षकों ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

प्रत्येक ब्लॉक टीम के साथ ध्वज और बैंड लेकर पहुंचेगा

व्यायाम शिक्षकों व शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों को बताया कि वह तय तिथियों पर बच्चों को निर्धारित यूनिफॉर्म में तथा पीटीआई को सफेद ट्रैक सूट में अनिवार्य रूप से उपस्थित हों। यह निर्णय भी लिया गया कि प्रत्येक ब्लॉक अपनी टीम के साथ ध्वज और बैंड लेकर पहुंचेगा।

दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए गजराज

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का चुनाव कराया गया। जिसमें दिल्ली के गजराज जैन पुनः निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुए गए। जबकि श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा की अध्यक्षा सरिता महेन्द्र के. जैन को चुना गया। टीएमयू की त्रय्या जैन को महिला महासभा की संयुक्त महामंत्री चुना गया। मुख्य चुनाव अधिकारी टीएमयू के कुलाधिपति सुरेश जैन की देखरेख में चुनाव कराया गया।

इससे पूर्व मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन व मंगलाचरण से आडिटोरियम में कार्यक्रम की शुरुआत हुई।अतिथियों को तिलक लगाकर और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। टीएमयू के वीसी प्रो. वीके जैन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए यूनिवर्सिटी की प्रगति और विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। कुलाधिपति सुरेश जैन ने कहा कि श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा केवल 131 साल की होने से बड़ी नहीं होती है। इसे और बड़ाना होगा। जीवीसी मनीष जैन ने कहा कि महासभा के उज्जवल भविष्य के लिए वरिष्ठों को कुर्सियों का मोह त्यागकर भविष्य के लिए युवाओं को तैयार करना होगा।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के चुनाव में निर्वाचन प्रतिनिधि व महासभा के अन्य लोग।

● मुख्य चुनाव अधिकारी टीएमयू के कुलाधिपति की देखरेख में संपन्न हुआ चुनाव

संचालन डॉ. निर्मल कुमार जैन ने किया। इस दौरान अरविंद लोहाड़िया, प्रकाश बड़जात्या, पवन गोधा, वीना जैन, चुनाव अधिकारी गजेन्द्र बैज, अनुज जैन के अलावा मुरादाबाद जैन समाज के अध्यक्ष अनिल जैन, अमरोहा जैन समाज के अध्यक्ष योगेश जैन, डॉ. कल्पना जैन, अमरोहा की नगर पालिका अध्यक्ष शशि जैन के अलावा जैन समाज के अन्य प्रतिनिधि मौजूद रहे।

विश्व एड्स दिवस | एनसीसी कैडेट, एनजीओ, स्वास्थ्य विभाग समेत कई स्कूलों के बच्चे हुए शामिल

एड्स का ज्ञान, बचाए जान का नारा लगा किया जागरूक

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : 23 यूपी बटालियन एनसीसी और स्वास्थ्य विभाग के द्वारा मिलकर विश्व एड्स दिवस के अवसर पर सोमवार को रैली निकाली गई। रैली को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलदीप सिंह और मेजर राजीव ढल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। 23 यूपी बटालियन एनसीसी की सब यूनिट महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज, केजीके इंटर कॉलेज, पारकर इंटर कॉलेज के एनसीसी कैडेटों, एनजीओ और स्वास्थ्य विभाग की टीमें रैली में शामिल रहीं।

एनसीसी कैडेट नारा लगाते हुए कि एनसीसी कैडेटों ने ठाना है एड्स मुक्त भारत बनाना है, एड्स का ज्ञान - बचाए जान चल रहे थे। मेजर राजीव ढल ने कहा कि एड्स आज एक जानलेवा बीमारी बनी हुई है। इसके फैलने के कारण और इससे बचाव के के बारे में एनसीसी कैडेटों को जानकारी दी गई। वह एक मैसेंजर के रूप में काम करेंगे और जन जागरूकता अभियान चलाएंगे जिससे भारत एड्स मुक्त हो सके। उन्होंने बताया कि हमें प्रयुक्त की गई सीरिंज का प्रयोग दोबारा नहीं करना चाहिए, यदि किसी को रक्त चढ़ाया जाए तो उसकी पहले जांच हो जानी चाहिए, सुरक्षित यौन संबंधों को अपनाना चाहिए और बाजार में कई इस प्रकार की चीज हैं जिससे कि एड्स से बचा जा सकता है उनका प्रयोग करना चाहिए। इस मौके पर डॉ नरेंद्र कुरैचया, विनीता पांडे, अंडर ऑफिसर अनूप यादव, सार्जेंट फैजान, सार्जेंट विशेष कुमार, सार्जेंट अर्पितकांत, कैडेट अमित कुमार, गरिमा सिंह, हर्षित, शिवा, अभिषेक, आकाश सिंह रहीद, अमन सहित बड़ी संख्या में एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

एड्स दिवस पर निकाली जागरूकता रैली में शामिल एनसीसी कैडेट व अन्य।

बाधाएं दरकिनार, एचआईवी पर सशक्त प्रहार

मुरादाबाद, अमृत विचार : सोमवार को विश्व एड्स दिवस पर ज़िला क्षय रोग केंद्र टाउन हॉल पुराना मर्दाना अस्पताल में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। ज़िला क्षय रोग अधिकारी डॉ एन के कुरैचया ने जिले के नागरिकों का जागरूक करते हुए कहा कि वह एड्स के प्रति जागरूक बनें और जानलेवा बीमारी से सुरक्षित रहें। बीमारी गांव देहात तक अपने पांव पसार रही है। बताया कि संक्रमण चार कारणों से फैलता है। पहला एचआईवी संक्रमित सुई से, दूसरा संक्रमित रक्त चढ़ाने से, तीसरा संक्रमित गर्भवती से उसके बच्चे को और चौथा अंतिम कारण असुरक्षित यौन संबंध से। ज़िला कार्यक्रम समन्वयक डॉ. मुहम्मद जावेद ने बताया कि एड्स जागरुकता के लिए इस वर्ष थीम है बाधाएं दरकिनार, एचआईवी पर सशक्त प्रहार। उन्होंने बताया कि टीबी-एचआईवी को समाप्त करने के लिए टीबी के चिह्नित रोगियों की शतप्रतिशत एचआईवी का टेस्ट कराया जाता है। इसी प्रकार सभी एचआईवी पॉजिटिव व्यक्तियों की टीबी की जांच कराई जाती है क्योंकि एचआईवी व्यक्तियों को सबसे पहले टीबी रोग होने का खतरा रहता है। इस अवसर पर अमित भटनागर, मनोज कुमार, नरेश कुमार राना, इल्यास हुसैन, अंकुर शर्मा, सुभाग अग्रवाल, दामन सिंह, राजेश सिंह, रामू सिंह भी मौजूद रहे।

छात्राओं को सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

कांठ, अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय कांठ में मिशन शक्ति-5.0 के अंतर्गत गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में छात्राओं को सुरक्षा व उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया।

प्राचार्य प्रोफेसर नजाकत हुसैन और कार्यक्रम की प्रभारी डॉ नौमी प्रिया के नेतृत्व में महिला सुरक्षा हेल्प लाइन नंबर विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता महाविद्यालय में अंग्रेजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ संदीप कुमार गुप्ता ने बताया कि महिलाओं के लिए देश सरकार ने 1091, 1076, 102, 1098 जैसे कुछ खास नंबर है, जिसपर कॉल कर महिलाएं और बेटियां मुसीबत में पुलिस की मदद ले सकती है। इस अवसर पर डॉ नरेंद्र सिंह, डॉ. कामरान आलम, डॉ. मुदित सिंघल, राजकुमार समेत कई लोग मौजूद रहे।

इस्कॉन भक्तों ने गीता जयंती पर हरि नाम संकीर्तन किया

गीता जयंती पर आयोजित हरि नाम कीर्तन में शामिल श्रद्धालु। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: अंतर्राष्ट्रीय श्री कृष्ण भावना अमृत संघ इस्कॉन द्वारा सोमवार को गीता जयंती पर गीता मैराथन व हरिनाम संकीर्तन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए।

हरिनाम संकीर्तन की शुरुआत अल्पना रितेश गुप्ता व अमित गुप्ता ने भगवान जगन्नाथ के विग्रह के सामने नारियल फोड़कर की। भक्तों को भगवत गीता प्रदान कर उसकी महत्ता बताई गई। इस्कॉन भक्तों ने संकीर्तन में प्रसाद वितरित किया। बताया गया कि आज के ही दिन भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र में गीता सुनाई थी। इसलिए आज का दिन मोक्षदा एकादशी के नाम से मनाया जाता है। शोभायात्रा मंडी चौक, पान दरीबा से शुरू होकर अमरोहा गेट, कोतवाली टाउन हॉल, गुरहट्टी चौराहे होते हुए ताड़ीखाने पर विश्राम हुई। प्रबंधक उज्जवल सुंदर दास, अरुण उदय दास, सचि नंदन दास, महामुनि दास, मोहन श्यामसुंदर दास, साक्षी गौरांग दास, राधा कांत गिरधारी दास मीडिया प्रभारी, हरि स्पर्श दास, राधिका माधव आदि मौजूद रहे।

अमृत विचार

मुरादाबाद , मंगलवार,2 दिसंबर 2025

मुरादाबाद

न्यूज ब्रीफ

बिना तनाव काम पूरा करें बीएलओ

छजलैट, अमृत विचार : उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ संबद्ध अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के ब्लॉक अध्यक्ष एवं वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष वीरेंद्र चौधरी ने बीएलओ के रूप में कार्यरत शिक्षक साथियों से अपील की है कि वे अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से पूरा करें। उन्होंने कहा कि दिक्कत होने पर सुपरवाइजर, उच्च अधिकारियों से साझा करें। मानसिक तनाव लेने की आवश्यकता नहीं है। संगठन आपके अधिकारों और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

वीरेंद्र चौधरी।

पति समेत पांच पर दहेज प्रथा का केस दर्ज

भोजपुर, अमृत विचार : सोमवार को पुलिस ने गांव मिलक लालुवाला निवासी अतर सिंह की विवाहित बेटी रीना की तहरीर पर थाना भगतपुर के गांव चक निवासी पति धर्मेन्द्र, सास सुरेश, ससुर चिरंजी के खिलाफ दहेज में बाइक और एक लाख की मांग को लेकर उत्पीड़न करने, मारपीट कर घर से निकालने एवं देवर मनोज और जेठ विनोद पर गंदी नजर रखने के आरोप में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एक साथ उठीं पांच अर्थियां तो रो पड़ा पूरा गांव

अब्दुल्लापुर गांव में नहीं जले चूल्हे, परिवारीजन हो गए बेहाल, रविवार को सड़क दुर्घटना में 6 लोगों की गई चली गई थी जान

संवाददाता, कुंदरकी

अमृत विचार: सोमवार को सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वाले पांच लोगों का ग्राम अब्दुल्लापुर में ही अंतिम संस्कार किया गया जबकि ग्राम मधुपुरी थाना मैनाठेर निवासी महिला का शव अब्दुल्लापुर से उसके ससुराल वाले ले गए जहां पर उसका अंतिम संस्कार किया गया।

थाना कुंदरकी क्षेत्र के गांव अब्दुल्लापुर में सोमवार को मातम पसरा रहा। गांव से जब एकसाथ 5 अर्थियां उठीं तो पूरा गांव रो पड़ा। हर किसी की आंखें नम हो गईं। परिजनों में चीख पुकार मच गई। रविवार को गांव के करन और ओमवीर परिवार के साथ फुफेरे भाई की बेटी की शादी में शामिल होने कटघर के रफातपुर जा रहे थे। कुछ सदस्य बाइक और बाकी गांव के ही संजू के ऑटो में सवार होकर निकले थे। जैसे ही ऑटो लखनऊ–दिल्ली हाईवे पर दलपतपुर जीरो प्वाइंट से आगे बढ़ा, तेज रफ्तार बस ने ओवरटेक करते समय ऑटो को जोरदार टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी भीषण थी कि ऑटो बस के अगले हिस्से में फंस गया और करीब 40 मीटर तक घिसटता हुआ खिंचता चला गया। भीषण आवाज सुनकर राहगीर घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े। क्षतिग्रस्त ऑटो में फंसी लाशें और घायल लोगों की तड़पती हालत देखकर हर कोई दहशत में आ गया। हादसे के बाद शव सड़क पर बिखर गए और कई किलोमीटर तक लंबा जाम लग गया। चारों ओर चीख-पुकार और अफरा-तफरी का माहौल बन गया था और 6 लोगों की जान चली गई थी। गांव में सोमवार को किसी के घर में चूल्हे नहीं जले हर तरफ बस सन्नाटा और मायूसी और आंसुओं का सैलाब छाया रहा। सीमा, आरती, अभय, संजू और अनन्या का अंतिम संस्कार गांव में ही किया गया जबकि मृतक का सुमन को उसके ससुराल वाले उसके मायके अब्दुल्लापुर से मधुपुरी ले गए जहां सुमन का भी अंतिम संस्कार किया गया।

संजू के बच्चों के सिर पर हाथ रखते कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह। ● अमृत विचार

विधायक ने बंधाया परिजनों को ढांढस

कुंदरकी विधायक रामवीर सिंह और उनके पुत्र विक्की ठाकुर भी ग्राम अब्दुल्लापुर पहुंचे और अंतिम संस्कार में शामिल हुए और परिजनों को सरकार से हर संभव मदद और मुआवजा दिलाने की बात कही। इसके साथ ही पूर्व विधायक हाजी मोहम्मद रिजवान, जिला पंचायत अध्यक्षा प्रतिनिधि राकेश चौहान, पूर्व प्रत्याशी व ब्लॉक प्रमुख हाफिज मोहम्मद वारिस, आजाद समाज पार्टी से आसिफ पाशा एडवोकेट व क्षेत्रीय नेता मृतकों के परिजनों को सांत्वना देने के लिए गांव पहुंचे।

पत्नी, बेटी और गर्भवती बहन को हादसे में खोया

करन के परिवार में पत्नी सीमा, बेटी अनन्या और बहन सुमन की मौत हो गई। अनन्या कक्षा 7 में सरकारी स्कूल में पढ़ती थी। करन का अस्पताल में इलाज चल रहा है। सुमन की सात माह पहले ग्राम मधुपुरी निवासी हरदीप के साथ शादी हुई थी और वह 6 माह की गर्भवती थी।

घर में शोकाकुल बैठे परिजन। ● अमृत विचार

संजू ने 6 माह पहले ही किस्तों पर लिया था टेंपो

संजू ने 6 माह पहले ही किस्तों पर टेंपो लिया था और तभी से वह टेंपो चलाकर किसी तरह किस्तें जमा कर रहा था और अपने परिवार का भरण–पोषण कर रहा था। पत्नी मीनाक्षी 5 वर्षीय बेटे अभी, 4 वर्षीय यूबी और 3 वर्षीय बेटी रितिका के सर से पिता का साया उठ गया। अब परिवार में अन्य कोई देखभाल करने वाला नहीं है। मां सुंदरी और दो भाई अपने बच्चों सहित अलग रहते हैं। सभी का रोते रोते बुरा हाल था।

अभय पुत्र ओमवीर सिंह उम्र 12 वर्ष नवभारत इंटर कॉलेज में कक्षा 6 का छात्र था। आरती पुत्री मुरारी 19 वर्ष चार बहनों में दूसरे नंबर की थी और 16 वर्षीय उसकी बहन रानी घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती है। परिवार में मां कुंती देवी सहित सभी का रोते-रोते बुरा हाल है। घायल झलक और अनुष्का का भी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

सदमे में बैठीं महिलाएं।

निःशुल्क मिलेंगी जांच सुविधाएं, स्वास्थ्य केंद्रों पर जल्द पहुंचेंगी मशीनें

मुरादाबाद, अमृत विचार : ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। अब जिले के सभी नौ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) पर लिवर, किडनी सहित कुल 40 प्रमुख जांचें निःशुल्क कराई जा सकेंगी।

शासन ने इस योजना के तहत एक कंपनी के साथ अनुबंध किया है, जिसके माध्यम से जिले के सभी सीएचसी पर अत्याधुनिक जांच मशीनें और रेजेंट पहुंचाई जा रही हैं। इंस्टॉलेशन के बाद जल्द इस सुविधा का लाभ मिलने लगेगा। डॉ. अमित सक्सेना ने बताया कि अब तक लिवर, किडनी, ईसीजी और अन्य जांच के लिए मरीजों को निजी अस्पतालों का रुख करना पड़ता है, जहां तीन से चार हजार रुपये तक का खर्च आता है जो अब जिला अस्पताल में ही मिलेगा। सीएमओ डॉ. कुलदीप सिंह ने बताया कि सीएचसी पर सेईलैक्ट्रा मशीन लगेगी, जिसमें एक बार में 45 सैंपल लगाए जा सकते हैं। रिपोर्ट सिर्फ 30 मिनट में तैयार हो जाएगी। रिपोर्ट ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीके से उपलब्ध कराई जाएगी।

बच्चों को बताया डिजिटल साक्षरता का महत्व

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड वित्त पोषित एवं लखनऊ विवि के समाजशास्त्र विभाग द्वारा संचालित विहान बालिका आवासीय विद्यालय आशियाना कॉलोनी में वर्ल्ड कंप्यूटर लिट्रेसी डे 2 दिसंबर की पूर्व संध्या पर सोमवार को जागरूकता कार्यक्रम हुआ। छात्राओं को बताया कि विश्व कंप्यूटर साक्षरता दिवस हर साल 2 दिसंबर को मनाया जाता है।

शिक्षक दीपक खोसला ने बताया कि यह दिन कंप्यूटर शिक्षा और डिजिटल साक्षरता के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है, खासकर महिलाओं और बच्चों जैसे वंचित समुदायों के बीच। उन्होंने बताया कि इस दिवस की शुरुआत 2 दिसंबर 2001 को हुई थी। इस अवसर पर आवासीय विद्यालय की समस्त छात्राओं ने 2025 की थीम डिजिटलेशन को बढ़ावा देने के स्लोगन हाथों में लेकर समाज को कंप्यूटर लिट्रेसी डे के अवसर पर जागरूक किया और अधिक से अधिक कंप्यूटर का प्रयोग की प्रतिबद्धता दोहराई। विहान आवासीय विद्यालय के पंजीकृत मजदूर के बच्चों को वर्तमान की इंटरनेट की दुनिया और सोशल नेटवर्किंग साइड फेसबुक, वाट्सअप, यूट्यूब, डब्लूडब्लूडब्लू आदि के बारे में कार्यक्रम में बताया गया। इस दौरान कार्यक्रम मे प्रभारी वार्डन मधुरिमा, मोहसिन अहमद खान लेखाकार, प्राची, जैबुनिशा, नईम फातिमा, दीपक खोसला, रिंकी चौधरी, आकांक्षी शर्मा, सरन देवी, चंद्रवती आदि उपस्थित रहे।

स्लोगन लिखकर जागरूक करतीं छात्राएं। ● अमृत विचार

● कंप्यूटर लिट्रेसी डे की पूर्व संध्या पर कार्यक्रम आयोजित

शांति लाते हैं अच्छे कर्म

संवाददाता, छजलैट

अमृत विचार: थाना छजलैट क्षेत्र के ग्राम कुचावली स्थित सीएनएस एकेडमी में शनिवार को बाबा फुलसंदे वाले का सत्संग आयोजित किया गया, जिसमें कर्म ही जीवन है विषय पर प्रवचन दिया गया।

बाबा फुलसंदे वालों ने कहा कि मनुष्य जन्म हमारे हाथ में नहीं, परंतु जीवन कैसा बनेगा, यह हमारे कर्म निर्धारित करते हैं। उन्होंने बताया कि अच्छे कर्म सुख और शांति, जबकि बुरे कर्म दुख और बाधाएँ लाते हैं। गीता का उदाहरण देते हुए कहा कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने तक है, फल पर नहीं। उन्होंने सेवा, दया, सत्य, परोपकार को श्रेष्ठ कर्म बताया और क्रोध, लोभ, अहंकार एवं हिंसा से दूर रहने का संदेश दिया। बाबा फुलसंतवाले ने कहा कि जब मन शुद्ध होता है तो कर्म भी पवित्र होते हैं और उसी से व्यक्ति, परिवार व समाज का कल्याण होता है। इस दौरान पूरा पंडाल एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा के भजन से गूंज उठा। स्कूल के चेयरमैन सुंदर सिंह ने बाबा को शॉल पहना कर सम्मानित किया, जबकि प्रधानाचार्या प्रियंका सिंह ने आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रदीप सिंह व कुलदीप सिंह द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया।

बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करते विद्यालय के चैयरमेन व प्रधानाचार्या।

● सीएनएस एकेडमी में बाबा फुलसन्दे वालों का सत्संग

अनदेखी: छह माह से जारी नहीं हुए जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्र, आवेदक परेशान

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: देहात क्षेत्र के सैकड़ों ग्रामीणों को पिछले छह महीनों से जन्म व मृत्यु प्रमाणपत्र न मिलने के कारण परेशानी झेलनी पड़ रही हैं। विकास भवन में पंचायत राज विभाग कार्यालय के चक्कर काटने के बावजूद प्रमाणपत्र जारी नहीं हो पा रहे हैं। मृतकों के आश्रितों को कोई संतोषजनक जवाब न देकर उन्हें पंचायत सचिवों की ओर से भरे गए आवेदन में गलती बताकर या कभी साइट न चलने का बहाना बना कर टरका दिया जाता है।

सोमवार को काजीपुरा के रहने वाले असगर ने बताया कि वह साढू, ससुर और बहन के ससुर का मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए कई बार आ चुका है लेकिन कभी साइट बंद तो कभी कनेक्टिविटी फेल होने की बात कह कर उसे वापस भेज दिया। उसने बताया कि वह शनिवार को आया तो जन्म व मृत्यु प्रमाणपत्र बनाने वाले अधिकारी छुट्टी पर बताए गए। असगर के अनुसार वह कई बार विकास भवन के चक्कर काट चुका है लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। वहीं छजलैट के राम प्रकाश कश्यप ने बताया कि उसने तीन बार पंचायत सचिव से गलत डिटेल को सही करने के लिए कहा तब जाकर सही डिटेल फीड की गई इसमें चार महीने निकल गए।

अब विकास भवन में तीन चार बार से मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए चक्कर काट रहे हैं, ऐसे में पटल देख रहे कर्मचारी कभी सर्वर न चलने तो कभी आईडी एक्टिव न होने का हवाला देकर टरका देते हैं। खास बात यह की यह सक बुछ जिला पंचायत राज अधिकारी के कोड से जारी होता है इसके बाद भी लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। सबसे अधिक दिक्कत उन परिवारों को हो रही है, जिन्हें सरकारी योजनाओं, इलाज, स्कूल प्रवेश, पेंशन, बीमा क्लेम या अन्य जरूरी प्रक्रियाओं के लिए प्रमाणपत्र की तत्काल जरूरत होती है।

● डीपीआरओ की आईडी पर अटका सिस्टम, ग्राम सचिवों की आपत्तियों से बढ़ी मुश्किलें

"साइट नहीं चलती तो कभी सर्वर परेशान कर रहा है। इस वक्त नेटवर्क संबंधित परेशानी बढ़ी है। प्रमाण पत्र जारी करने में फीड की जा रही डिटेल में हर बार ओटीपी मांगी जाती है जिसकी वजह से कई बार फीड की गई डिटेल को दोबारा फीड करना पड़ता है। इसके समाधान के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। – **आलोक कुमार शर्मा**, जिला पंचायत राज अधिकारी

हार्ट अटैक के मरीजों को मिलेगी जीवन रक्षक इंजेक्शन की सुविधा

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार : इन दिनों हार्ट अटैक के बढ़ते मामलों को लेकर शासन ने नई पहल की है। मुरादाबाद के मंडलीय जिला अस्पताल में जल्द ही हार्ट अटैक के मरीजों को जीवन रक्षक इंजेक्शन निशुल्क लगेगा। इस इंजेक्शन को लगाने के लिए डॉक्टर और स्टाफ को ट्रेनिंग भी दी जाएगी। अब तक हार्ट अटैक के मरीजों को निजी अस्पताल या मेरठ-दिल्ली की दौड़ लगानी पड़ती है। निजी अस्पताल में यह इंजेक्शन 40 हजार रुपये में लगता है। व्यवस्था शुरू होने के बाद जिला अस्पताल में यह इंजेक्शन निःशुल्क लगेगा।

हार्ट अटैक के बढ़ते मामले को लेकर सरकार गंभीर है। अब जिला अस्पताल आने वाले हार्ट अटैक के मरीजों को प्राथमिक उपचार के तौर पर जीवन रक्षक इंजेक्शन देने की योजना तैयार की जा रही है। इससे मरीज को तुरंत राहत मिलेगी। इसके बाद ही हायर सेंटर रेफर किया जाएगा। अभी तक इमरजेंसी पहुंचते ही मरीज को रेफर कर दिया जाता है।

सीएमओ डॉ. कुलदीप सिंह ने बताया कि इस इंजेक्शन को सरकारी अस्पताल में लगाने की सुविधा जल्द शुरू होगी। इंजेक्शन लगवाने के लिए जिला अस्पताल में विशेष आपातकालीन केंद्र स्थापित किया जाएगा। आपातकालीन केंद्र पर हार्टअटैक के मरीजों को इंजेक्शन निःशुल्क लगेगा।

दिल का डॉक्टर नहीं, फिजीशियन का सहारा

जनपद के किसी भी सरकारी अस्पताल में दिल का डॉक्टर नहीं है। जिला अस्पताल की भी यही स्थिति है। मरीजों को फिजीशियन चेकअप कर दवा लिख रहे हैं। यह स्थिति तब है जब रोजाना हार्ट की दिक्कत के 8 से 10 मरीज अस्पताल पहुंच रहे हैं। वहीं, गंभीर हालत में मरीज को मेरठ के लिए रेफर किया जाता है।

सरकारी संपत्ति पर अतिक्रमण कर धार्मिक स्थल बनाने का विरोध, प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

अमृत विचार: अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल महानगर के द्वारा सोमवार को कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर डीएम को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन के अधिकारी को दिया। पदाधिकारियों ने कहा कि लाजपत नगर के रिहायशी इलाके में कुछ लोगों द्वारा प्राचीन धार्मिक स्थल की आड़ में सरकारी संपत्ति पर अतिक्रमण कर अपना नवीन धार्मिक स्थल स्थापित किया गया है।

राष्ट्रीय बजरंग दल के प्रदेश अध्यक्ष रोहन सक्सेना ने कहा कि लाजपत नगर में पानी की सरकारी टंकी के पीछे वर्षों पुरानी पहलवान साहब की ज़्यारत से कुछ समुदाय विशेष के लोगों की आस्था जुड़ी हुई थी, पर इस ज्यारत के पास सरकारी खाली भूमि पार्क के नाम से पड़ी हुई थी। जिस में बच्चे खेलते, बुजुर्ग बैठते और क्षेत्रवासी घूमा करते थे। लेकिन वर्तमान में समुदाय विशेष ने इस स्थान पर अतिक्रमण कर धीरे- धीरे वहां नमाज पढ़ने के बाद एक हॉल, मदरसे का ढांचा तैयार कर लिया है जिसे समाज कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। महानगर महामंत्री अमित अग्रवाल ने कहा कि कब्जाई हुई भूमि को अविलंब कब्जा मुक्त कराई जाए। आरोपियों पर कार्रवाई की जाए। ज्ञापन देने वालों में संगठन के महानगर मीडिया प्रभारी अभिषेक श्रीवास्तव, शिवम प्रजापति, जतिन प्रजापति, गंगा राणा, शिवम, राकेश, कृष, रोहित, राहुल, रोहित सैनी, अभिषेक आदि कार्यकर्ता शामिल रहे। पदाधिकारियों ने मांग की है कि जिले में और भी स्थान हो सकते है उन सभी की जांच हो ओर ऐसे सभी पार्कों को कब्जा मुक्त कर शहर को सुंदर पार्क व स्मार्ट सिटी के रूप में उजागर किया जाए।

प्रदर्शन अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल के पदाधिकारी व कार्यकर्ता।

● राष्ट्रीय बजरंग दल के प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में प्रदर्शन कर डीएम को संबोधित ज्ञापन सौंपा

न्यूज डायरी

किसी से कम नहीं दिव्यांग छात्र-छात्राएं

कांठ, अमृत विचार : बीआरसी केंद्र कांठ परिसर में दिव्यांग छात्र–छात्राओं के लिए तहसील स्तरीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। खण्ड शिक्षा अधिकारी शिवम गुप्ता के निर्देशन में व्यायाम शिक्षक करतार सिंह द्वारा 50 मी .दौड़ बालिका वर्ग की शुरुआत कराई गई। कंपोजिट विद्यालय मधुवा खालसा के शिक्षक महेश शर्मा, पीएस शेखुपुरा से अरविंद चौधरी, रायपुर खुर्द से सूरजपाल सिंह, पीएस फूलपूर के शिक्षक सुभाष कुमार, फोल्डा पटटी से कमल सिंह, जितेन्द्र सिंह का योगदान रहा। अन्य प्रतियोगिताओं में 50 मी . दौड़ बालक वर्ग, छूकर पहचानो, कुर्सी दौड़ बालक एवं बालिका वर्ग, प्राथमिक व जूनियर वर्ग सुलेख प्रतियोगिता में शिक्षक मौ . अजीम, पंकज चाहल, योगेन्द्र सिंह, रामरूप सिंह, हुकम सिंह एवं कुलदीप कुमार का सहयोग रहा। पुरस्कार वितरण के दौरान मुख्य अतिथि शिवम गुप्ता ने कहा कि बच्चों ने प्रतिभाओं के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है कि दिव्यांग सामान्य लोगों से किसी प्रकार पीछे नहीं है।

बीएमएस ने श्रम संहिताओं के लागू करने का स्वागत किया

मुरादाबाद, अमृत विचार : भारतीय मजदूर संघ के क्षेत्र संगठन मंत्री शंकर लाल ने सोमवार को बुद्धि विहार के माला निकेतन में बैठक में कहा कि केंद्र सरकार ने देश के श्रमिकों और श्रमबल के लिए बेहतर वेतन, रक्षा, सामाजिक सुरक्षा और बेहतर कल्याण जैसे बड़े बदलाव कर चार नए श्रम कानून लागू किए हैं। भारतीय मजदूर संघ मजदूरों के हित में उठाए गए इस कदम का स्वागत किया है। कहा कि ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए भारत सरकार ने चार श्रम संहिताओं को 21 नवंबर 2025 से लागू करने की घोषणा की है। मजदूर संघ के जिला कार्यकारी अध्यक्ष तरुण पाराशर ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद से यह बड़ा सुधार है। स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचार प्रमुख डॉ. पवन कुमार जैन ने कहा कि पचास करोड़ लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं और नई श्रम संहिता लागू होने से अब उनका न्यूनतम वेतन सुनिश्चित हो जाएगा। बाल कल्याण आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विशेष गुप्ता ने कहा कि महिलाओं के लिए समान वेतन का भी प्रावधान है।

राजकीय इंटर कॉलेज सलेमपुर के छात्रों ने विभिन्न स्थलों का किया भ्रमण

कांठ, अमृत विचार : राजकीय इंटर कॉलेज सलेमपुर के छात्र–छात्राओं ने मुरादाबाद के विभिन्न स्थलों का भ्रमण किया। 150 से अधिक छात्र–छात्राओं ने शैक्षिक भ्रमण के द्वितीय चरण में कंपनी बाग स्थित 5 डी मोशन चेयर शो, होलोग्राफिक शो, भूल भुलैया, संविधान साहित्य वाटिका, हनुमान वाटिका, आई एफ टी एम यूनिवर्सिटी का भ्रमण किया। प्रधानाचार्य डॉ अनुज अग्रवाल ने बताया कि संविधान साहित्य वाटिका में बच्चों को संविधान का पालन करने की शपथ दिलाई गई। सामाजिक संस्था वर्क मुरादाबाद के कन्वीनर अब्दुल मन्नान ने भारत के विश्व गुरु बनने के सपने को साकार करने की बात कही। समाजसेवी चंचल कुमार ने जल सरंक्षण पर अपने विचार प्रकट किए। देवेंद्र चौधरी, जग्गू बोहरा, उदयभान सिंह आदि ने भी छात्रों को संबोधित किया। कार्यक्रम में नोडल प्रभारी विवेक कुमार राजपूत, विशाल कुमार, तारा सिंह, सलोनी, महक आदि का विशेष योगदान रहा।

पुरानी पेंशन हर शिक्षक कर्मचारियों का संवैधानिक हक

मुरादाबाद, अमृत विचार : बरेली मुरादाबाद शिक्षक एमएलसी निर्वाचन क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी मोहम्मद दानिश अख्तर ने मुरादाबाद जिले के कई विद्यालयों में पहुंचकर शिक्षकों से मुलाकात की। उनसे शिक्षा जगत से जुड़े प्रमुख मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। मुलाकात के दौरान शिक्षकों ने पुरानी पेंशन बहाली, सेवा सुरक्षा और वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को मानदेय प्रदान करने की आवश्यकता को प्रमुखता से उठाया। पार्टी के प्रत्याशी मोहम्मद दानिश अख्तर ने शिक्षकों की चिंताओं को गंभीरता से लेते हुए कहा कि पुरानी पेंशन बहाली शिक्षक समुदाय का अधिकार है। इस मुद्दे को परिषद में मजबूती के साथ उठाया जाएगा और समाधान के लिए निरंतर प्रयास किए जाएंगे। वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षक सीमित सुविधाओं में शिक्षा की गुणवत्ता बनाए हुए हैं। अवसर मिला तो ऐसे शिक्षकों को सम्मानजनक मानदेय दिलाने के लिए सरकार पर दबाव बनाएंगे और और उनकी आवाज को हर मंच पर उठाया जाएगा।

जिज्ञासा दूर कर विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन

संवाददाता, कांठ

अमृत विचार: सोमवार को राजकीय हाई स्कूल पैगंबरपुर में विज्ञान व गणित मेले का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने बड़ी संख्या में प्रतिभाग किया।

मेले में छात्र-छात्राओं ने रुचि अनुरूप चार्ट बनाए। रंगोली बनाई, गीत कविताएं सुनाई। राजकीय इंटर कालेज फरीदपुर भैंडी के प्रभारी प्रधानाचार्य/ राजकीय शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष अंचल कुमार त्यागी, जूनियर हाईस्कूल से रूबी रस्तोगी, गणित शिक्षक प्रदीप कुमार, विज्ञान शिक्षक सुनील कुमार, प्रधान, सीएचसी से डॉ. अनुभव गुप्ता, गणित शिक्षक भूदेव सिंह आदि विशेषज्ञ वक्ताओं ने विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी जिज्ञासाएं दूर कर मार्गदर्शन किया। प्रधानाचार्य संजीव गुप्ता ने विशेष योगदान देने वाले प्रतिभागियों को मेडल एवं प्रमाण पत्र दिए। मंच का संचालन विद्यालय नोडल शिक्षक जगसरन सिंह ने किया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के कनिष्ठ सहायक विकास कुमार द्वारा अतिथियों, छात्र छात्राओं एवं अभिभावकों के लिए जलपान एवं मिठाई का प्रबंध एवं वितरण किया गया।

विज्ञान में गणित मेले में उपस्थित छात्र–छात्राएं व स्टाफ। ● अमृत विचार

● राजकीय हाई स्कूल पैगंबरपुर में आयोजित किया गणित व विज्ञान मेला

एड्स से बचाव का संदेश दिया

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : सुरजन नगर स्थित गांधी स्मारक डिग्री कॉलेज में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. भूपेंद्र सिंह ने छात्र- छात्राओं को एड्स के प्रति सजग रहने, कारणों, लक्षणों और बचाव के उपायों की जानकारी आम लोगों तक पहुंचाने का संकल्प दिलाया। संचालन डॉ. देवेंद्र प्रकाश ने किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी शिक्षक, एनएसएस के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। विद्यार्थियों ने एड्स के प्रति जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से कई रचनात्मक गतिविधिया प्रस्तुत कीं। जागरुकता दीवार पर छात्र-छात्राओं ने एड्स से बचाव, रोकथाम और जागरुकता से संबंधित पोस्टर चिपकाए। जिससे एड्स से जुड़ी भ्रांतियों को दूर किया।

अमृत विचार
एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मो.7906815587

नाम परिवर्तन
मैंने अपना नाम MOHAMMAD AFZAL से बदलकर नया नाम MOHAMMED AFZAL SIRAJ S/O SIRAJ ANWAR R/O डिप्टी गंज मुरादाबाद रख लिया है। अब भविष्य में मुझे नए नाम से पहचाना जाये।

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

न्यूज ब्रीफ

चोरी हुए दो कैंटर का अब तक सुराग नहीं

सैफनी, अमृत विचार : थाना क्षेत्र में शाहबाद- बिलारी मार्ग स्थित रूपपुर के पास सागर फिलिंग स्टेशन से 22 अक्टूबर रात चोरी हुए दो कैंटरों का अब तक कोई सुराग नहीं लग सका है। ग्राम रवाना निवासी गोरे खान ने बताया कि कैंटर और उनके बड़े भाई द्वारा चलाया जाने वाला दूसरा कैंटर पेट्रोल पंप पर खड़ा था। यह दूसरा वाहन नीरज यादव निवासी बिसौली (बदायूं) के नाम दर्ज बताया गया है। 23 अक्टूबर को उन्होंने देखा कि दोनों वाहन गायब हैं। इस मामले में पुलिस ने 26 अक्टूबर को रिपोर्ट दर्ज की थी। आईओ ब्रजेश जयसवाल ने बताया कि मामले की जांच कर रहे हैं।

अश्लील मैसेज भेजने का विरोध करने पर पीटा

शाहबाद, अमृत विचार : शाहबाद थाना क्षेत्र के गांव रसूलपुर निवासी अमरजीत सिंह का कहना है कि वह मौजूदा समय में मुरादाबाद में रहता है। उसके पुत्र अरुण के साथ सुषांत नाम का युवक भी रहता था, जो कि लड़की की फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर अश्लील भाषा का प्रयोग कर रहा था। जब अरुण ने सुशांत को फर्जी आईडी बनाकर गाली गलौज करने से मना किया, जो सुशांत, भूरे, सुषमा ने अरुण को 22 नवंबर को घर पर बुलाकर उसको पीट दिया। पुलिस ने तीन लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

नौ बच्चों को कराया बालश्रम से मुक्त

रामपुर, अमृत विचार : थाना एएचटीयू, श्रम विभाग एवं जिला चाइल्ड लाइन की संयुक्त टीम ने ऑपरेशन मुक्ति के तहत बालश्रम उन्मूलन अभियान, बालभिक्षावृत्ति, मानव तस्करी, से संबंधित योजनाओं की जानकारी दी। थाना सिविल लाइन क्षेत्र में अभियान चलाकर 8 स्थानों से 9 बच्चों को रेस्क्यू कर बालश्रम से मुक्त कराकर कार्रवाई की।

मधुमक्खियों के डसने से पांच घायल

सैफनी, अमृत विचार : कस्बे कोठी मोहल्ला स्थित कोठी बाग में सोमवार दोपहर 1 बजे के समय पेड़ पर लगा मधु मक्खियों का छत्ता अचानक छिड़ गया। इससे करीब दो घंटे तक मार्ग पर बंद रहा। मधुमक्खियों ने चार बच्चों और मोहल्ले के ही आलेहसन पर हमला कर दिया, जिससे चार बच्चों भी बुरी तरह घायल हो गए। सभी घायलों का अस्पताल में उपचार कराया। बच्चे भी मोहल्ले के ही बताए गए हैं।

सात दिन बंद रहेगा शंकरपुर रेलवे क्रासिंग

रेलपथ पर मरम्मत कार्य होने के कारण लिया गया निर्णय, 15 गांवों के लोगों को हो रही परेशानी

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

अमृत विचार : थाना शहजादनगर क्षेत्र शंकरपुर रेलवे क्रॉसिंग एक सप्ताह के लिए फिर बंद कर दिया गया है। इससे पहले 7 से 14 नवंबर तक फाटक बंद रहा था। अब फिर से 7 दिसंबर तक लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। दीनपुर, मनकरा, भंडपुरा, राजारामपुर, खजुरिया, कलरख, हरियाल, लालपुर, पटरिया, निस्वा, नदनऊ समेत तमाम गांवों के हजारों लोगों की परेशानी बढ गई है।

राष्ट्रीय पंचायती राज ग्राम प्रधान संगठन के जिला महासचिव व प्रवक्ता काशिफ खां ने बताया कि मरम्मत कार्य के नाम पर हर माह एक-एक सप्ताह के लिए शंकरपुर पटवाई मार्ग पर यातायात बंद करना बेहद गलत है। उन्होंने चिंता जताई कि यह महत्वपूर्व मार्ग है और रेलपथ की ओवरहालिंग के लिए लंबे समय तक फाटक बंद करने से दर्जनों गांवों के लोगों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। दीनपुर, मनकरा, भंडपुरा, राजारामपुर, खजुरिया, कलरख, हरियाल, लालपुर, पटरिया, निस्वा, नदनऊ समेत तमाम गांवों के लोग परेशान हैं। भंडपुरा में उर्स शरीफ में दूर दराज से पहुंचने वाले अकीदतमंदों को भी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि पिछली बार फाटक बंद किए जाने की सूचना भी पंचायत प्रतिनिधियों को नहीं दी गई थी। उन्होंने प्रवर मंडल अभियंता तृतीय मुरादाबाद से मांग की है कि रेलपथ की ओवरहालिंग का कार्य शीघ्र ही पूर्ण किया जाए ताकि यातायात चालू हो सके। प्रधान संगठन ने बताया कि इससे 15 गांवो के हजारों लोगों को दिक्कत हो रही है।

फाटक बंद होने के बाद खड़े लोग। ● अमृत विचार

मरम्मत के नाम पर हर माह एक एक सप्ताह के लिए शंकरपुर पटवाई मार्ग पर यातायात बंद किए जाने लोगों में काफी गुस्सा हैं। आने जाने में परेशानियां आती है। – शुएब खान

रेलपथ की ओवरहालिंग के लिए लंबे समय तक फाटक बंद करने से दर्जनों गांवों के लोगों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। कहीं कोई सुनवाई नहीं है। – ताहिर अली

भंडपुरा में उर्स शरीफ में दूर दराज से पहुंचने वाले अकीदतमंदों को भी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। कई बार अधिकारियों को ज्ञापन के माध्यम से अवगत तक कराया जा चुका है। – सलीम अल्वी

बार बार रेलवे फाटक बंद होने से लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हादसे होने तक का खतरा बना रहता है। कई –कई दिन में फाटक बंद रहता है। – शाहिद अली

बार बार रेलवे फाटक बंद होने से लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हादसे होने तक का खतरा बना रहता है। अधिकारी मरम्मत के नाम पर फाटक को बंद कर देते है। – विक्रमजीत सिंह

नवंबर माह में भी सात दिन के लिए यानि 7 से 14 नवंबर तक के लिए फाटक बंद कर दिया गया था। जिसके चलते लोगों को निकलने में परेशानी आती थी। – शहजान खां

रास्ते से दीवार हटवाने के लिए एडीएम को सौंपा ज्ञापन

ज्ञापन देकर आते बजवाला गांव के लोग। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● दबंगों ने सार्वजनिक स्थान पर बना ली दीवार

अमृत विचार : बजावाला गांव के ग्रामीणों ने सोमवार कलेक्ट्रेट में एडीएम को ज्ञापन सौंपा। लोगों ने बताया कि कुछ दबंगों ने बलपूर्वक सार्वजनिक रास्ते में दीवार बना ली है। जबरदस्ती पानी रोक दिया है। ग्रामवासियों के रास्ते का पानी रोक देने से आने जाने में बहुत दिक्कत हो रही है। पानी के एकत्रित होने से मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। जिसके कारण बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। जिससे रास्ता पूर्ण रूप से बंद हो गया है। जब आरोपियों से पानी बंद करने को मना किया तो यह लोग आग बबूला हो गए और गाली देने लगे।

सचिव द्वारा पूर्व में ग्रामवासियों से यह कहा कि वर्ष 2024 की कार्य योजना में इस रास्ते को सम्मिलित कर लिया गया है। विकासखंड अधिकारी द्वारा आज तक इस रास्ते को सही नहीं कराया गया। जिससे ग्राम पंचायत के लोगों को बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन देने वालों में अकील अहमद, खलील अहमद, नबी अहमद, लाल मोहम्मद, शकील आदि मौजूद रहे।

चकरोड से अतिक्रमण हटवाने को एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

कार्यालय संवाददाता,बिलासपुर

● चकरोड को खेतों में मिलाया किसानों को हो रही दिक्कत

अमृत विचार : किसानों ने चकरोड और गूल को अतिक्रमण मुक्त कराने की मांग को लेकर तहसील में प्रदर्शन किया। उन्होंने संबंधित लेखपाल पर आरोप लगाते हुए कार्रवाई की भी मांग की है। किसानों ने नारेबाजी करते हुए एसडीएम को एक ज्ञापन सौंपा।

सोमवार दोपहर मोहल्ला टांडा हुरमतनगर के किसान और खेत स्वामी भारतीय किसान यूनियन टिकैत के प्रदेश सचिव सरदार मंजीत सिंह अटवाल के नेतृत्व में तहसील पहुंचे। एसडीएम अरुण कुमार को अपना पत्र सौंपा। किसानों ने बताया कि 15 नवंबर को तहसील में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में भी अधिकारियों को एक प्रार्थना पत्र दिया था। इसमें कहा गया था कि मोहल्ले में स्थित चकरोड और गूल को कुछ पड़ोसी काश्तकारों ने अपनी जमीन में मिला लिया है। इस अतिक्रमण के कारण अन्य खेत स्वामियों को अपने खेतों तक कृषि यंत्र ले जाने में परेशानी हो रही है। किसानों ने आरोप लगाया कि समाधान दिवस में दिए गए प्रार्थना पत्र के आधार पर शुक्रवार को संबंधित लेखपाल मौके पर पहुंचे थे। हालांकि लेखपाल ने चकरोड की पैमाइश करने के बजाय कथित कब्जाधारियों से साठ-गांठ कर उन्हें ही धमकाना शुरू कर दिया। खेत स्वामियों की मांग है कि चकरोड को अतिक्रमण मुक्त कराया जाए। उसकी पैमाइश की जाए। संबंधित लेखपाल के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। ज्ञापन सौंपने वालों में दीपक कुमार, अकील अहमद, छिद्दन, जमना, अहमद नबी, रामपाल, सनी राठौर, विक्की राठौर, मोनू व रफीक सहित कई अन्य खेत स्वामी शामिल रहे।

जिले की कई चीनी मिलों में हो रही गन्ने की घटतोली: भानु

कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन करते किसान। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

● भाकियू अराजनैतिक ने सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) की पंचायत कलेक्ट्रेट में हुई। उसके बाद किसानों की मुख्य मांगों को लेकर जिलाधिकारी के नाम ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा। जिसमें जिलाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह गंगवार ने कहा कि जनपद के चीनी मिलों द्वारा डीएसएम मीरगंज शुगर मिल के देवरी खुर्द, गुलामगंज जदीद, हरसू नगला मनोना क्रय केंद्र पर लगातार किसानों के साथ घाटोली की जा रही है।

जोकि सभी मिलक तहसील में आते हैं। इस से किसान परेशान है।अधिकारी मामले को तत्काल संज्ञान में लेकर जांच करा कर कार्रवाई करें। जिला चिकित्सालय में आसपास के गांव के आए मरीजों से जांच के नाम पर पैसे लिए जा रहे हैं। डॉक्टर मरीज को अंदर की दवाई न देकर पर्ची पर बाहर की दवाइयां लिखते हैं। गरीब किसान मजदूर पैसे ना होने की वजह से जिला चिकित्सालय आता है। डॉक्टर लूटने का काम करते है। जनपद में फर्जी अल्ट्रासाउंड केंद्र चलाए जा रहे हैं उस पर भी कार्रवाई होनी चाहिए। ग्राम सहरी तहसील मिलक में सिंचाई विभाग की सरकारी भूमि व शमशान की सरकारी भूमि पर भूमाफिया का कब्जा है। तहसील बिलासपुर माइनर से चंद्रपुर जदीद, गुलामगंज, हरसू नगला तक हजारों किसान सिंचाई से वंचित है। तत्काल दोनों नहरों को खुलवाया जाए। इन सभी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो आने वाली पंचायत 17 तारीख को होगी। उसमें कलेक्ट्रेट परिसर में आंदोलन को मजबूर होंगे। इस मौके सुनील मौर्य, अवतार सिंह, फरीद खां, सुशील कुमार शर्मा, बाबर खां, नीरज कुमार, शाहिद खां, साबिर अली, फाजिल अंसारी, अब्दुल रज्जाक खान, समी खां, बाल किशोर पांडे आदि किसान मौजूद रहे।

मार्ग बनवाने की मांग की मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

रामपुर, अमृत विचार : स्वार क्षेत्र के गांव रसूलपुर फरीदपुर के ग्रामीण सद्दाम हुसैन के नेतृत्व में एकत्र होकर सोमवार को कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां पहुंचकर सभी ग्रामीणों ने कच्चे मार्ग के निर्माण की मांग करते हुए प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। गांव के लोगों का कहना है कि लालपुर से धनौरी (स्वार) तक कोसी नदी के किनारे एक मार्ग (बांध) जिसका निर्माण लगभग 50 वर्ष पूर्व हुआ था। जिस पर लालपुर से ग्राम बजावाला तक डामर रोड का निर्माण हो चुका है। बजावाला से धनौरी तक अभी भी कच्चा मिट्टी का मार्ग है जिसकी हालत जर्जर हो चुकी है यें मार्ग 10-12 गांवों को जोड़ता हुआ जाता है। जिसमें इमरता, चांदपुर-पसियापुरा, खेमपुर, रसूलपुर, फरीदपुर, सोनकपुर मिलक काजी, धनपुरा शाहदरा, मधुपुरी आदि गांव बसे हैं। इन गांवों व आसपास के गांवों के छोटे वाहन, बाइक, साइकिल, ऑटो आदि से रोजाना हजारों लोगों का आवागमन होता है और स्कूल के बच्चे, किसान अपनी फसल ट्रैक्टर-ट्रॉली से लेकर जाते हैं। कच्चा रोड होने की वजह से हल्की बारिश में आवागमन पूरी तरह से बंद हो जाता है। स्वार-बाजपुर मार्ग में होने वाले हादसों में भी कमी आएगी। इस दौरान बसपा जिलाध्यक्ष प्रमोद निरंकारी सागर, उपाध्यक्ष इसरार अली एडवोकेट, जिला कार्यकारिणी सदस्य डॉक्टर सद्दाम हुसैन, फरहान एडवोकेट, शिवम, फाजिल, हारून, उज्जवल सैनी, सलमान, फैजान सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

ऑनलाइन हाजिरी को लेकर जताया विरोध

संवाददाता,रामपुर/मिलक

प्रदर्शन करते ग्राम विकास अधिकारी एसोसिएशन के पदाधिकारी।

अमृत विचार : मिलक स्थित ब्लॉक परिसर में सोमवार को ग्राम विकास अधिकारी एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के बैनर तले ग्राम सचिव और ग्राम विकास अधिकारी एकत्रित हुए। काली पट्टी बांधकर शासन द्वारा लागू किए गए ऑनलाइन उपस्थिति सिस्टम का विरोध करते हुए प्रदर्शन किया। उन्होंने परेशानियां का हवाला देकर पंचायती राज निदेशक उत्तर प्रदेश को एक ज्ञापन भेजा।

ज्ञापन में उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत के समूह द्वारा ग्राम विकास अधिकारी की नियुक्ति होती है। जिस कारण उनका मुख्यालय का स्थायित्व निर्धारित नहीं होता है। पंचायत स्तर पर विभिन्न विकास योजनाओं के क्रियान्वयन, निरीक्षण, जनसंपर्क, सर्वेक्षण एवं पंचायत स्तरीय विभिन्न विभागों के द्वारा किए जा रहे कार्यों के समन्वय से जुड़ा है। उनका कार्यक्षेत्र फील्ड पर आधारित है। ऐसे में ऑनलाइन उपस्थिति कार्यालय पर होना अनुकूल और अनुरूप है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में लगभग 29 से अधिक विभागों का कार्य ग्राम पंचायत सचिव द्वारा वर्तमान में मांग आधारित न होकर पूर्ण रूप से लक्ष्य आधारित हो गया है। जिससे सचिवों के मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। क्षेत्रीय भौगोलिक काम से भी ऑनलाइन उपस्थिति प्रणाली लागू

सचिवों और वीडीओ ने ब्लॉक पर किया विरोध प्रदर्शन

● निदेशक पंचायती राज उप्र को सचिव व वीडीओ नरे भेजा ज्ञापन

हो पाना भी संभव नहीं है।लिखा की अधिकांश अवकाश के दिनों में भी राष्ट्रीय पर्वों, धार्मिक,जनहित के कार्यों, दैवीय आपदाओं में शासन प्रशासन के आकस्मिक निरीक्षण, चौपाल और रात्रि के कार्यक्रमों में असमय जूम मीटिंग के माध्यम से जुड़ने की बाध्यता होती है। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में ससमय ऑनलाइन उपस्थिति परिणाम प्रणाली निष्प्रभावी होगी। ऑनलाइन उपस्थिति किसी थर्ड पार्टी ऐप को फोन की एक्सेस देना निजता के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन भी है। उन्होंने ऑनलाइन उपस्थिति प्रणाली को तत्काल स्थगित करने की मांग की है। इस दौरान ब्लॉक स्तर के सभी ग्राम सचिव और ग्राम विकास अधिकारी मौजूद रहे।

रामपुर, अमृत विचार : ऑन लाइन हाजिरी के विरोध में ग्राम विकास और ग्राम पंचायत राज अधिकारियों ने ब्लॉक चमरौआ पर प्रदर्शन कर खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि शासन ने 3 नवंबर को आदेश जारी किया गया है जिसमें कहा गया है कि ग्राम विकास अधिकारी और ग्राम पंचायत राज अधिकारी ऑनलाइन हाजिरी लगाएंगे। कहा गया है कि क्षेत्र में अधिक होने के कारण ऑनलाइन हाजिरी लगाना संभव नहीं होगा। जिलाध्यक्ष धर्मेंद सिंह ने कहा कि कभी ग्राम प्रधान तो कभी अधिकारियों के काम रहते हैं। ग्राम विकास अधिकारी और ग्राम पंचायत अधिकारी क्षेत्र में ही रहते हैं। ज्ञापन देने वालों में धर्मेंद्र सिंह, मुकेश सागर, प्रवेश, कुलदीप, कुणाल, सद्दाम हुसैन और जाने आलम रहे।

छूटे बच्चों को टीका लगाने का आज से शुरू होगा अभियान

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● जिले भर में 61,323 बच्चों का आज से होगा टीकाकरण

● टीकाकरण से छूटे बच्चों और गर्भवती महिलाएं होंगी चिन्हित

अमृत विचार : मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. दीपा सिंह ने बताया कि सभी बच्चों को सही आयु पर सभी टीके लगाये जाने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम में विशेषकर गर्भवती महिलाओं व 0-5 वर्ष के बच्चों को टीकाकरण के लिए चिन्हित किया जाएगा। इसके अलावा उन बच्चों व गर्भवती महिलाओं को चिन्हित किया जायेगा जो नियमित टीकाकरण से छूटे रह गए हैं।

टीकाकरण प्राथमिकता के आधार पर माइक्रोप्लान के अनुसार नियोजित किये गये सत्रों पर ही किया जाना है। विशेष रुप से पेन्टा-1, ओपीवी-1, एमआर-1 एवं एमआर-2 खुराक छूटे हुए बच्चों को दिए जाने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जायेंगे। आशा द्वारा बच्चों को निर्धारित टीकाकरण दिवस पर टीकाकरण के लिए बच्चे के माता-पिता की आईडी पहचान पत्र एवं मोबाइल नंबर के साथ लाया जाएगा। ताकि यूविन पोर्टल पर आवश्यकतानुसार पंजीकृत करते हुए शत-प्रतिशत टीकाकरण हो सके। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में छूटे हुए बच्चों के टीकाकरण के लिए बीआरटी टीम, महिला आरोग्य समिति नगरीय निकायों एवं अन्य स्थानीय स्वैच्छिक संस्थाओं से सहयोग लिया जाएगा। एईएफआई प्रबंधन के लिए सभी टीकाकरण सत्रों पर एनाफाइलैक्सिस किट की उपलब्धता के साथ ही पेरासिटामोल सीरप की उपलब्धता एवं उसका वितरण किए जाएंगे। टीकाकरण के शत-प्रतिशत आच्छादन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम प्रधानों, राशन डीलरों व नगरीय क्षेत्र में सभासदों, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों व स्वयंसेवी संस्थाओं आदि के सहयोग से टीकाकरण में सहयोग लिया जायेगा। टीका उत्सव में 0-1 वर्ष तक के 45068 बच्चों का एवं 2-5 वर्ष तक के 16255 बच्चों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

यातायात पुलिस ने ऑटो चालकों को किया जागरूक

ऑटो चालक को जागरूक करते ट्रैफिक पुलिसकर्मी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार: पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र के निर्देशन में सोमवार को यातायात पुलिस द्वारा नगर क्षेत्र में विशेष जागरूकता अभियान संचालित किया। अभियान के दौरान ऑटो रिक्शा चालकों को नियत क्षमता से अधिक सवारी न बैठाने, यातायात नियमों का कड़ाई से पालन करने एवं सुरक्षित व जिम्मेदार ड्राइविंग के संबंध में विस्तार से जागरूक किया गया। यातायात पुलिस द्वारा ऑटो रिक्शा चालकों को बताया कि अधिक सवारी बैठाने से न केवल सड़क दुर्घटना का जोखिम बढ़ता है, बल्कि यह नियमों का उल्लंघन भी है। चालकों को निर्धारित रूट पर संचालन, स्टॉपेज के सही स्थान का उपयोग, गति सीमा का पालन तथा वाहन में फिट सभी अनिवार्य दस्तावेज रखने के लिए प्रेरित किया। अभियान के दौरान कई स्थानों पर संगोष्ठी के रूप में संवाद स्थापित कर चालकों को सड़क सुरक्षा की जानकारी दी। भविष्य में नियमों का पालन करने का संकल्प भी दिलाया गया।

सीओ ने टांडा व शाहबाद में किया बैंकों का निरीक्षण

रामपुर, अमृत विचार : पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी टांडा कीर्ति निधि आनंद ने क्षेत्र में आने वाले विभिन्न बैंक, एटीएम तथा बैंक, एटीएम के आस-पास संदिग्ध व्यक्ति वाहनों की चेकिंग की। इस दौरान बैंक,एटीएम में लगे सीसीटीवी कैमरे, सायरन तथा अन्य सुरक्षा उपकरणों को चेक किया। बैंक सुरक्षा, ड्यूटी में लगे सुरक्षाकर्मियों को आने-जाने वाले व्यक्तियों की उचित निगरानी रखने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को देने के संबंध में दिशा-निर्देश दिए। सीओ शाहबाद हर्षिता सिंह द्वारा पटवाई क्षेत्र में स्थित विभिन्न बैंक, एटीएम के आस-पास संदिग्ध व्यक्ति,वाहनों की चेकिंग की। इस दौरान बैंक, एटीएम में लगे सीसीटीवी कैमरे, सायरन तथा अन्य सुरक्षा उपकरणों को चेक किया। सुरक्षाकर्मियों को आने-जाने वाले व्यक्तियों की उचित निगरानी रखने के निर्देश दिए।

एसआईआर के अधिक दबाव के कारण अपनी जान दे रहे कर्मचारी : राजकुमार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

उप्र राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के पउप्र के प्रभारी का स्वागत करते पदाधिकारी।

● उप्र राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के पश्चिमी उप्र के प्रभारी का किया गया स्वागत

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद लखनऊ के उपाध्यक्ष एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रभारी चौधरी राजकुमार सिंह का रेलवे स्टेशन पर स्वागत हुआ। जिलाध्यक्ष रामबाबू शर्मा ने अपने साथियों के साथ मिलकर उपाध्यक्ष को फूल मालाएं पहनाकर और पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

उपाध्यक्ष ने कहा कि अधिकारी इतना दबाव बना रहे हैं कि कर्मचारी मानसिक रूप से प्रताड़ित होकर आत्महत्या करने को मजबूर हो गए हैं। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रभारी सोमवार को रामपुर पहुंचे। उन्होंने कहा कि सरकार कर्मचारियों का निरंतर शोषण कर रही है और कर्मचारी कार्य के बोझ से दब जाने के कारण अपनी निजी जिंदगी में भी आने को समस्याओं से दिन प्रतिदिन जूझ रहे हैं। निर्वाचन कार्य में बूथ लेवल अधिकारी के रूप में कार्यरत कर्मचारियों को एसआईआर के पत्रों के भरवाने के बहाने अधिकारी इतना दबाव बना रहे हैं। कर्मचारी मानसिक रूप से प्रताड़ित होकर आत्महत्या करने को मजबूर हैं। कर्मचारियों के बुढ़ापे की लाठी पुरानी पेंशन को भी सरकार बहाल नहीं कर रही है। जिसके कारण कर्मचारी बिना पेंशन के ही अपनी जान गंवा रहे हैं। जबकि देश के नेता पेंशनों का लाभ उठा रहे हैं। इस अवसर पर मुराद अली खान, दिलशाद अली पाशा, जगदीश, बरकत अली, अमित कुमार, केवट चौधरी, विश्व बंधु, वेद प्रकाश गंगवार, इंदल सिंह आदि मौजूद रहे।

रिश्वत लेने के आरोप में टेक्नीशियन को हटाया

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष से रोगी ने की थी शिकायत

अमृत विचार : जिला महिला चिकित्सालय में आउटसोर्स कर्मचारी ओटी टेक्नीशियन यूसुफ अली को उप्र राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. बबीता चौहान से शिकायत पर हटा दिया गया है। अस्पताल का निरीक्षण करने के दौरान एक मरीज के तीमारदारों ने ओटी टेक्नीशियन द्वारा रिश्वत मांगे जाने की शिकायत की थी।

मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. दीपा सिंह ने रिश्वत के आरोप में ओटी टेक्नीशियन को हटा दिया है। जिला महिला चिकित्सालय के मुख्य चिकित्साधीक्षक अनवर सादात ने बताया कि महिला आयोग की अध्यक्ष के समक्ष कर्मचारी की शिकायत होने के पश्चचात उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को पत्र लिख दिया था। मरीजों ने उन्हें बताया था कि उन्हें कोई दिक्कत परेशानी वाली बात नहीं है। लेकिन उसी समय एक गर्भवती महिला पहुंची और उसके तीमारदारों से ओटी टेक्नीशियन ने पैसे की बात कही। जब अधिकारियों ने उससे इस बाबत ओटी टेक्नीशियन का जवाब तलब किया तब उसने कहा कि उसने यह बात मजाक में कही थी। जिला महिला चिकित्सालय के मुख्य चिकित्साधीक्षक ने बताया कि पूरी कार्रवाई से उ.प्र. राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष को पत्र के माध्यम से अवगत करा दिया गया है। मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि ओटी टेक्नीशियन को हटा दिया गया है। उसे बिलासपुर भेज दिया गया है, जबकि उसके स्थान पर बिलासपुर में कार्यरत ओटी टेक्नीशियन को रामपुर बुलाया गया है।

अमृत विचार

मुरादाबाद , मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

डीएम और एसपी को दी भागवत गीता

रामपुर,अमृत विचार : अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा की ओर से सोमवार को मोक्षदा एकादशी पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें महासभा के जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह यादव एवं युवा जिलाध्यक्ष गोविन्द सिंह यादव मोनू ने जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी एवं पुलिस अधीक्षक विद्यासागर मिश्र को श्रीमद्भागवत गीता की पुस्तक भेंट की। युवा जिलाध्यक्ष गोविन्द सिंह यादव मोनू ने बताया कि गीता जयंती श्रीमद्भगवद्गीता के अवतरण का पावन दिवस है। यह वह दिन है जिस दिन 5000 वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण ने अर्जुन को वैदिक ज्ञान का सार प्रदान किया था। उन्हें जीवन के परम लक्ष्य का ज्ञान कराया था।

चार खिलाड़ियों का अंडर-14 जोनल क्रिकेट टीम में चयन

रामपुर,अमृत विचार : चार खिलाड़ी मोहम्मद अदनान, मोहम्मद हसन, मामून, सैयद अरकम का यूपीसीए अंडर-14 जोनल टीम में चयन हुआ है। हामिद इंटर कॉलेज क्रिकेट अकादमी के क्रिकेट कोच शाहनवाज राणा ने बताया कि जोनल ट्रायल के बाद यूपी टीम के लिए चयन होगा। उन्होंने चयनित खिलाड़ियों को बधाई दी।

काम पूरा करने वाले 10 बीएलओ सम्मानित

जिलाधिकारी आवास पर परिवार सहित पहुंचे बीएलओ

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

डीएम, एसपी व एडीएम के साथ मौजूद बीएलओ। ● अमृत विचार

अमृत विचार: एसआईआर को लेकर जहां प्रदेश में दबाव को लेकर चर्चाएं गर्म हैं, ऐसे में रामपुर के जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने सराहनीय पहल की है। एसआईआर का कार्य समय से पहले पूर्ण करने पर जिलाधिकारी आवास पर परिवार सहित डीएम ने 10 बीएलओ का सम्मानित किया। बच्चों को चॉकलेट बांटी गई।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत शत-प्रतिशत डिजिटाइजेशन का लक्ष्य समय से पहले पूर्ण करने पर डीएम ने बीएलओ का हौसला बढ़ाया है। सोमवार को जिलाधिकारी आवास पर सम्मान-समारोह एवं पारिवारिक भोज का आयोजन किया। जिसमें सभी उत्कृष्ट बीएलओ को उनके परिजनों सहित विशेष रूप से आमंत्रित किया। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी, पुलिस अधीक्षक विद्या सागर मिश्र व एडीएम वित्त एवं राजस्व संदीप कुमार वर्मा ने बीएलओ एवं उनके परिजनों का स्वागत किया। सभी बीएलओ ने इसे अपने जीवन का एक विशेष और यादगार पल बताते हुए कहा कि यह सम्मान उनके लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा। वहीं बीएलओ अपने छोटे बच्चों के साथ उपस्थित रहे। बच्चों को जिलाधिकारी ने चॉकलेट एवं खिलौने भेंट किए। कार्यक्रम में विधानसभा क्षेत्र 34 स्वार के बूथ 138 जूनियर हाई स्कूल शिवनगर के राजेंद्र कुमार सागर, बूथ 135 प्राथमिक विद्यालय धनौरा की विमला, बूथ 6 की प्राथमिक विद्यालय करीमपुर के हितेन्द्र सिंह पाल रहे। विधानसभा क्षेत्र 35 चमरौआ के बूथ 52 प्राथमिक विद्यालय पदपुरी के परवेज खान, बूथ 9 संविलियन विद्यालय मझरा अमीर खां की कहकशा रही। विधानसभा क्षेत्र 36 बिलासपुर की बूथ 200 पिपलिया मिश्र की सुनीता जैन, बूथ 191 प्राथमिक विद्यालय मालनखेड़ा की भगवती देवी रही। विधानसभा क्षेत्र 37 शहर की बूथ 366 उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपुर पट्टी कुंदन के धर्मपाल, बूथ 377 प्राथमिक विद्यालय मधुपुरी के मोतीराम, विधानसभा क्षेत्र 38 मिलक के बूथ 101 प्राथमिक विद्यालय नया भवन जयतौली राजवीर सिंह बीएलओ मौजूद रहे।

एसआईआर का 85 प्रतिशत कार्य पूर्ण: डीएम

जिलाधिकारी नें प्रतिभोज के दौरान बीएलओ के समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की सराहना की। उन्होंने कहा कि आपकी कार्यशैली, निष्ठा और ईमानदारी जनपद के लिए प्रेरणादायक है। आशा है कि भविष्य में भी आप इसी गुणवत्ता और समर्पण के साथ जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे। यदि हम उत्कृष्ट कार्य करने वाले अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को समय-समय पर सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन करते हैं, तो यह न केवल उनके सेवा-भाव और समर्पण का सम्मान है। बल्कि प्रेरणा, ऊर्जा और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का माध्यम भी है, विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान का लगभग 85 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। समय-सीमा के भीतर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाएगा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले ये बीएलओ अन्य कर्मियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेंगे, जिससे अभियान की गति एवं गुणवत्ता में और अधिक वृद्धि होगी। कार्यक्रम के अंत में सभी बीएलओ ने सम्मान, प्रोत्साहन और आत्मीय आतिथ्य के लिए जिलाधिकारी के प्रति आभार व्यक्त किया। आश्वासन दिया कि वे भविष्य में भी पूर्ण निष्ठा और उत्कृष्टता के साथ दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। डीएम ने सभी बीएलओ को सही कार्य करने को कहा है।

तीन बीएलओ ने एसआईआर का काम किया पूर्ण

टांडा,अमृत विचार : नगर में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। प्रशासनिक प्रयासों और बीएलओ की सतत मेहनत के परिणामस्वरूप अब तक नगर टांडा का लगभग 89 प्रतिशत कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो चुका है। इस बीच तीन बीएलओ ने अपने-अपने वार्डों में 100 प्रतिशत लक्ष्य पूरा कर उत्कृष्टता का परिचय दिया है। भाग संख्या 250 की बीएलओ राकिबा खातून, भाग संख्या 255 की बीएलओ पूनम गुप्ता तथा भाग संख्या 259 की बीएलओ रेखा ने घर-घर जाकर मतदाताओं का विवरण एकत्रित कर निर्धारित समय से पहले फीडिंग कार्य पूर्ण कर लिया। पर्यवेक्षक ने बताया कार्य पूरा करने वाली सभी महिला बीएलओ हैं, इन बीएलओ की लगन, जिम्मेदारी और कार्य के प्रति समर्पण की प्रशंसा करते हुए उन्हें अन्य कर्मियों के लिए प्रेरणास्रोत बताया है।

डीसीबी ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए शुरू की बचत योजना

डीसीबी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बोलते बैंक के चेयरमैन मोहन लाल सैनी।

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : जिला सहकारी बैंक सभागार में सोमवार को कार्यक्रम हुआ। इसमें जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन मोहन लाल सैनी ने कहा कि बैंक ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए बचत योजना शुरू की है।

उन्होंने बताया कि यह योजना 1 दिसंबर से 31 जनवरी तक चलेगी। इस योजना में 18 माह की अवधि के लिए वरिष्ठ नागरिकों को 7.20 प्रतिशत वार्षिक दर पर सावधि जमा और एफडी पर मासिक आय जमा की सुविधा दी जाएगी। चेयरमैन ने कहा कि यह योजना सहकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा मनाए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के मद्देनजर की जा रही है। वरिष्ठ नागरिक बचत योजना के तहत जिले के वरिष्ठ नागरिकों को सहकारिता क्षेत्र से जोड़ने तथा बैंक के निक्षेप में वृद्धि करने के लिए संचालित की जा रही है। योजना को सफल बनाने के लिए सभी शाखा प्रबंधकों से अपेक्षा की है वह अपनी शाखा क्षेत्र के सेवानिवृत्त शासकीय, अर्द्धशासकीय कर्मचारियों, अधिकारियों व अन्य ग्राहकों से व्यक्तिगत संपर्क कर योजना की जानकारी लोगों तक पहुंचाएं। बिलासपुर बैंक के डायरेक्टर रविंद्र और निपनिया शाखा के डायरेक्टर नंद किशोर और सिविल लाइन के डायरेक्टर नरदेव सिंह ने कार्यक्रम में एफडी कराई। बैंक के सचिव, मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्रीप्रकाश त्रिपाठी ने सभी का आभार जताया। इस मौके पर रोहिताश, नंद किशोर, यतेंद्र, दीप गोयल, नीलम, डॉ. गणेश गुप्ता, ज्ञानदेव गंगवार आदि मौजूद रहे।

गायन प्रतियोगिता में आरूषी रहीं प्रथम

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

संस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे। ● अमृत विचार

अमृत विचार : नारायणपुर लदौरा स्थित साईं सीनियर सेकेंडरी स्कूल में रविवार को साइ सियन शोडाउन स्किल कंपटीशन का आयोजन हुआ। लगभग 300 प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट नृत्य कौशल और गायन का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यातिथि डीआईओएस अंजलि अग्रवाल और विद्यालय के निदेशक दिलीप सक्सेना, नीरा सक्सेना, प्रबंधक अर्जित सक्सेना ने मां सरस्वती का पूजन और दीप प्रज्वलन करके किया।

गायन प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में आरूषी कुमारी ने प्रथम, माधवी सक्सेना ने द्वितीय तथा सक्षम सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सीनियर वर्ग में मोहम्मद हुसैन ने प्रथम, तारकी बब्बर ने द्वितीय तथा हिकमा परवेज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गायन एवं नृत्य प्रतियोगिता में जूनियर

● 300 प्रतिभागियों ने नृत्य कौशल और गायन का किया प्रदर्शन

वर्ग के लिए 4 से 10 वर्ष तक तथा सीनियर वर्ग में 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के बालक बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। मुरादाबाद , बरेली व रामपुर के जजों द्वारा प्रतिभागियों की प्रतिभा को आंका। जिसमें बरेली के दीपक राना, रामपुर के जोगिंदर सिंह व लकी अली ने बाल गायकों के प्रतिभा की जांच की। नृत्य प्रतियोगिता के लिए मुरादाबाद के नृत्यकार मानस धवन, रामपुर की अलका तथा अभिजीत सैनी जज की भूमिका में रहे। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के लिए नगद पुरस्कार राशि, ट्रॉफी, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। डीआईओएस अंजलि अग्रवाल ने कहा मोबाइल फोन से दूर रहने का संदेश दिया। विद्यालय के डायरेक्टर दिलीप सक्सेना ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी। नीरा सक्सेना, प्रबंधक अर्जित सक्सेना, निहारिका सक्सेना, प्रधानाचार्य शिवांश सक्सेना रहीं।

राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में फायजा आईं द्वितीय

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

● उर्दू दिवस पर आयोजित की गई थी राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता महाराष्ट्र की कुलसुम रहीं प्रथम

अमृत विचार: उर्दू दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में मिलक के नानकार स्थित कंपोजिट विद्यालय की छात्रा फायजा नूर ने द्वितीय स्थान हासिल किया। उर्दू भाषा की समृद्ध विरासत, शाइस्ता तहजीब और इल्मी रिवायत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पत्रिका हिलाल द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर उर्दू निबंध प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता दो वर्गों में जूनियर कक्षा 5-7 एवं सीनियर कक्षा 8-10 में आयोजित हुई। जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से सैकड़ों विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। 30 नवंबर को घोषित परिणामों में जूनियर वर्ग में प्रथम स्थान पर औरंगाबाद (महाराष्ट्र) की छात्रा कुलसुम को पहला स्थान मिला।

फायजा नूर।

द्वितीय स्थान पर मिलक के कंपोजिट विद्यालय नानकर की फायजा नूर रही। तृतीय स्थान पर मुजफ्फरपुर (बिहार) की नबीला सैफी रही। सांत्वना पुरस्कार मोहम्मद मुजाहिद अली को मिला। उर्दू शिक्षिका रूमाना हसीब के उत्कृष्ट मार्गदर्शन तथा विद्यालय के समर्पित स्टाफ के सहयोग ने इस उपलब्धि को और भी गौरवपूर्ण बनाया है। कार्यक्रम का उद्देश्य उर्दू भाषा अपनी नफासत, तहजीब और इल्मी विरासत के लिए दुनिया भर में मशहूर है। इस मौके पर फायजा नूर, शिक्षिका रूमाना हसीब, प्रधानाध्यापक, विद्यालय स्टाफ मौजूद रहा।

जिला अस्पताल खुद बीमार मरीजों को ढो रहे तीमारदार

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

व्हील चेयर पर बैठी मरीज को उसके परिजन लेकर पहुंचे हैं। ● अमृत विचार

● अव्यवस्थाओं से परेशान रोगियों के परिजन, प्रशासनिक अधिकारी भी नहीं दे रहे ध्यान

अमृत विचार : जिला अस्पताल में मरीजों का हाल बेहाल है। मरीजों के तीमारदार मरीजों को व्हील चेयर पर खुद लेकर चिकित्सक कक्ष के सामने कतारों में लग रहे हैं। अस्पताल के वार्ड ब्वॉय स्ट्रेचर और व्हील चेयर पर मरीजों को हाथ तक नहीं लगा रहे हैं।

वहीं जिला अस्पताल में गंभीर और वृद्ध रोगियों के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं है। आरोप है कि चिकित्सको का मरीजों के प्रति व्यवहार भी खराब है। इसके अलावा दवा काउंटर पर भी मरीजों को चिकित्सक द्वारा लिखी गईं दवा नहीं दी जाती है। मुख्य चिकित्साधिकारी के गेट पर सिटी स्कैन लिखवाने के लिए मरीजों के तीमारदारों की लाइन लगी रहती है। सोमवार को शहर के मोहल्ला चाह खजान निवासी 50 वर्षीय शहजादी बेगम व्हील चेयर पर बैठकर चिकित्सक कक्ष के सामने कतार में खड़ी हो गईं। उनको व्हील चेयर पर बैठाकर उनकी भतीजी शाइस्ता लेकर पहुंची। बताया कि वार्ड ब्वॉय कहीं दिखाई नहीं दिया इसलिए मजबूरन व्हील चेयर पर स्वयं बैठाकर लाना पड़ा। तहसील मिलक के एक गांव निवासी नन्हीं उच्च रक्तचाप की मरीज को उनका पुत्र व्हील चेयर पर बैठाकर चिकित्सक कक्ष के सामने लाइन में खड़े होकर अपनी बारी आने का इंतजार करने लगा।

वैमनस्यता व अपमानित करने के मामले में आजम खान बरी

विधि संवाददाता,लखनऊ

● एमपी-एमएलए कोर्ट के विशेष एसीजेएम ने दिया फैसला

अमृत विचार: सरकारी लेटर पैड एवं मोहर का गलत इस्तेमाल कर वैमनस्यता फैलाने और अपमानित करने के मामले में पूर्व मंत्री आज़म ख़ान को एमपी एमएलए कोर्ट के विशेष एसीजेएम आलोक वर्मा ने बरी कर दिया।

विशेष अदालत ने अपने विस्तृत निर्णय में कहा कि घटना 2014 की बताई जाती है। परंतु वादी अल्लामा अमीर नकवी द्वारा 2019 में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। उन्होंने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 468 की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह मामला काल बाधित भी हो चुका है। कोर्ट ने बचाव पक्ष के इस कथन को भी स्वीकार किया कि यह रिपोर्ट मौलाना कलवे जव्वाद की ओर से वादी अल्लामा अमीर नकवी द्वारा लिखाई गई है परंतु अल्लामा अमीर नकवी न तो पीड़ित पक्ष है और न ही उन्हें रिपोर्ट दर्ज कराने का कोई विधिक अधिकार था। कोर्ट में वादी अल्लामा अमीर नकवी ने स्वीकार किया कि उसकी इस प्रकरण में कोई मानहानि नहीं हुई है। कोर्ट ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 199 की व्याख्या करते हुए कहा है की प्रावधानों के अनुसार कोई पीड़ित व्यक्ति ही परिवाद दाखिल कर सकता है अन्यथा ऐसा परिवाद तभी दूसरा व्यक्ति दाखिल करेगा जब संबंधित व्यक्ति पागल हो अथवा उसकी आयु 18 वर्ष से कम हो। कोर्ट ने अपने निर्णय में यह भी कहा है कि कथित प्रेस रिलीज को वादी द्वारा विवेचक को दिया जाना कहा गया है। परंतु वह प्रेस विज्ञप्ति न तो पत्रावली पर है और न ही उसका केस डायरी में कोई हवाला है।

दिव्यांग खेलकूद प्रतियोगिता में लालपुर कलां का रहा दबदबा

कार्यालय संवाददाता,रामपुर

विजयी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देते अतिथि। ● अमृत विचार

● उच्च प्राथमिक विद्यालय खौद में आयोजित हुई प्रतियोगिता

अमृत विचार : बेसिक शिक्षा विभाग की ओर दिव्यांग बच्चों की ब्लॉक स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन सोमवार को उच्च प्राथमिक विद्यालय खौद में हुआ। प्रतियोगिता में लालपुर कलां के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन रहा।

प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्या की देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। मुख्यातिथि बीईओ सैदनगर सुनील कुमार सक्सेना ने फीता काटकर तथा हरी झंडी दिखाकर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। बालिक वर्ग में 50 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में जिक्रा प्रथम, अलीशा द्वितीय, अल्फा तृतीय रहीं। बालक वर्ग में प्राथमिक विद्यालय लालपुर के अरमान प्रथम, अरशद द्वितीय, फैज तृतीय स्थान पर रहे। 100 मीटर दौड़ में बालिका वर्ग में प्रिया प्रथम, अंजली द्वितीय और निशा तृतीय रहीं। प्राथमिक स्तर पर जिक्रा प्रथम, अलीशा द्वितीय, अल्फा तृतीय रहीं। नींबू चम्मच दौड़ में प्राथमिक स्तर पर जिक्रा प्रथम, अलीशा द्वितीय, अंशिका तृतीय रही। इस अवसर पर सुनील कुमार सक्सेना, अनीशा लतीफ, प्राथमिक संघ के अध्यक्ष रहमत अली, ब्लॉक व्यायाम शिक्षक वीर सिंह, भारत सिंह समेकित शिक्षक कमलेश कुमार, नरेंद्र सिंह, लक्ष्मण प्रताप, नरेंद्र सिंह, शबनम आरा, रानी, सुभाष बाबू, तरुण अभिषेक शर्मा, जाहिदा बी, फहीमा बेगम समेत कई लोग मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

भाषण प्रतियोगिता में नूर फातिमा प्रथम

रामपुर, अमृत विचार : राजकीय महाविद्यालय रजा नगर में मतदाता साक्षरता अभियान के तहत भाषण प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में नूर फातिमा प्रथम, अभिमन्यु द्वितीय और यशिका शर्मा एवं अजा खां संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगियों ने ओजस्वी भाषण में नागरिक के मताधिकार, मत की शक्ति, अनिवार्य रूप से वोट करने, अपने मत के सही उपयोग करने और निस्वार्थ वोटिंग करने का छात्र-छात्राओं ने संदेश दिया। प्राचार्य प्रो. आरएस गिरि ने कहा कि छात्र-छात्राओं को इस प्रकार के कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते रहना चाहिए। निर्णायकों में प्रो. कैलाश चंद्र, डॉ. बाल मुकुंद वर्मा और डॉ. मनीषा रानी रहे। इस मौके पर डॉ. अनुपम मित्र एवं डॉ. पवन कुमार ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. कपिल देव ने किया।

आरूष का यूपी अंडर-16 क्रिकेट टीम में चयन, दी बधाई

रामपुर,अमृत विचार : दयावती मोदी एकेडमी के छात्र आरूष गुप्ता का चयन उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन की अंडर-16 टीम में हो गया है। इस उपलब्धि के लिए विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है। प्रधानाचार्या डॉ. सुमन तोमर ने कहा कि आयुष में शुरुआत से असाधारण खेल प्रतिभा रही है। वह आगे और उपलब्धियां अर्जित कर देश का गौरव बढ़ाएगा। कोच नितिन कुमार ने बताया कि आरूष ने 6 साल की उम्र से क्रिकेट में अभ्यास करना शुरू कर दिया था। वह बेहद मेहनती है और दृढ़निश्चय के साथ खेलता है। रामपुर क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहम्मद इरफान हुसैन, सचिव बसंत सिंह बघेल और संयोजक आलम खान ने आरूष को बधाई दी। वहीं पिता आशीष गुप्ता व मां नेहा गुप्ता ने बेटे की उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

देश का भविष्य हैं बच्चे, तालीम दिलाएं

रामपुर, अमृत विचार : डिग्री कॉलेज रोड स्थित सेशन एशियन पब्लिक स्कूल में सोमवार एरिया काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में जावेद निजामी ने कहा कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा तालीम हासिल करें। आज का बच्चा कल का नागरिक है कहा कि गुजरा हुआ वक्त वापिस कभी नहीं आएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ कासिम ने तिलावते कुरआन मजीद से की। इसके बाद उमरा इमरान ने कार्यक्रम में आए लोगों का स्वागत किया। स्कूल के प्रधानाचार्य सैय्यद नासिर मियां ने कहा कि यह कार्यक्रम केवल किताबी पढ़ाई तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों को असल जिंदगी की हकीकत से रूबरू कराने और सही दिशा दिखाने का माध्यम है। उन्होंने बच्चों से कहा कि सपनों को सच करने के लिए जमीनी मेहनत शुरू करें। इसके बाद शहजीन ने सोसाइटी के पिछले ग्यारह वर्षों के सफर से रूबरू कराया। संचालन मोहम्मद रजा ने किया। इस मौके पर सैय्यद नासिर मियां, अली रजा, रिजवान सिद्दीकी, इमरान जफर, फिरासत अली, मोहम्मद रिजवान, डॉक्टर मोहम्मद अरशद, तैय्यब अली, अब्दुल कादिर, अब्बान हबीब, जावेद, कासिम, समद, मुदस्सिर, अरसलान, कैफ, शाहजेब, जुल्फिकार रजा, बिलाल, अबरार, एहतिशाम आदि मौजूद रहे।

इंसान ही इंसान का दुश्मन बन बैठा: मौलाना तस्दीक हुसैन

रामपुर, अमृत विचार : इमामबाड़ा किला में हुई मजलिस को दिल्ली से आए मौलाना तसदीक हुसैन ने खिताब किया। उन्होंने कहा कि इंसान ही इंसान का दुश्मन, जबकि शेर जैसे ताकतवर जानवर एक-दूसरे को कभी नहीं मारते। उन्होंने कहा कि अल्लाह अपने नेक बंदों का इम्तिहान लेता है। कुरआन मजीद को ध्यान से पढ़ें और जिस घर में कुरआन मजीद की तिलावत होती है वहां अल्लाह की रहमत बरसती हैं। इमामबाड़े में मोहम्मद मुज्तबा आब्दी के चेहल्लुम की मजलिस में मौलाना ने कहा कि इंसान को पहचानना सबसे मुश्किल काम है। इससे पहले शहजादा गुलरेज, अब्बास रजा, काजिम रजा, यूसुफ रजा ने कलाम पेश किए। मजलिस में मिसाल मेहंदी, अजहर आब्दी, रजा आब्दी, साजिद अली एडवोकेट, हसन मेहंदी, अब्बास मेहंदी, सैयद मोहम्मद अली जैदी, पूर्व सांसद घनश्याम सिंह लोधी, ओम प्रकाश लोधी, दिनेश रस्तोगी, निक्कू पंडित, साहिर खां, नोमान खां, सुहेल पठान आदि मौजूद रहे।

विश्व एड्स दिवस पर निकाली रैली

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

एड्स दिवस पर जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखातीं मुख्य चिकित्साधीक्षक डॉ. दीपा सिंह।

● सीएमओ ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना

अमृत विचार : विश्व एड्स दिवस पर गांधी समाधि से स्कूली बच्चों ने सोमवार को जागरूकता रैली निकाली। इससे पहले हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। जागरूकता रैली को मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. दीपा सिंह ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना कराया।

मुख्य चिकित्साधिकारी ने कहा कि जिले में 950 एड्स रोगी हैं जिनका उपचार कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एड्स के इलाज से लोग स्वस्थ हो रहे हैं। गांधी समाधि पर स्काउट गाइड और विद्यार्थी एकत्र हुए। इसके बाद जागरूकता रैली को मुख्य चिकित्साधिकारी ने जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में स्काउट गाइड ने नारे लगाकर जागरूकता संदेश दिया। रैली गांधी समाधि से शुरू होकर स्टार चौराहे पर समाप्त हुई। मुख्य चिकित्साधिकारी ने कहा कि इस बीमारी का बचाव ही इलाज है। जिले में एआरटी सेंटर बना है तब से 950 मरीज हैं। कहा कि इस साल 11 मरीज खोजे गए हैं। क्योंकि टीबी के साथ एचआईवी की संभावना रहती है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव कुलदीप सिंह, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. दीपा सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. बीसी सक्सेना, जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. सत्यप्रकाश, तथा जिले में एचआईवी-एड्स पर कार्यरत संस्था के निदेशक रईस अहमद ने हस्ताक्षर कर एड्स के प्रति लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर परियोजना प्रबन्धक अंकित गुलाटी, फैजान कुरैशी, काउंसलर बीना रस्तोगी आदि रहे।

श्रीमद्भागवत गीता जयंती पर रजा लाइब्रेरी में लगी प्रदर्शनी

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

रजा लाइब्रेरी में प्रदर्शनी का अवलोकन करते निदेशक डॉ. पुष्कर मिश्र एवं अन्य।

अमृत विचार : रजा लाइब्रेरी में सोमवार को गीता जयंती पर श्रीमद्भागवत गीता की विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन लाइब्रेरी के निदेशक डॉ. पुष्कर मिश्र ने किया। उन्होंने कहा कि ऐसी मान्यता है कि आज ही के दिन श्रीकृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद्भागवत गीता का उपदेश दिया था।

गीता विश्व के उन चुनिंदा ग्रंथों में से एक है, जिन पर अनेक भाष्य रचे गए हैं। प्रदर्शनी 1 से 15 दिसम्बर तक आम दर्शकों के लिए प्रदर्शित रहेगी। लाइब्रेरी के हाल में लगी प्रदर्शनी में श्रीमद्भागवत गीता की दुर्लभ, प्राचीन और कलात्मक चित्रों के साथ-साथ भारतीय ग्रंथ-परंपरा को दर्शाने वाली महत्वपूर्ण सामग्रियां प्रदर्शित की गई हैं। डॉ. पुष्कर मिश्र ने बताया कि प्रस्थान-त्रयी का अर्थ है वह तीन आधारभूत ग्रंथ, जहां से मनीषा और चिंतन आरम्भ होते हैं। इन तीनों में पहला प्रस्थान उपनिषद हैं (जिनके अनेक प्रकार हैं), दूसरा प्रस्थान ब्रह्मसूत्र, और तीसरा प्रस्थान श्रीमद्भागवत गीता है। पिछले लगभग 150 वर्षों को देखें तो लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गीता-रहस्य की रचना की।

न्यूज ब्रीफ

पहाड़ों पर बर्फबारी के चलते गिरा तापमान

गजरौला, अमृत विचार : पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी के बाद पिछले दो दिनों से रात में ठंडी हवाओं से तापमान में गिरावट दर्ज हुई है। सुबह शाम ठिठुरन महसूस की जा रही है। जबकि दिन में हल्की धूप राहत दे रही है। पिछले 24 घंटों में न्यूनतम तापमान 9 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। सोमवार सुबह से ठंडी हवाएं चल रही है। मौसम में ठंडक महसूस की जा रही है। सर्दी के चलते धूप सुहानी लगने लगी है। अचानक बढ़ी ठंड से लोग अपने घरों से गर्म कपड़े पहन कर ही बाहर निकल रहे हैं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में उत्तर भारत से आने वाली ठंडी हवाओं के असर से तापमान और गिर सकता है। सोमवार सुबह न्यूनतम तापमान 9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अधिकतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस रहा।

एंटी रोमियो टीम ने किए जागरुकता कार्यक्रम

अमरोहा, अमृत विचार : थाना डिडौली की एंटी रोमियो टीम द्वारा सोमवार को केके इंटर कॉलेज में बालिकाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं को विभिन्न हेल्पलाइन नंबर, महिला सुरक्षा उपाय तथा सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। टीम ने बालिकाओं को किसी भी आपात स्थिति में तुरंत सहायता प्राप्त करने के लिए संबंधित हेल्पलाइन नंबरों का उपयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के बीच सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें जिया ने प्रथम, विधि ने द्वितीय, उम्मे हबीबा ने तृतीयन, सोनी ने चतुर्थ न, रुश्दा ने पंचम स्थान हासिल किया। हेड कांस्टेबल अरुणिमा वर्मा, सचिन शर्मा, कॉन्स्टेबल पंकज और सोनपाल मौजूद रहे।

ट्रेन की चपेट में आकर युवक गंभीर घायल

मंडी धनौरा, अमृत विचार : थाना क्षेत्र में सोमवार को रेलवे लाइन पर एक युवक ट्रेन की चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना में जनपद बिजनौर के किरतपुर कस्बे के ग्राम बेरहमपुर निवासी विनोद कुमार पुत्र रतन सिंह बुरी तरह जख्मी हो गया। परिजन घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मंडी धनौरा ले गए। चिकित्सकों ने उसकी गंभीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया। परिजनों का कहना है कि घटना कैसे हुई इसका स्पष्ट पता नहीं चल पाया है, लेकिन हादसा अचानक हुआ जिससे विनोद गंभीर रूप से घायल हो गया।

हर पात्र मतदाता का नाम सूची में शामिल हो

एसआईआर को लेकर सपा की समीक्षा बैठक में बोले विधायक कमाल अख्तर, फार्म भरने की अपील की

संवाददाता, हसनपुर

अमृत विचार: मतदाता विशेष गहन पुनर्निरीक्षण को लेकर समाजवादी पार्टी की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में स्थानीय पदाधिकारियों, ब्लॉक टीमों तथा कार्यकर्ताओं नेभाग लिया। बैठक में फॉर्म भरे जाने की स्थिति, छूटे हुए नामों का सत्यापन, महिला एवं नये मतदाताओं के पंजीकरण और प्रशासन कार्यप्रणाली पर चर्चा की गई।

कांठ विधायक कमाल अख़्तर ने कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण लोकतंत्र की बुनियादी प्रक्रिया है और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हर पात्र मतदाता का नाम सही तरीके से सूची में सम्मिलित हो। उन्होंने कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से अपील की कि वे प्रत्येक घर तक पहुंचकर फॉर्म भरवाने में लोगों की मदद करें। कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही अस्वीकार्य है। उन्होंने यह भी कहा कि कई स्थानों पर बीएलओ पर अनावश्यक दबाव की शिकायतें मिली हैं, जिन्हें गंभीरता से लिया जाएगा।

समीक्षा बैठक को संबोधित करते कमाल अख्तर। • अमृत विचार

पूर्व राज्य मंत्री मौलाना जावेद अब्दी ने कहा कि एसआईआर प्रक्रिया आने वाले समय की राजनीतिक और प्रशासनिक पारदर्शिता का आधार है। मतदाता सूची में किसी भी प्रकार की लापरवाही न सिर्फ लोकतंत्र को कमजोर करती है, बल्कि जनता के विश्वास को भी आहत करती है।

अध्यक्षता जिला अध्यक्ष मस्तराम यादव ने की तथा संचालन जिला महासचिव चंद्रपाल सैनी ने किया। पूर्व विधायक अशफाक खां, प्रीतम सिंह, कैसर परवेज़, यशवीर नागर, हरीश कश्यप, जितेन्द्र विंदुडी, दीपक प्रधान, बब्बी चौधरी, बदर क़ुरैशी, यूसुफ कुरैशी, आरिफ़ अख़्तर, अंशु त्यागी, संजीव त्यागी, संदीप गुर्जर, फैसल अल्वी, वसीम मालिक, विक्की अब्बास, खानचंद खडगवंशी, अनुज त्यागी, ज्ञान प्रकाश राणा, राजपाल चौहान, साजिद खा, मिंटू यादव, विजेंद्र प्रजापति, चंद्रपाल कसाना, अरुण यादव आदि मौजूद रहे।

एसआईआर को लेकर जागरुकता संगोष्ठी

अमरोहा, अमृत विचार : पूर्व मंत्री व सदर विधायक महबूब अली ने जोया के मोहल्ला इक़बाल नगर में सोमवार को एसआईआर को लेकर जागरुकता गोष्ठी की। गोष्ठी में पूर्व मंत्री ने एसआईआर प्रक्रिया के महत्व पर विस्तार से जानकारी देते हुए लोगों से अपील की कि वे सभी निर्धारित प्रपत्रों को सही ढंग से भरकर संबंधित बीएलओ के पास समय पर जमा करें। उन्होंने कहा कि जागरूकता और सहभागिता से ही निर्वाचन प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी एवं सशक्त बनाया जा सकता है। कहा कि समय से पहले सभी लोग अपने फार्म जमा करा दें। यदि किसी को दिक्कत है तो वह उनके आवास पर जाकर मिलकर समस्या का समाधान करा सकता है। पूर्व एमएलसी परवेज अली, पूर्व चेयरमैन जाहिद अली, सपा नगर अध्यक्ष जाकिर हुसैन, सपा यूथ ब्रिगेड के प्रदेश सचिव साजिद अली आदि लोग मौजूद रहे।

गोष्ठी में बोलते विधायक महबूब अली। • अमृत विचार

एसआईआर फार्म समय से भरने की एसडीएम की अपील

एसआईआर फॉर्म समय से भरने की अपील करतीं एसडीएम। • अमृत विचार

संवाददाता मंडी धनौरा

अमृत विचार: धनौरा में एसआईआर अभियान को लेकर सोमवार को बीएलओ और विभिन्न राजनीतिक दलों के बूथ लेवल एजेंटों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में एसआईआर प्रपत्र भरने की प्रक्रिया और मतदाताओं को जागरूक करने पर चर्चा की गई। अधिकारियों ने सभी बीएलओ से कहा कि वे लोगों को समय से फॉर्म भरकर जमा करने के लिए प्रेरित करें। ताकि मताधिकार सुरक्षित रहे और अंतिम तिथि से पहले ही कार्य पूरा हो सके।

एसडीएम विभा श्रीवास्तव ने कहा कि एसआईआर अभियान मतदाता सूची को सही और अद्यतन रखने के लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि अंतिम समय का इंतजार न करें और लोग जल्द से जल्द अपने फॉर्म भरकर बीएलओ को सौंप दें। ताकि किसी का नाम मतदाता सूची में छूट न जाए। उन्होंने बीएलओ से मिलकर अभियान को सफल बनाने की अपील की। बैठक में तहसीलदार मूसाराम थारू, सभी ईआरओ, आर.के. निर्वाचन, राजीव सिंह (पेशकार एसडीएम धनौरा) और बीआरसी प्रतिनिधि मौजूद रहे। अधिकारियों ने बीएलओ को अभियान को तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए।

विद्युत विभाग पर 25 हजार का जुर्माना

- उपभोक्ता को जारी गलत बिल निरस्त कर एक माह में जुर्माना अदा करने का आदेश दिया

कार्यालय संवाददाता अमरोहा

अमृत विचार: जिला उपभोक्ता आयोग ने 30 हजार रुपए के बिल को निरस्त करते हुए बिजली विभाग पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया।

फरवरी में मोहल्ला कोट निवासी शरद कुमार शर्मा के घर पर विद्युत विभाग की टीम द्वारा चेकिंग करके पुराना मीटर बदलकर घर के बाहर लगाया गया था। विभाग द्वारा पुराने मीटर में गलत रीडिंग दर्शाकर एरियर के 30 हजार रुपए बिल में जोड़कर जारी कर दिया गया। शरद कुमार का कहना है कि उनके द्वारा कभी भी मीटर में रीडिंग स्टोर नहीं की गई। उनके अधिवक्ता बेटे मनु शर्मा ने जिला उपभोक्ता आयोग में चुनौती दी। दोनों पक्षों द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्ष्यों एवं प्रपत्रों का परीक्षण कर जिला उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष रमाशंकर सिंह एवं सदस्य अंजू रानी दीक्षित ने विद्युत विभाग के जवाब से असंतुष्ट होकर कहा कि उपभोक्ता द्वारा मीटर में किछेड़छाड़ नहीं की गई बल्कि उपभोक्ता व उनके पड़ोसी के बीच विवाद के दबाव में विद्युत विभाग ने मनगढ़ंत कार्यवाही की है। विद्युत विभाग द्वारा जारी किए गए गलत बिल धनराशि 30,369.84 रूपए को निरस्त कर दिया है। संबंधित उपभोक्ता द्वारा जो भी धनराशि पूर्व में जमा की गई है उसे भविष्य के देयकों में समायोजित कर विद्युत विभाग द्वारा उपभोक्ता को मानसिक व आर्थिक क्षति के 15 हजार रुपए और परिवाद व्यय के रूप में 10 हजार रुपए अदा करने का आदेश दिया है।

जमीन के विवाद को लेकर मारपीट में कई घायल

हसनपुर, अमृत विचार: रहरा थाना क्षेत्र के गांव खैलिया पट्टी में खेत की जमीन को लेकर हुए विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। दो व्यक्तियों ने एक महिला पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। मामले में दो नामजद आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी गई है।

पीड़ित रामलाल पुत्र रनबीर ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनके खेत के पड़ो दो व्यक्ति उनकी भूमि पर जबरन ऊपले थाप रहे थे और कूड़ा डालने का प्रयास कर रहे थे। जब उनकी मां ने विरोध किया, तो दोनों आरोपियों ने गाली-गलौज करते हुए लाठी-डंडों से उन पर हमला कर दिया। चाचा, दादा, भाई बचाने पहुंचे तो आरोपियों ने परिजनों के साथ भी मारपीट की, जिससे कई लोग घायल हो गए। पुलिस ने तत्काल मामला दर्ज कर दोनों नामजद आरोपियों के खिलाफ जांच शुरू कर दी है।

बीज भंडार पर ताला देख भड़के किसान

संवाददाता हसनपुर

अमृत विचार: ब्लॉक में स्थित सरकारी कृषि बीज भंडार की अव्यवस्था से परेशान किसानों ने नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया।

सोमवार को बीज लेने पहुँचे किसानों को जब बीज भंडार पर ताला लटका मिला, तो नाराज किसानों ने एकत्र होकर परिसर में जोरदार प्रदर्शन कर नारेबाजी की। किसान नरेश सिंह ने बताया कि बुवाई का समय चल रहा है, लेकिन कृषि बीज भंडार पर किसानों को कई दिनों से सिर्फ चक्कर लगवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले बीज न मिलने के कारण वे परेशान हो रहे हैं। किसानों का आरोप है कि कर्मचारी उन्हें टाल-मटोल कर भगा रहे हैं, जिससे उन्हें मजबूरन दुकानों से ऊंचे दामों पर बीज खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। किसानों ने कहा कि कृषि सरकारी बीज भंडार किसानों को राहत देने के बजाय परेशानी का सबसे बड़ा सबब बन गया है। 11.30 तक भी कृषि बीज भंडार पर ताला लटका होने के कारण किसानों में रोष व्याप्त है। प्रदर्शन कर रहे किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही कृषि बीज भंडार पर पर्याप्त मात्रा में बीज की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं की गई, तो वे सड़क जाम कर उग्र आंदोलन शुरू करेंगे। किसानों ने जिला कृषि अधिकारी से इस मामले का संज्ञान लेने और बीज भंडार के लापरवाह कर्मचारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की माँग की है। प्रदर्शन करने वालों में किसान मानसिंह, रमेश सिंह, अली वारिस, हरपाल, विनोद, शिवलाल, मनीष, प्रकाश, पूरन सिंह, करन सिंह आदि मौजूद रहे।

कृषि बीज भंडार के बाहर प्रदर्शन करते किसान। • अमृत विचार

- प्रदर्शन कर अव्यवस्थाएं दूर करने की मांग की, कहा- दुकानों से खरीदना पड़ रहा है महंगा बीज

दंपती में विवाद पुलिस ने निपटाया

डिडौली, अमृत विचार: पांच साल से दंपती के बीच चल रहा विवाद पुलिस की मध्यस्थता से सुलझ गया।

डिडौली कोतवाली क्षेत्र के गांव शाहपुर पैगम्बर निवासी पुष्पा देवी की शादी वर्ष 2009 में रोहतास सिंह के साथ हुई थी। जिसके बाद दंपति की तीन बेटियां और एक बेटा है। मामूली कहासुनी और आपसी मतभेदों के चलते दोनों पांच साल से तनाव का जीवन व्यतीत कर रह रहे थे। स्थिति लगातार बिगड़ती देख विवाहिता ने सोमवार को पुलिस से शिकायत की, तहरीर मिलते ही महिला सुरक्षा टीम की सिपाही दीपा चौधरी ने दोनों पक्षों को थाने बुलाकर आमने-सामने बातचीत कराई। करीब डेढ़ घंटे चली वार्तालाप के बाद दोनों पक्ष सहमति पर पहुंच गए। पुलिस की मौजूदगी में दंपती ने भविष्य में किसी भी तरह का विवाद न करने और परिवार को साथ चलाने की शपथ ली। इसके बाद पुलिस का आभार व्यक्त किया।

बाइक सवार युवक की ट्रैक्टर ट्रिपलर की टक्कर से मौत

- ससुराल में शादी समारोह से लौट रहा था युवक

संवाददाता सैदनगली/हसनपुर

अमृत विचार: ससुराल में शादी समारोह से लौट रहे बाइक सवार को ट्रैक्टर ट्रिपलर ने टक्कर मार दी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। युवक की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

यह हादसा संभल मार्ग पर गांव कालाखेड़ा के पस हुआ। थाना सैदनगली के गांव करनपुर सुतारी निवासी राजकुमार उर्फ छोटू पुत्र करन सिंह की ससुराल कोतवाली क्षेत्र के गाव लुहारी खादर की है।

रविवार को उस पत्नी की बुआ की शादी थी। उसकी बारात गांव भैसरोली से लुहारी खादर आई थी। रविवार की देर रात शादी समारोह से राजकुमार बाइक से अपने घर जा रहा था। जैसे ही उसकी बाइक संभल मार्ग पर काला खेड़ा के निकट स्थित पुल के पास एक ट्रैक्टर टिपलर ने बाइक में टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया। ग्रामीणों ने एंबुलेंस से राजकुमार को सीएचसी में भर्ती कराया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक राजकुमार ने अपने पीछे तीन बेटी एवं पत्नी नेहा को रोते हुए छोड़ा है। थाना सैदनगली पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम को भेज दिया।

थाना अध्यक्ष विकास शेरावत ने बताया कि सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत हो गई है, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। कार्यवाही तहरीर के आधार पर की जाएगी।

फैक्ट्री कर्मी से बदमाशों ने बाइक व मोबाइल लूटा

गजरौला, अमृत विचार: बाइक सवार फैक्ट्री कर्मी से नकाबपोश तीन बदमाशों ने तमंचे के बल पर मारपीट कर बाइक व मोबाइल फोन लूट लियाए। पीड़ित ने घटना की तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है।

क्षेत्र के भारापुर गांव निवासी सूरज हाईवे के किनारे स्थित एक फैक्ट्री में काम करता है। वह सोमवार की रात बाइक से रात्रि ड्यूटी के लिए फैक्ट्री जा रहा था। गांव से निकलते ही रास्ते में बाइक सवार नकाबपोश तीन बदमाशों ने उसकी बाइक रोक ली। तमंचा दिखाकर बदमाशों ने उसकी जेब से मोबाइल निकाल लिया। इसके बाद बदमाशों ने उसकी बाइक भी छीन ली। विरोध करने पर बदमाशों ने राजू के साथ मारपीट कर फरार हो गया। पास ही इंटर कालेज का चौकीदार मौके पर पहुंचा। अन्य ग्रामीण भी मौके पर पहुंचे। राजू ने चौकीदार के फोन से अपने परिवार वालों के अलावा यूपी 112 को घटना की सूचना दी। थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार ने बताया कि जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

मंदिर से दानपेटी चोरी ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

खुलासे की मांग को लेकर प्रदर्शन करते ग्रामीण। • अमृत विचार

संवाददाता ढबारसी

अमृत विचार: आदमपुर थाना क्षेत्र के गांव फत्तेहपुर अधेक में काली माता मंदिर में रखी दान पेटी चोरी हो गई। ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर पुलिस से चोरी की घटना का खुलासा करने की मांग की है।

आदमपुर थाना क्षेत्र के फत्तेहपुर अधेक गांव में प्राथमिक विद्यालय के निकट काली माता का मंदिर से रविवार की रात में चोर दान पेटी चुरा ले गए। सोमवार सुबह को जब ग्रामीण पूजा अर्चना करने के लिए मंदिर गए तो वहां से दान पेटी गायब थी। पूर्व प्रधान हरद्वारी सिंह ने बताया कि मंदिर के निकट प्राथमिक विद्यालय में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं जिसमें चोरों की तस्वीरें कैद हो सकती है। आदमपुर पुलिस को रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए तहरीर दी गई है। थाना प्रभारी कुमरेश त्यागी ने बताया कि पुलिस को तहरीर मिली है तो जांचकर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। प्रदर्शन करने वाले ग्रामीणों में मथरी सिंह, हर किशोर, महेंद्र सिंह भगत जी, तोताराम सिंह, सोमपाल सिंह, ओमपाल सिंह, गोपाल सिंह, चंद्रपाल सिंह, नरेश पाल, पीतांबर सिंह आदि मौजूद रहे।

कार की टक्कर से बाइक सवार घायल

गजरौला, अमृत विचार: रविवार रात नेशनल हाईवे पर कार की टक्कर से बाइक सवार दो लोग घायल हो गए। घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

शहर के मोहल्ला मायापुरी मंडी समिति मार्ग निवासी प्रेमपाल अपने साथी के साथ रविवार को किसी रिश्तेदारी में गया था। रात में दोनों वापस लौट रहे थे। इसी दौरान नेशनल हाईवे पर गांव शहबाजपुर डोर के पास पीछे से आई तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार दोनों लोग घायल हो गए। आरोपी चालक कार लेकर मौके से फरार हो गया।

सनातन धर्म हिन्दू इण्टर कालेज, ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)

सहायक लिपिक पद हेतु आवेदन सूचना

पद का नाम-सहायक लिपिक-01 पद (अनारक्षित श्रेणी)

वेतनमान (5200-20200) ग्रेड पे 2000 लेवल-3 पे मेट्रिक्स 21700 से 69100

शैक्षिक आर्हता इण्टरमीडिएट या समकक्ष डोएक/नीलेट द्वारा सी.सी.सी. प्रमाण पत्र या किसी मान्यता प्राप्त संस्था से कम्प्यूटर से डिप्लोमा/डिग्री तथा प्रारम्भिक आर्हता परीक्षा (PET) में 50 प्रतिशत एवं अधिक परसेटाइल स्कॉर प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी प्रश्नगत चयन के लिए आवेदन करने हेतु पात्र होंगे तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण न्यूनतम 25 शब्द तथा अंग्रेजी टंकण न्यूनतम 30 शब्द होना अनिवार्य है। आयु सीमा 01 जुलाई 2025 को न्यूनतम आयु 18 वर्ष तथा अधिकतम 40 वर्ष। आवेदन शुल्क सामान्य श्रेणी के लिए 750/- रूपये तथा अ.जा./अ.ज.जा./ई डब्लू एस के लिए 500/- रूपये आवेदन निर्धारित प्रारूप पर दिनांक 25.12.25 तक प्रबन्धक सनातम धर्म हिन्दू इण्टर कॉलेज ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) के पद नाम से निर्धारित शुल्क का बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर (राष्ट्रीय कृत बैंक) संलग्न करते हुए उमेश चन्द्र अग्रवाल प्रबन्धक, वार्ड नं. 22, लाला हरिराम रोड आदर्श नगर मौ. फतेहउल्लागंज, ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) के पते पर स्पीड पोस्ट या रजिस्टर्ड डाक से प्रेषित करें। आवेदन पत्र के साथ शैक्षिक प्रमाण पत्र की स्वप्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न करेंगे। आवेदन पत्र जिला विद्यालय निरीक्षक, मुरादाबाद की ई मेल आई.डी. moradabaddios@gmail.com पर भी प्रेसित करेंगे। सम्पूर्ण जानकारी के लिए विद्यालय की वेबसाइट https://shrisanatandharmintercollege.com पर दिशा निर्देश तथा आवेदन पत्र का प्रारूप उपलब्ध है।

प्रबन्धक
सनातन धर्म हिन्दू इण्टर कॉलेज
ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)

कार्यालय नगर निगम, अल्मोड़ा

पत्रांक : 1521/30-1/नि०नि० 2025-2026/ दिनांकः 01 दिसम्बर, 2025

कोटेशन सूचना

एतद्द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम अल्मोड़ा क्षेत्रान्तर्गत बन्ध्याकरण हेतु बंदरों को पकड़कर वन विभाग के रेस्क्यू सेन्टर तक पहुंचाये जाने हेतु इच्छुक फर्मों/व्यक्तियों के कोटेशन आमन्त्रित किये जाते हैं। कोटेशन की शर्तें एवं विस्तृत जानकारी दिनांक 02.12.2025 से 17.12.2025 तक कार्यालय नगर निगम अल्मोड़ा के वन अनुभाग से तक प्राप्त की जा सकती है। कोटेशनदाताओं द्वारा निर्धारित प्रारूप में आवश्यक दस्तावेजों सहित कोटेशन दिनांक 18.12.2025 को अपरान्ह 1:00 बजे तक कार्यालय नगर निगम अल्मोड़ा में प्रस्तुत किये जा सकेंगे। निर्धारित तिथि व समय के उपरान्त प्राप्त होने वाले कोटेशनों पर विचार नही किया जायेगा। प्राप्त कोटेशन तद्दिनांक को अपराह्न 2:00 बजे उपस्थित कोटेशनदाताओं व नगर आयुक्त नगर निगम अल्मोड़ा तथा मा० महापौर नगर निगम अल्मोड़ा द्वारा प्राधिकृत अधिकारियों के समक्ष के सम्मुख खोले जायेंगे। कोटेशन स्वीकृत / अस्वीकृत करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी को निहित होगा।

नगर आयुक्त **महापौर**
नगर निगम, अल्मोड़ा **नगर निगम, अल्मोड़ा**

न्यूज डायरी

एलएस क्लब ने लगाया नेत्र जांच शिविर

मंडी धनौरा, अमृत विचार : सोमवार को नेहा क्लीनिक पर एलएस क्लब धनोरा परिवर्तन द्वारा नेत्र शिविर का आयोजनक किया गया। शिविर में मोतियाबिंद, रेटिना, काला मोतियाबिंद, नासूर, भेंगापन आदि रोगों की जांच कर मरीजों को आवश्यक परामर्श दिया गया। डॉक्टर नेहा ने आई डोनेशन के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्हें मरीजों को आंखों की देखभाल के लिए धुएं, धूल-मिट्टी, तेज धूप और पसीने से बचाव करने तथा ताजा एवं संतुलित आहार लेने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए। आनंद धाम चौरिटेबल हॉस्पिटल में डॉ. एमपी शर्मा ने मधुमेह के विकार विटामिन डी 3 एवं बीमारियों के बारे में बचाव के बारे में भी बताया। क्लब की अध्यक्ष कल्पना शर्मा सुधा शर्मा, सीमा यादव, रेनू अग्रवाल, मीनू जैन सहित आदि मौजूद रहे।

सर्विस रोड पर अतिक्रमण हटाया, दुकानदारों को चेतावनी

डिडौली, अमृत विचार : जोया में सर्विस रोड पर बढ़ते अतिक्रमण के कारण आए दिन जाम की स्थिति बन रही थी। दुकानों के बाहर रखे सामान और ठेलों की वजह से आमने सामने से आने वाले वाहनों को निकलने में परेशानी होती थी। इसी समस्या को देखते हुए सोमवार सुबह पुलिस व प्रशासन की संयुक्त टीम ने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। यातायात प्रभारी अनुज मलिक अपनी टीम के साथ तथा जोया चौकी प्रभारी नरेंद्र कुमार अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। दोनों टीमों ने मिलकर जोया से गजरौला दिशा तक सर्विस रोड पर लगे अतिक्रमण को हटवाया। वहीं जोया से मुरादाबाद दिशा तक दुकानों के आगे लगे ठेलों को पीछे हटाने की सख्त चेतावनी दी गई। पुलिस ने दुकानदारों को निर्देश दिए कि वे दुकानों के बाहर सामान न रखें। क्योंकि इससे सर्विस रोड पर जाम की स्थिति उत्पन्न होती है।

बंद फैक्ट्री से चोरी किया सामान बरामद, दो चोर गिरफ्तार

मंडी धनौरा, अमृत विचार : पुलिस ने एक बंद पड़ी फैक्ट्री से लाखों रुपए के सामान की चोरी के मामले में दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई बछरायूं थाना पुलिस और एसओजी टीम ने गाजियाबाद में की। पुलिस ने चोरी का सामान, नकदी और एक कार बरामद की है।बता दें कि पिछले दिनों एक बंद फैक्ट्री में बड़ी चोरी हुई थी। चोरों ने लाखों रुपए मूल्य का सामान चुरा लिया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसओजी टीम को भी जांच में लगाया गया। सर्विलांस और मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने गाजियाबाद में दबिश दी और दो आरोपियों को पकड़ लिया। गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों की पहचान सलीमुद्दीन पुत्र अल्लामोहर निवासी नया बस अड्डा मोहल्ला इस्लामनगर, कैला भट्टा, गाजियाबाद और हफीज पुत्र हमीद निवासी खड़व्वा थाना अतरौली, जिला अलीगढ़ के रूप में हुई है। पुलिस ने इनके कब्जे से 80 हजार रुपये नकद, चोरी की कार और अन्य सामान बरामद किया है। इस बाबत थाना प्रभारी अमित तोमर ने बताया कि इस गिरोह के सात अन्य साथी अभी फरार हैं।

एडस जागरुकता के लिए किया नुक्कड़ नाटक

गजरौला, अमृत विचार : श्री वेंक्टेश्वरा इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साईंसेस के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग एवं वीजीआई के संयुक्त तत्वांधान में संस्थान के मेडिकल एवं नर्सिंग के छात्र-छात्राओं ने विश्व एडस दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर इस बिमारी से बचाव, रोकथाम के लिए राष्ट्रपति को ज्ञापन प्रेषित किया। इसके साथ ही संस्थान में एडस के लक्षणों, रोग निदान एवं उपचार को लेकर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। आरम्भ मुख्य अतिथि डॉ.वाल्मीकि प्रसाद, प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी, कुलपति डॉ. कृष्ण कान्त दवे, डीन डॉ. संजीव भट्ट, डॉ. बीएन सिंह, डॉ. नीरज, डॉ.अलंकृता जैन, डॉ. आलोक आदि ने किया। अध्यक्ष सुधीर गिरि ने कहा कि नेशनल एडस कंट्रोल आर्गेनाईजेशन (नाको) के सहयोग से हम इस जानलेवा महामारी पर लगाम करने में काफी हद तक सफल रहे है। हम सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं (एनजीओ) के साथ मिलकर इस महामारी के विरुद्ध जनजागरूकता अभियान चलायेगें। डॉ. वाल्मीकि प्रसाद ने कहा कि आइये हम सब मिलकर इस जानलेवा बिमारी को 2030 तक जड़ से उखाड़ने में अपना प्रभावी योगदान दें। डॉ.(कर्नल) नीरज सिधान ने भी सम्बोधित किया। डॉ. रवि शास्त्री, डॉ. रमाशंकर, एसएस बघेल मेरठ परिसर से डॉ.प्रताप एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग रहे।

अमृत विचार

मुरादाबाद , मंगलवार,2 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

रिक्शा से टकराई बाइक, युवक की मौत

संभल,अमृत विचार : ढढवारा निवासी अनिल (25 वर्ष) पुत्र रघुनंदन बाइक से किसी काम से कस्बा जुनावई गया था। लौटते समय उसकी बाइक मोटरसाइकिल से बने जुगाड़ रिक्शा में पीछे से जा घुसी। टक्कर में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। डॉक्टरों ने तीन घंटे तक लगातार उपचार किया, लेकिन जब हालत में कोई सुधार नहीं हुआ तो उसे रेफर कर दिया गया। परिवार वाले उसे अलीगढ़ ले जा रहे थे, तभी रास्ते में उसकी मौत हो गई। इंस्पेक्टर मेघपाल सिंह ने बताया कि परिजनों की ओर से कोई शिकायत नहीं मिली है, पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

फिर भूख हड़ताल पर बैठीं मां- बेटी

बहजोई,अमृत विचार : आश्वासन के बाद भी कार्रवाई न होने पर संभल के मोहल्ला कोट पूर्वी की निवासी मंजूलता फिर अपनी बेटी के साथ आमरण अनशन पर बैठ गई । उन्होंने 27 नवंबर को भी जिला कलेक्ट्रेट परिसर में भूख हड़ताल की थी ।उनका आरोप है कि पड़ोस की एक महिला ने उनकी बेटी से धोखाधड़ी कर जेवरात ले लिए और बैंक में गिरवी रख दिए ।पुलिस अधिकारियों से फोन पर हुई बातचीत के बाद उन्होंने अपना अनशन स्थगित कर दिया था। कार्रवाई न होने पर उन्होंने एक दिसंबर को फिर से भूख हड़ताल शुरू कर दी। इस दौरान समाज हित संरक्षण समिति के अध्यक्ष भगवानदास शर्मा भी उनके साथ मौजूद रहे।

पिकअप चालक गिरफ्तार

संभल, अमृत विचार : गंगा एक्सप्रेस वे पर हुए भीषण सड़क हादसे में पिकअप चालक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। हादसे में एक ही परिवार के छह लोगों की मौत हो गई थी। मृतक के भाई की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज की गई थी। 27 नवंबर की शाम गांव रसूलपुर धतरा के समीप गंगा एक्सप्रेसवे पर अल्टो कार और सब्जी से लदी बोलेरो पिकअप आमने-सामने भिड़ गई थीं। अल्टो सवार परिवार छोटे भाई डेविड की बेटी के नामकरण संस्कार के बाद वापस लौट रहा था। इंस्पेक्टर उमेश सोलंकी के मुताबिक, सुनील की शिकायत पर मुकदमा दर्ज किया गया था। पिकअप चालक शिशुपाल निवासी दीपपुर डांडा थाना रजपुरा को गांव भोपतपुर से गिरफ्तार कर लिया गया।

हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा, श्री कल्कि कथा आरंभ

कल्कि धाम पर जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य ने किया विश्व की पहली श्री कल्कि कथा का प्रवचन

कार्यालय संवाददाता,संभल

- गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामत सांसद मनोज तिवारी हुए शामिल
- मंडलायुक्त के साथ डीएम, एसपी समेत अफसरों की रही उपस्थिति

अमृत विचार: संभल के ऐचौड़ा कंबोह स्थित कल्कि धाम में सोमवार से सात दिवसीय कल्कि महोत्सव का भव्य आंरभ हो गया। महोत्सव की शुरुआत अद्भुत दृश्यों के साथ हुई, जहां दुनिया में पहली बार आयोजित हो रहे कल्कि महोत्सव में श्री कल्कि कथा का प्रवचन जगद्गुरु श्री रामानंदाचार्य श्री रामभद्राचार्य द्वारा किया गया। कथा आरंभ से पहले पंडाल के ऊपर से हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्पवर्षा कर श्रद्धालुओं का स्वागत किया गया।

गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामत, दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी और कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने दीप प्रज्ज्वलित कर महोत्सव का शुभारंभ किया। इस दौरान देशभर से पहुंचे साधु-संतों व श्रद्धालुओं की मौजूदगी रही। सभी ने विश्व की पहली कल्कि कथा सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

महोत्सव परिसर में साधु-संतों के

ऐंचोड़ा कंबोह कल्कि धाम में आरती करते पुरोहित। ● अमृत विचार

प्रवास के लिए सप्तऋषि, सप्तनदी और सप्तपुरी के नाम पर विशेष कुटियाएं बनाई गई हैं, जबकि कल्कि पुरम नाम से बड़ी टेंट सिटी बसाई गई है। मंच पर विराजमान जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य ने कहा कि कल्कि पुराण के दिव्य प्रसंगों और अद्भुत कथाओं का रसपान श्रद्धालुओं को कराया जाएगा। महोत्सव मंच पर दीप प्रज्ज्वलन के बाद उपस्थित संतों और अतिथियों ने जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य की चरण पादुका का पूजन किया। सांसद मनोज तिवारी ने कल्कि धाम में चल रहे निर्माण कार्य पर आधारित भजन भी प्रस्तुत किया। पहले दिन की कथा में हजारों श्रद्धालु श्री कल्कि कथा सुनकर मंत्रमुग्ध दिखाई दिए। कमिश्नर आंजनेय कुमार सिंह के साथ ही संभल के डीएम डॉ. राजेंद्र पेंसिया और एसपी कृष्ण कुमार विश्नोई ने भी कल्कि धाम पहुंचकर जगद्गुरु से आशीर्वाद प्राप्त किया।

महोत्सव के पहले दिन यह दिग्गज हुए शामिल

कल्कि महोत्सव में श्री कल्कि कथा के पहले दिन जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद महाराज, आनंद अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद महाराज, मशहूर भोजपुरी अभिनेता एवं पूर्वी दिल्ली लोकसभा सांसद मनोज तिवारी , गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पीडब्ल्यूडी मंत्री दिगंबर कामत, हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडोली आदि शामिल हुए।

ऐंचोड़ा कंबोह कल्कि धाम में कथा श्रवण करते साधु संत व श्रद्धालु। ● अमृत विचार

कल्कि धाम में कलश यात्रा निकालतीं महिलाएं। ● अमृत विचार

जागरुकता ही एड्स से बचाव का उपायः सीएमओ

गोष्ठी को संबोधित करते सीएमओ डा . तरुण पाठक। ● अमृत विचार

संवाददाता,बहजोई

अमृत विचार: बहजोई महाविद्यालय मिशन शक्ति 5.0 व राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वाधान में एड्स जागरूकता गोष्ठी में मुख्य अतिथि सीएमओ डॉ तरुण पाठक ने एड्स की रोकथाम इस बीमारी को लेकर समाज में जन-जागरूकता से हो सकती है।

कहा कि एड्स के बारे में सही एवं सटीक जानकारी भी इसका एक बचाव है। एड्स कोई ऐसी बीमारी नहीं है जो कि साथ रहने से फैले अथवा हाथ मिलाने से या छूने से फैले। डीटीओ डा. संतोष ने एड्स फैलने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि एड्स के संक्रमण के तीन मुख्य कारण हैं। असुरक्षित यौन संबंध, रक्त के आदान-प्रदान तथा मां से शिशु में संक्रमण द्वारा हो सकता है। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गीता ने कहा कि वर्तमान समय में इस बीमारी का कोई उपचार संभव नहीं है। प्राचार्य डॉ. वीरेन्द्र कुमार गुप्ता ने कहा कि एड्स से बचाव का मुख्य उपाय अपने साथी के प्रति वफादार रहना है। इस दौरान संजय कुमार, नेमपाल सिंह यादव, यशपाल सिंह यादव, पूजा शर्मा, प्रीति शर्मा, मेघा मेहरोत्रा, भगवान सिंह चौहान, राजीव कुमार आदि मौजूद रहे।

बीएलओ की सोते समय मौत तनाव की बात कह रहे शिक्षक

कार्यालय संवाददाता,संभल

- सोमवार सुबह करीब 4 बजे पत्नी उठाने गईं तो अचेत थे अरविंद

मृतक अरविंद कुमार।

अमृत विचार: संभल जिले के थाना नखासा क्षेत्र के गांव चौकुनी में सोमवार सुबह एक बीएलओ की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई। परिजनों ने मौत का कारण स्पष्ट नहीं बताया है। शिक्षक साथियों का कहना है कि एसआईआर ड्यूटी के कारण वह तनाव में थे।

अरविंद कुमार (40) पुत्र नत्तन अमरोहा जनपद के प्राथमिक विद्यालय फैयाज नगर में प्रधानाध्यापक के पद पर तैनात थे और बूथ संख्या 226 पर बीएलओ सहायक भी थे। अरविंद अपनी पत्नी प्रतिभा और दो बच्चों 13 वर्षीय बेटी गरिमा और 10 वर्षीय बेटा लविश के साथ रहते थे। परिवारजनों के अनुसार रोजाना की तरह अरविंद कुमार रात को कमरे में सोये थे। सोमवार सुबह करीब 4 बजे पत्नी प्रतिभा उन्हें उठाने गईं, लेकिन वह अचेत पड़े थे। शोर सुनकर परिजन और ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। चिकित्सकीय जांच के बाद मौत की पुष्टि हुई तो घर में कोहराम मच गया। सहकर्मी शिक्षकों को जानकारी मिली तो बड़ी संख्या में वे भी घर पहुंच गए। मौत की सूचना थाना नखासा पुलिस को दी गई है। इंस्पेक्टर संजीव बालियान का कहना है कि अभी तक थाने पर कोई औपचारिक शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलते ही मामले में आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

पिकअप की टक्कर से बाइक सवार दो युवक घायल

चंदौसी,अमृत विचार: औरछी चौराहे से पर सोमवार को दोपहर अनियंत्रित पिकअप ने बाइक सवार दो युवकों को टक्कर मार दी। दोनों गंभीर घायल हो गए।

सोमवार दोपहर तीन बजे बदायूं जिले के थाना फेहजगंज बेहटा क्षेत्र के गांव नरौदा निवासी विजय सिंह पुत्र रमेश औरछी चौराहे से अपने साढू ओम बाबू पुत्र रामपाल निवासी गांव अन्तरपुर को बाइक से बैठाकर गांव जा रहे थे। उनकी बाइक जैसे ही सिसरका मार्ग के पास पहुंची तभी तेज गति से आ रहे पिकअप वाहन चालक ने उनकी बाइक में सामने से टक्कर मार दी। इससे बाइक सवार दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर पुलिस बाइक सवार दोनों युवकों को ई रिक्शा की मदद से चंदौसी सीएचसी भिजवाया। दोनों घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

प्रधानाध्यापकों की खींचतान से स्कूल में ताला

संवाददाता, बबराला

स्कूल में ताला लगा होने की वजह से बाहर खड़े बच्चे। ● अमृत विचार

- स्कूल बंद होने पर सड़क किनारे बैठकर बच्चों ने की पढ़ाई
- बाद में बीईओ ने स्कूल का ताला तुड़वाकर कराई साफ-सफाई

अमृत विचार: प्राथमिक विद्यालय प्रथम में वर्तमान और पूर्व प्रधानाध्यापक के बीच चल रहे विवाद ने विद्यालय की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया। नतीजतन सोमवार को विद्यालय के मुख्य द्वार पर ताला लटका रहा और बच्चों को सड़क किनारे बैठकर पढ़ाई करनी पड़ी।

12 सितंबर को तीन वर्ष पूर्व निलंबन के बाद बहाल हुए प्रधानाध्यापक भुवनेश शर्मा को अदालत के आदेश पर विद्यालय में नियुक्त किया गया था। ढाई महीने से अधिक समय बीत जाने के बावजूद उन्हें विद्यालय का विधिवत चार्ज नहीं दिया जा सका। बताया गया कि विद्यालय की चाबी और अभिलेख पूर्व इंचार्ज प्रधानाध्यापक प्रीति शर्मा के पास हैं। सोमवार सुबह जब बच्चे व शिक्षक विद्यालय पहुंचे तो मुख्य द्वार बंद मिला। प्रधानाध्यापक भुवनेश शर्मा, शिक्षामित्र साधना सिंह व निर्मला ने बताया कि चाबी पूर्व इंचार्ज के पास होने के कारण विद्यालय नहीं खोला जा सका। इससे तमाम बच्चों को स्कूल गेट के बाहर बैठकर पढ़ना पड़ा। सूचना पर खंड शिक्षा अधिकारी एमएल पटेल मौके पर पहुंचे और ताला तुड़वाकर विद्यालय परिसर की सफाई करवाई। निर्धारित समय से ढाई घंटे देरी से करीब 11:30 बजे स्कूल प्रांगण में कक्षा एक से पांच तक के सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर पढ़ाई की औपचारिकता पूरी की गई।

तीन दिन से नहीं बना मिड-डे-मील

बीईओ को यह भी पता चला कि विद्यालय में पिछले तीन दिनों मिड-डे-मील नहीं बना था, क्योंकि रसोईघर की चाबी भी पूर्व इंचार्ज के पास ही थी। उन्होंने तत्काल व्यवस्था करते हुए बच्चों को बिस्कुट और केला वितरित कराया। प्रीति शर्मा ने कहा कि 24 नवंबर से उनकी ड्यूटी एसआईआर प्रक्रिया के तहत बीएलओ के साथ लगी हुई है, जिस कारण समय से विद्यालय नहीं पहुंच सकीं। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान प्रधानाध्यापक स्वयं चार्ज ग्रहण नहीं कर रहे। बीईओ ने मामले की जांच रिपोर्ट तैयार कर उच्चाधिकारियों को भेजने और आवश्यक कार्रवाई की बात कही है।

बबराला में जल्द बनेगा सड़क व नाला

संवाददाता, बबराला

एसडीएम,सीओ की मौजूदगी में बैठक को संबोधित करते चेयरमैन। ● अमृत विचार

- पानी की बेहतर निकासी के लिए लगाए जाएंगे पंप

अमृत विचार: नगर पंचायत कार्यालय में व्यापारियों व अधिकारियों की बैठक में पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर विकास योजना सहित विभिन्न योजनाओं के तहत अनूपशहर रेलवे फाटक से इंदिरा चौक के पहले पुलिया तक 169.07 लाख रुपये की लागत से लगभग 710 मीटर लंबी सड़क निर्माण पर चर्चा की गई।

ईओ अमरेश तिवारी ने बताया कि सड़क निर्माण रेलवे क्रॉसिंग क्षेत्र से नाले के निर्माण के साथ शुरू किया जाएगा। बरसाती पानी की बेहतर निकासी के लिए पंप लगाए जाएंगे तथा नालों को ढकने की योजना भी बनाई गई है, जिससे सुरक्षा एवं स्वच्छता बनी रहे और कोई दुर्घटना न हो। उन्होंने बताया कि नगर में पाइपलाइन का कार्य चलने से सड़क निर्माण में कुछ विलंब हुआ, किंतु अब डिजाइन तैयार है और ढाई से तीन माह के भीतर सड़क बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। सड़क के बीच में ढाई फुट से 15 इंच तक टेपर आकार में ऊंचा डिवाइडर बनाया जाएगा। साथ ही जल निकासी को ध्यान में रखते हुए एक और पुलिया बनाई जाएगी। बैठक में दुकानदारों से अपील की गई कि वे सड़क पर अपना सामान न रखें, ताकि बाधा न उत्पन्न हो। एसडीएम अवधेश कुमार, सीओ आलोक सिद्ध, चेयरमैन हर्षवर्धन वार्ष्णेय, ईओ अमरेश तिवारी, जेई शिवराज सिंह, व्यापार मंडल अध्यक्ष राकेश वार्ष्णेय , रवि गुप्ता, राजू अरोरा, अभय टेस्टी, निशांत मंकित, विराट अग्रवाल, अश्विनी शर्मा, प्रेम कुमार वार्ष्णेय, अरुण कुमार डिंपल, राकेश नेताजी, विवेक वार्ष्णेय एडवोकेट, उमाकांत शर्मा, मुकेश गुप्ता, अनिल गुप्ता सहित कई व्यापारी उपस्थित रहे।

एक दिन पहले चल पड़ी बरात सुध आई तो बीच रास्ते से लौटी

संवाददाता, बबराला

- अगले दिन बरात लेकर गया दुल्हा दुल्हन को लेकर आया

अमृत विचार: गुन्नौर कस्बे में एक रोचक घटना चर्चा का विषय बनी है। शादी की तारीख को लेकर हुए भ्रम के चलते दूल्हा पक्ष के लोग तय तारीख से एक दिन पहले ही बरात लेकर निकल गये। रास्ते में सही तारीख का पता चला तो वापस लौट आये। बरात में शामिल लोगों में इसे लेकर खूब हंसी-ठिठोली होती रही। बहरहाल अगले दिन बरात गई और दुल्हन को लेकर आई।

मोहल्ला मासूम अली निवासी एक युवक की शादी की तिथि 30 नवंबर तय थी लेकिन 29 नवंबर का भ्रम हो गया था। इसी भ्रम में दूल्हा पक्ष ने एक दिन पहले ही दुल्हन को ब्याह कर लाने के लिए बरात निकाल दी। शनिवार को दूल्हा बरातियों संग वाहनों में सवार होकर हंसी-खुशी निकल पड़ा। बरात जैसे ही रास्ते में पहुंची, तभी सूचना मिली कि शादी की वास्तविक तारीख 29 नहीं, बल्कि 30 नवंबर है। जानकारी मिलते ही बरातियों के जश्न में खलल पड़ गया

और बरात को रास्ते से ही लौटना पड़ा। इस घटना की चर्चा पूरे कस्बे में होने लगी। इसके बाद निर्धारित 30 नवंबर को बरात फिर से पूरी तैयारी के साथ दुल्हन के दरवाजे पहुंची। दुल्हन को लेकर दूल्हा खुशी-खुशी घर लौट आया।

न्यूज डायरी

ब्लैक पैंथर ने जीता एसपीएस कप का फाइनल

चंदौसी, अमृत विचार : मॉडल पब्लिक लॉ कॉलेज के ग्राउंड पर चल रहे एसपीएस कप का फाइनल मुकाबला ब्लैक पैंथर ने जीता। पंकज यादव को शानदार गेंदबाजी के लिए मैच आफ द मैच चुना गया। फाइव स्टार के कप्तान ने टॉस जीता। पहले बल्लेबाजी करते हुए फाइव स्टार की टीम 13.2 ओवर में 85 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। आर्यन चौधरी ने 24 रन और अभी असद ने 18 रन का योगदान दिया। पंकज यादव ने 4 , जबकि विशाल और सत्यम संगू ने 2-2 विकेट हासिल किए। ब्लैक पैंथर की टीम ने मात्र 6.03 ओवर में 87 रन बनाकर 8 विकेट से आसान जीत दर्ज की। निशांत कुशवाह ने 31, सूर्या ने 34 और दिव्यांश राजपूत ने 15 रन बनाए। शोएब ने 2 विकेट लिए। अंपायर की भूमिका कुश रावत और अंकुर ठाकुर ने निभाई, जबकि स्कोरिंग रोहित ठाकुर ने की। मुख्य अतिथि डॉ. अशोक यादव रहे, जिन्होंने विजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

विधि विधान से हुई मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा,शोभायात्रा में झूमे श्रद्धालु

चंदौसी, अमृत विचार : फड़ग्राई बाजार स्थित श्री शिव जगदम्बा प्राचीन मंदिर में सोमवार को प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा हुई। इससे पूर्व मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। ढोल-मंजीरों और कीर्तन मंडली के साथ निकली यह शोभायात्रा पट्टी बाजार से होती हुई फड़ग्राई बाजार, नमक मंडी, घंटाघर, बड़ा बाजार, घास मंडी, पाटिया बाजार होते हुए पुन: फड़ग्राई बाजार मंदिर परिसर में संपन्न हुई। श्रद्धालु भजन-कीर्तन गाते और नृत्य करते हुए चल रहे थे। संजय किराना, भूपेंद्र गुप्ता, शरद चंद्र लाले, अशोक मुड़िया, कौशल किशोर वंदेमातरम, मन्नु गुप्ता, राजन वार्ष्णेय, घनश्याम नारायण, मोहित वार्ष्णेय, सुमित अग्रवाल, मधुकांत, नितेश, धीरेन्द्र, यश वार्ष्णेय, शशिकांत, मोहन, हिमांशु, राजीव, भास्कर वार्ष्णेय सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

बुलेट से निकाली पटाखे की आवाज, साढ़े ग्यारह हजार रुपए का चालान

संभल/ओबरी,अमृत विचार : बुलेट बाइक से पटाखे की आवाज निकालने वाले को पुलिस ने रोकने का प्रयास किया तो उसने बाइक दौड़ा दी । पुलिस ने पीछा कर बाइक पकड़ ली और साढ़े ग्यारह हजार रुपए का चालान कर सीज कर दी ।सोमवार की शाम मंसूरपुर माफी चौकी इंचार्ज रोहित मलिक गस्त पर थे। मढ़न - मंसूरपुर माफी मार्ग पर एक युवक बुलेट बाइक से बार-बार पटाखे की आवाज निकालते आ रहा था । पुलिस ने बाइक चालक को रोकने का प्रयास किया तो वह भागने लगा। पुलिस ने पीछा कर उसे दबोच लिया और बाइक का साढ़े ग्यारह हजार रुपए का चालान कर बाइक सीज कर दी। चोकी इंचार्ज रोहित मलिक ने बताया बुलेट सवार युवक ने हेलमेट भी नहीं लगा रखा था और उसके पास ड्राइविंग लाइसेंस और बाइक के कागजात नहीं मिले । युवक अमरोहा जनपद के थाना डिडौली क्षेत्र के गांव ककराली निवासी कपिल है।

राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाए समाज: सुशील वार्ष्णेय

संभल, अमृत विचार : अखिल भारतवर्षीय श्री वैश्य बारहसैनी वैश्य महासभा के अध्यक्ष सुशील वार्ष्णेय ने कहा कि समाज के राजनीतिक रूप से पिछड़ने की सबसे बड़ी वजह सक्रिय भागीदारी का अभाव है। समाज की महिलाओं और युवाओं को राजनीति में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना होगा। उन्होंने कल्कि मंदिर में दर्शन किए। हयातनगर के एक गेस्ट हाउस में समारोह में निर्वाचित पदाधिकारियों, महिलाओं और प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। महिला सभा की कोषाध्यक्ष प्रज्ञा वार्ष्णेय ने कहा कि महिलाएं सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाएं। वार्ष्णेय महिला वेलफेयर समिति की मोना वार्ष्णेय, रेखा वार्ष्णेय, पवन वार्ष्णेय, करुणा, धनेश्वरी देवी, दीपा वार्ष्णेय, नीलिमा वार्ष्णेय, उमा गुप्ता, शिखा प्रकाश, संध्या, शैली वार्ष्णेय, पूजा वार्ष्णेय के अलावा उपखंड अधिकारी विद्युत जेपी वार्ष्णेय, कोषाध्यक्ष चंद्रशेखर वार्ष्णेय, विनय वार्ष्णेय, संयुक्त मंत्री देवेंद्र वार्ष्णेय एडवोकेट, उपमंत्री वीरेंद्र वार्ष्णेय बोबी समेत कई पदाधिकारियों को सम्मानित किया गया। महामंत्री योगेश गुप्ता , केके गुप्ता मेंथा वाले, त्रिवेदी प्रकाश, दयानंद वार्ष्णेय, देवेंद्र पाल एडवोकेट, गिरिराज किशोर, श्रीश चंद वार्ष्णेय, महावीर प्रसाद, त्रिभुवन सर्राफ, पुनीत सर्राफ, सुमित श्याम, सुशील वार्ष्णेय मूलचंद, अनुज आर्य, नवरत्न सर्राफ,कौशल वार्ष्णेय आदि ने भी संबोधित किया। अध्यक्षता जगत आर्य व संचालन सोनू कुमार गुप्ता एडवोकेट ने किया।

मेडिकल स्टोर की आड़ में चल रहा अस्पताल कराया बंद

रसूलपुर गांव में अवैध अस्पताल को सील कराते सिटी मजिस्ट्रेट। ● अमृत विचार

संभल,अमृत विचार: सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार ने सोमवार को रसूलपुर गांव में छापा मारा तो मेडिकल स्टोर की आड़ में अवैध अस्पताल चलता मिला।

अस्पताल में समीर विश्वास नाम का व्यक्ति इलाज करता मिला। जबकि आकाश और जितेंद्र नाम के दो युवक भी उपचार संबंधी कार्यों में लगे थे। दोनों युवक मात्र हाईस्कूल पास हैं। खुलासा हुआ कि मेडिकल स्टोर की आड़ में अस्पताल में मरीजों का उपचार किया जा रहा था। मौके पर दो सामान्य बेड और एक पक्का सीमेंट का बेड मिला, यानी कुल तीन बेड मरीजों के उपचार के लिए लगाए गए थे। कई मरीज वहां बैठे मिले, जिससे अवैध क्लिनिक लंबे समय से चलने की पुष्टि हुई। सिटी मजिस्ट्रेट ने बताया कि मेडिकल स्टोर का लाइसेंस समीर विश्वास की पत्नी के नाम से है, लेकिन वह मौके पर नहीं मिलीं। मेडिकल स्टोर को बंद करा आगे की जांच शुरू कर दी गई।

ऑनलाइन उपस्थिति और गैर-विभागीय कार्यों का विरोध, सचिवों ने किया प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता,संभल/ मनोटा

असमोली ब्लाक कार्यालय पर प्रदर्शन करते ग्राम पंचायत सचिव। ● अमृत विचार

- लगातार चलेगा आंदोलन,15 को डोंगल ब्लाक कार्यालयों में जमा कर देंगे सचिव

अमृत विचार: विकासखंड असमोली कार्यालय पर मंगलवार को ग्राम पंचायत सचिवों ने ऑनलाइन उपस्थिति अनिवार्य किए जाने और गैर-विभागीय कार्यों को जबरन कराने के विरोध में जोरदार प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन के दौरान ग्राम पंचायत सचिवों ने कहा कि लगातार बढ़ते बोझ और व्यवस्थागत समस्याओं के कारण उनके नियमित कार्य प्रभावित हो रहे हैं, लेकिन शासन उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दे रहा। सचिव संगठन ने चरणबद्ध आंदोलन की घोषणा की है। घोषणा के अनुसार 1 दिसंबर 2025 से 4 दिसंबर 2025 तक सभी सचिव विकासखंड कार्यालय पर काली पट्टी बांधकर शासकीय कार्य करेंगे। इसके बाद 5 दिसंबर से 10 दिसंबर तक धरना-प्रदर्शन और ज्ञापन प्रेषण किया जाएगा। इस अवधि में सभी सचिव सरकारी ग्रुपों से बाहर हो जाएंगे। 10 दिसंबर से सचिव अपने निजी वाहनों का उपयोग बंद कर देंगे और शासकीय कार्यों में स्वयं के वाहन नहीं लगाएंगे। आंदोलन के अगले चरण में 15 दिसंबर को सभी सचिव अपने डोंगल विकासखंड कार्यालय में जमा कर देंगे। सचिवों का कहना है कि जब तक उनकी समस्याओं का समाधान नहीं होता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

कुमार के समोसे : 2 पैसे से लेकर 10 रुपये तक का सफर

सिनेमा प्रेमियों को शायद अब भी याद होगा... एक समय था जब शहर के तमाम सिनेमा हालों में इंटरवल के समय आवाज लगा करती थी-कुमार के समोसे, ले लो भाई कुमार के समोसे....आज वक्त बदल गया, सिनेमा हाल खामोश हैं, एक-एक कर लगभग सभी हाल बंद हो चुके हैं और वहां नए-नए व्यवसाय खुल गए हैं या खुलने की तैयारी में हैं। लेकिन कुमार के समोसे आज भी मौजूद हैं और जो इसके मुरीद हैं वह आज भी कुतुबखाना आते हैं तो समोसे खाए बिना नहीं रहते।

इन समोसों की यात्रा भी कम रोचक नहीं है। जगह वही, भट्टी वही और मसाले वही, लेकिन समोसों की यात्रा अभी भी अनवरत जारी है। इसके प्रेमी आज भी हैं। आज इस दुकान को तीसरी पीढ़ी के दीपक गुप्ता संभाल रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज से लगभग 70 साल पहले नंदूलाल गुप्ता ने तख्त और एक छोटी सी भट्टी के साथ दुकान खोली थी। 2 पैसे में एक समोसे के साथ यह लोगों की पसंद बना और आज 10 रुपये में एक समोसा हाथों-हाथ बिक रहा है। इस समोसे की खासियत यह है कि इसमें तीन तरह के मसाले इस्तेमाल होते हैं जिन्हें घर पर ही तैयार किया जाता है। आम नमक की जगह काले नमक का इस्तेमाल होता है जो इसे नया लुक देता है। इन मसालों का राज दीपक गुप्ता ने नहीं बताया लेकिन मसालों की शुद्धता की गारंटी जरूर दी।

सुबह करीब 11.30 से रात 8.30 तक आप यहां आकर समोसों का आनंद ले सकते हैं। दुकान आज भी कुमार सिनेमा परिसर में ही है और नंदूलाल गुप्ता के सपनों को उनकी यह पीढ़ी बखूबी संभाल रही है। यहां यह बताना जरूरी है कि एक समय दुकान पर इतनी भीड़ रहती थी कि लोगों को समोसों के लिए लाइन लगानी पड़ती थी। तंग गलियों में मौजूद जगत सिनेमा और हिंद सिनेमा तक कुमार के समोसे बेचे जाते थे। लोग इंटरवल के समय कुमार के समोसों का इंतजार करते थे। बड़ी सी भट्टी पर बढ़ी सी कढ़ाई चढ़ी रहती थी और समोसे लगातार सिकते रहते थे। भट्टी आज भी वही है और समोसे आज भी लगातार सिकते रहते हैं। समय का चक्र बदला लेकिन आज भी लोग कुमार के समोसों के मुरीद हैं और थैलियां भर-भर कर घर भी ले जाते हैं। अगर आप भी इन समोसों का आनंद लेना चाहते हैं तो आपको भी कोतवाली के पास कुमार सिनेमा तक आना होगा।

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अजंता स्वीट्स:1986 से अब तक एक ही स्वाद

बरेली शहर अपने पारंपरिक व्यंजनों की समृद्ध विरासत को संजोए हुए है, साथ ही आधुनिक खान-पान के तौर-तरीकों को भी खुले हाथों अपना रहा है। बरेली की गलियों में आज भी वही पुरानी खुशबू मिलती हैं, जो पीढ़ियों से लोगों को अपनी ओर खींचती रही हैं। बड़ा बाज़ार और श्यामगंज की गलियों में मिलने वाली चटपटी चाट, आलू टिक्की और पानी-पूरी का मज़ा लेने के लिए शाम होते ही भीड़ उमड़ पड़ती है। परंपरा की बात आती है तो यहाँ के कबाब सिर्फ एक व्यंजन नहीं, बल्कि मुगलई और अवधी व्यंजनों की सदियों पुरानी विरासत का हिस्सा हैं। बरेली के पारंपरिक कबाब अपनी अनूठी खुशबू, मसालों के संतुलन के लिए जाने जाते हैं। इसके साथ साथ युवा वर्ग की पसंद ने अपनी अलग पहचान बनायी है। युवाओं को लुभाने के लिए बरेली में कई नए और ट्रेंडी रेस्तरां और कैफे खुल गए हैं। डोमिनोज, पिज्जा हट और केएफसी जैसे बड़े फास्ट-फूड चेन ने शहर में अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। पाम बिस्ट्रो, क्वालिटी रेस्टोरेंट, पिंड बलूची, कासा डिवाइन, कार्विंग 24X 7 जैसे नए रेस्टोरेंट युवा वर्ग की पसंद बन रहे हैं।

अजंता स्वीट्स, बस नाम ही काफी है। 1986 में राम अवतार आहूजा ने एक बड़ा सपना लेकर शहामतगंज के कालीबाड़ी रोड पर पुलिस चौकी के सामने छोटी सी दुकान खोली थी। उस वक्त उन्हें भी इसका अंदाजा नहीं रहा होगा कि आगे चलकर इसकी जड़ें इतनी गहरी हो जायेंगी कि मिठाइयों की दुनिया में इसकी ख्याति चारों ओर फैल जायेगी। आज यह शहर ही नहीं बल्कि देशभर में एक जाना पहचाना नाम है। शुरु में यह बेकिंग उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। आज यह दुकान अपनी स्वादिष्ट मिठाइयों और बेकरी उत्पादों के लिए जानी जाती है। राम अवतार आहूजा के बेटे अमित आहूजा से आज विकास भवन के सामने रामपुर गार्डन में उनकी आलीशान दुकान में मुलाकात हुई। उन्होंने बताया कि छोटे स्तर से काम शुरु करते वक्त उनके पिता को कई साल तक संघर्ष करना पड़ा। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और आज इसी का फल है जो अजंता स्वीट्स लोगों में अपनी पहचान बना चुका है। उनका कहना है कि अगर लक्ष्य साफ हो और उसमें मजबूत इच्छा शक्ति हो तो राह आसान होती चली जाती है। इसी का नतीजा है जो आज यह करोड़ों के सालाना टर्नओवर के साथ अजंता स्वीट्स से इंड्स अजंता प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बन चुकी है।

अमित ने बताया कि अजंता स्वीट्स के आउटलेट लखनऊ और रामपुर में भी हैं। इसके अलावा पीलीभीत व पूरनपुर में फ्रेंचाइजी के साथ ही बरेली में 15 विभिन्न जगहों पर आमजन की पहुंच अजंता स्वीट्स तक है। इसकी मदर यूनिट आज भी शहामतगंज वाली ही है। रामपुर और लखनऊ के अलावा बरेली में इसके तीन आउटलेट हैं। उन्होंने बताया कि हम गुणवत्ता और शुद्धता का पूरा ध्यान रखते हैं। शहर में मिठाइयों आदि की आपूर्ति के लिए हमने एक बेस किचन डोहरा रोड पर स्थापित किया है। यहीं से सभी जगह मिठाइयां और नमकीन की आपूर्ति की जाती है।

अमित आहूजा ने जब से कंपनी की बागडोर संभाली है वह इसे नई उंचाइयों की ओर ले जाने को नित नई सोच के साथ प्रयास करते रहते हैं। अजंता की सबसे प्रसिद्ध मिठाइयों में देसी घी की सोन पापड़ी और बेसन की बनी पतीसा सोन पापड़ी है। इसकी काफी डिमांड रहती है। नमकीन में हींग वाली देसी घी से बनी काजू दालमोंठ भी लोगों की पसंद बन चुकी है। स्थानीय स्तर पर जमेटो से आप इन्हें घर पर भी मंगा सकते हैं। आनलाइन मंगाने के लिए कंपनी ने अमेजन से टाईअप किया है। अजंता के दो लोकप्रिय आइटम और हैं इनमें से एक जूली नाम की बंगाली मिठाई तो दूसरी गुजराती डिस ढोकला है। बेकरी और कन्फेक्शनरी में भी अजंता के पास ढेरों उत्पाद हैं। अब तो अजंता ने कई जगह चाट कार्नर भी खोल लिए हैं।

अजंता स्वीट्स की दुकान में सबसे कम रेट वाली मिठाई पेठा है जो 340 रुपये प्रति किलो में उपलब्ध है। यहां की सबसे महंगी मिठाई पिस्ते वाली लौज है जो 4500 रुपये प्रति किलो में उपलब्ध है। इसका स्वाद लाजवाब है। नार्मल मिठाई मिक्स में 640 रुपये प्रति किलो आप खरीद सकते हैं। दुकान पर कई प्लेवर की आइसक्रीम का भी आप आनंद ले सकते हैं। गिफ्ट पैक भी यहां उपलब्ध हैं। अजंता स्वीट्स पर अभिनेता विक्रम कोचर, आयुष्मान खुराना के भाई अपार शक्ति खुराना और कुमुद मिश्रा भी आ चुकी हैं। कुल मिलाकर अजंता स्वीट्स का सफर अभी जारी है और इनके मौजूदा के डायरेक्टर अमित आहूजा इसकी पहचान पूरे देश और विदेश में भी पहुंचाने की मंशा के साथ काम कर रहे हैं।

दीनानाथ की कुल्हड़ वाली लस्सी

दूध-दही नहीं, सीधे लस्सी और वह भी दीनानाथ की। आप नावल्टी आएं और दीनानाथ की लस्सी का स्वाद न लें यह तो हो नहीं सकता। 1962 में स्थापित यह ठिकाना नॉवल्टी चौराहा, सिविल लाइंस में पुराने बस अड्डे के पास है और अपनी पारंपरिक लस्सी के लिए जाना जाता है। दुकान में कई प्रकार की लस्सी हमेशा उपलब्ध रहती है। इसमें सादा और स्पेशल लस्सी तक शामिल हैं। अब तो यहां शुगर-फ्री लस्सी तक उपलब्ध है। इसकी शुरुआत 1962 में दीनानाथ जायसवाल ने की थी और अब यह तीसरी पीढ़ी द्वारा चलाया जा रहा है। लाजवाब लस्सी को दूध से दही जमाकर, चीनी और चिरौंजी के साथ फेंटकर और फिर ड्राई फ्रूट्स के साथ कुल्हड़ में परोसा जाता है।

बरेली के अलावा, आसपास के शहरों और यहां तक कि उत्तराखंड से भी लोग भी जब भी बरेली आते हैं इस दुकान पर इसकी लस्सी पीने आते हैं। आप यहां सुबह 8 बजे से रात 10 बजे तक लस्सी का आनंद ले सकते हैं। यहां तीन वैरायटी की लस्सी मिलती है, जिसमें साधारण लस्सी 50 की, नमकीन लस्सी 60 और स्पेशल लस्सी 70 रुपये की मिलती है, जिसे लोग काफी पसंद करते हैं

ये दुकान लगभग 63 साल पुरानी है। वर्तमान में दुकान के मालिक तीसरी पीढ़ी के निशांत जायसवाल ने बताया कि उनसे पहले उनके पिताजी और दादा दुकान संचालित करते थे। लगातार तीन पीढ़ियों से दीनानाथ की मशहूर लस्सी अपने ग्राहकों को लुभा रही है। निशांत का कहना है कि लस्सी को बनाते समय दूध से लेकर ड्राई फ्रूट तक सभी चीजें अच्छी क्वालिटी की इस्तेमाल होती हैं। इस दुकान को चलाने में निशांत जायसवाल के साथ ही इनके ताऊ के बेटे आशु और चाचा का बेटा प्रियांशु जायसवाल भी पूरे मनोयोग से जुटे रहते हैं। निशांत के दादा ने जब यह दुकान खोली थी तो उस समय यह पांच रुपये में उपलब्ध रहती थी।

चटपटी चाट का ठिकाना चमन चाट भंडार

अगर आप चटपटी चाट के शौकीन हैं और तरह-तरह की चाट का मजा लेना चाहते हैं तो पहुंच जाएं चमन चाट भंडार पर। सिविल लाइंस में हनुमान मंदिर के सामने यह वही जगह है जो आज भी अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की पसंदीदा चाट की दुकान बनी हुई है। प्रियंका जब कभी भी बरेली आती हैं तो यहां चाट का मजा लेने जरूर आती हैं। यह दुकान कई तरह की स्वादिष्ट चाट के लिए मशहूर है, जो घर के बने मसालों से तैयार की जाती हैं। आज यह सिर्फ एक ठेला नहीं, बल्कि सुरमे और झुमके की तरह बरेली की पहचान बन चुका है। इसे जमैटो पर ऑनलाइन ऑर्डर कर भी मंगाया जा सकता है। रोजाना करीब 3 बजे से लेकर रात 11 बजे तक यह काउंटर खुला रहता है।

चमन चाट भंडार सोशल मीडिया पर भी चर्चा का विषय बना हुआ है। शाम के समय यहां अपनी बारी के लिए चाट के शौकीनों को लंबी कतारें लगानी पड़ी है। इस दुकान पर चाट के अलावा आलू की टिक्की, पापड़ी चाट, भल्ला पापड़ी, चाउमीन, बर्गर, पाव भाजी, दही भल्ला, भल्ला पपड़ी और आटे व सूजी के गोलगप्पे जैसी कई प्रकार की चाट मिलती हैं। चाइनीज़ फ्यूजन जैसे आलू बर्गर और चाऊमीन भी आकर्षण का केंद्र है।

वर्तमान में जितेन्द्र तलवाड़ और विशाल तलवाड़ की पिता-पुत्र की जोड़ी चमन चाट भंडार के कर्ता-धर्ता हैं। जितेन्द्र तलवाड़ ने बताया कि उनके पिता चमन लाल तलवाड़ ने 1960 में एक छोटे से ठेले पर इसकी शुरुआत की थी। उस वक्त उन्हें अंदाजा नहीं था कि आज उनकी यह छोटी सी ठेली शहर ही नहीं बल्कि बाहर से आने वाले लोगों के जुबान पर चढ़कर बोलने लगेगी। शुरू में वह कुमार सिनेमा के पास ठेला लगाते थे। समय बदला और शहर में भीड़ बढने के साथ ही चाट के शौकीन भी बढ़ने लगे तो 1970 में उन्होंने हनुमान मंदिर के सामने नया ठिकाना बना लिया। इसके साथ ही चाट की वैरायटी भी बढ़ने लगी। आज हालत यह है कि चाहे कितनी भीड़ हो चमन चाट भंडार से कोई ग्राहक खाली नहीं लौट सकता। यहां 20 रुपये से लेकर 80 रुपये तक की चाट का स्वाद आप ले सकते हैं।

चौरसिया पान भंडार

अगर आप बरेली में रहते हैं और कुतुबखाना जाते वक्त सिविल लाइंस में चौरसिया पान भंडार से पान का स्वाद नहीं लेते हैं तो आप भूल कर रहे हैं। गुणवत्तापूर्ण सामग्री और स्वादिष्ट स्वाद के लिए प्रतिबद्ध यह ठिकाना पान के शौकीनों के लिए एक ऐसी जगह है जहां दिल को एक ठंडक सी मिलती है। यह स्थान सिविल लाइंस में स्थित एक प्रसिद्ध और 55 साल पुराना पान भंडार है, जो अपने अनोखे स्वाद वाले पान और वर्तमान में स्ट्रीट फूड के लिए भी जाना जाता है। यह अपनी पारंपरिक सामग्री, स्वादिष्ट स्वाद और ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा देने के लिए प्रसिद्ध है। यहां कई प्रकार के पान मिलते हैं, जिनमें चॉकलेट पान, बटरस्कॉच पान, मीठा पान, तम्बाकू पान और फायर पान जैसी कई वैरायटी उपलब्ध हैं। यहां आप दोपहर 12 बजे से लेकर रात एक बजे तक पान का आनंद ले सकते हैं।

वर्तमान में इस पान भंडार को चला रहे राकेश चौरसिया उर्फ गुड्डे भाई ने बताया कि आज से करीब 55 वर्ष पहले उनके पिता मुन्ना लाल चौरसिया ने 1971 में इसकी नींव रखी थी। शुरुआत में यहां 25 से लेकर 50 पैसे तक में लोग पान का आनंद लेते थे।

तोलाराम की मशहूर मटका कुल्फी

कभी बांस बरेली के नाम से मशहूर अपना बरेली आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। झुमका और सुरमा वाली बरेली आज की तारीख में देश के बड़े-बड़े शहरों की कतार में खड़ी है। कुल 4120 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले बरेली की अपनी अलग पहचान है। चाहें कोई भी क्षेत्र हो बरेली के लोगों ने अपनी अलग छाप छोड़ी है। यहां का रहन-सहन और खान-पान भी किसी से कम नहीं है। पुराने और नए खान-पान को लेकर बरेली ने लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बना ली है। बरेली के किसी न किसी कोने में सुबह से लेकर रात तक आप खान-पान की विशेष चोजों का आनंद ले सकते हैं।

बात शहर की हो तो कोतवाली के सामने ही तोलाराम की मटका कुल्फी के स्वाद को तो हजारों ही नहीं लाखों लोग जानते ही होंगे। तोलाराम की फालूदा कुल्फी का तो कोई जवाब नहीं है। सिविल लाइंस कोतवाली के सामने स्थित तोलाराम कुल्फी की दुकान वर्ष 1950 में, वर्तमान में इसे संचालित कर रहे तीसरी पीढ़ी के जवाहर लाल तनेजा के दादा तोलाराम जी ने भविष्य के बड़े सपनों के साथ खोली थी। उन्होंने अपनी देखरेख में दूध, मेवा और चीनी को मिलाकर शुद्ध मटका कुल्फी बनाना शुरू किया था।

पहचान बन चुकी अंग्रेजों के समय की फर्न्स बेकरी

सिविल लाइन्स इलाके में बलवंत सिंह मोटर मार्ग पर अंग्रेजों के जमाने की फर्न्स बेकरी किसी पहचान की मोहताज नहीं है। बेकरी की शुरुआत आजादी से पहले एक अंग्रेज फर्नान्डीज ने अपनी बेटी फर्न्स फर्नान्डीज के नाम से की थी। बताया गया कि 90 साल की हो चुकीं फर्न्स आज भी जीवित हैं और लंदन में कहीं रह रही हैं। 1950 तक कोई ईसाई फैमली इस बेकरी को चला रही थी। बाद में केयरटेकर को सौंप यह फैमली भी लंदन चली गई। समय गुजरा और अब खां फैमली के हाथों यह बेकरी है।

मौजूदा समय में चार भाई जाहिद अली खां, मुशाहिद उर्फ दिलशाद, शाहबाज और फरात इस बेकरी के कर्ताधर्ता हैं। बड़े भाई जाहिद अली ने बताया कि उनके पिता मुबारक अली खां और ताऊ मोहम्मद अली ने 1972 में इस बेकरी को खरीद एक नई शुरुआत की और बेकरी नाम फर्न्स बेकरी ही रखा। फर्न्स बेकरी में आज आप कई वैरायटी की पेस्टी और पेटीज का आनंद ले सकते हैं। पेस्टी में चाकलेट-बटर पेस्टी काफी लोकप्रिय है जो 30 रुपये प्रति पीस में उपलब्ध है। पाइन एप्पल और ब्लैक फारेस्ट पेस्टी के ग्राहक भी बहुत हैं। इसके अलावा चिकन, वेज और पनीर से भरी पेस्टी की भी काफी डिमांड रहती है। आलू भरी पेटीज 20 रुपये प्रति पीस में आप ले सकते हैं। जाहिद अली का कहना है कि उनके यहां बनने वाले सारे आइटम फ्रेस क्रीम से ही बनते हैं।

किप्स स्वीट्स: तख्त से आलीशान दुकान तक

किप्स ऑन द लिप्स

लोकप्रिय मिठाइयां

बरेली की बर्फी, मूंग की दाल और घी से बनी रसभरी, ड्राईफ्रूट्स वाले लड्डू खोये से बने और चाशनी में डूबे गुलाब जामुन, मोतीचूर लड्डू, सोहन पापड़ी और विभिन्न प्रकार के खोया और छेना से बनी मिठाइयां। इनके अलावा, किप्स कई अन्य प्रकार की मिठाइयां भी बेचता है जैसे बालूशाही, डोडा बर्फी, खीर कदम, और बेसन लड्डू। किप्स की मिठाइयों की लोकप्रियता इतनी है कि विदेशों तक से लोग आनलाइन आर्डर करके मंगाते हैं।

एक तख्त से शुरु हुआ किप्स स्वीट्स का सफर किसी परीकथा से कम नहीं है। आज के संदर्भ में देखें तो इनका स्लोगन-किप्स आन द लिप्स अपने नाम को सार्थक करते हुए देश-विदेश में एक पहचान बना चुका है। आज किप्स की मिठाई बरेली में एक पहचान है जो अपनी पारंपरिक मिठाइयों के लिए जाना जाता है। इनकी सबसे प्रसिद्ध मिठाई बरेली की बर्फी है जो मुलायम बनावट और भरपूर स्वाद के लिए जानी जाती है। इनके अन्य लोकप्रिय उत्पादों में काजू बर्फी, रसभरी, ड्राई फ्रूट लड्डू, और सोहन पापड़ी आदि शामिल हैं। मक्खन समोसा तो इनका इतना लाजवाब है कि देखते ही मन खाने को ललचा जाए। बेहतर स्वाद और शुद्धता वाला काजू दालमोठ का पैकेट तो इनका खास है जिसके लोग दीवाने हैं।

सुरमे और झुमके की तरह ही किप्स की मिठाई भी आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। 1972 में तख्त पर एक छोटी सी दुकान से इसकी शुरुआत देवेन्द्र खंडेलवाल ने की थी। यह अब बरेली ही नहीं देशभर में एक प्रसिद्ध मिठाई की दुकान के रूप में विकसित हो गई है। विदेशों में भी जो लोग यहां से जाकर बस गए हैं वह भी यदा-कदा मिठाइयां मंगाते रहते हैं या फिर कभी बरेली आते हैं तो ढेर सारी मिठाइयां ले जाते हैं। किप्स के आउटलेट माडल टाउन और राजेन्द्रनगर में भी हैं। वर्तमान में सिर्फ बरेली की जनता के लिए ही नहीं बल्कि बॉलीवुड अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा, परिणीति चोपड़ा, दिशा पाटनी समेत कई बड़े-बड़े कलाकार और राजनेताओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। यहां के स्पेशल ड्राईफ्रूट्स लड्डू मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी काफी पसंद हैं। उनके लिए हर माह या विशेष अवसरों पर ड्राईफ्रूट्स लड्डू भेजे जाते हैं। देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी भी किप्स की मिठाइयों के मुरीद रहे हैं। वर्तमान में प्रसाद सिनेमा के सामने स्थित किप्स स्वीट शॉप के संचालक राहुल खंडेलवाल के अनुसार यहां प्रत्येक दिन सभी मिठाइयां ताजी मिलती हैं। इन मिठाइयों को बनाने के लिए बेहतर क्वालिटी का सामान प्रयोग किया जाता है। अपने ग्राहकों को वह शुद्ध उत्पाद देने में विश्वास करते हैं, जिससे उनका भरोसा हम पर इसी प्रकार बना आ रहा है। राहुल खंडेलवाल ने बताया कि अभी दिसंबर में पूर्व कंट्रीय मंत्री और वर्तमान में झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार के बेटे की शादी होनी है लेकिन मिठाइयों के आर्डर अभी से मिलने लगे हैं।

कुछ खास है त्यागी रेस्टोरेंट की कचौड़ी वाली थाली

अगर आप कचौड़ी खाने के शौकीन हैं और कुतुबखाना पहुंचकर नावल्टी चौराहा के पास पुराने बस अड्डे की तरफ मुड़ते हैं तो अचानक कचौड़ी की खुशबू आपको अनायस त्यागी रेस्टोरेंट में जाने के लिए मजबूर कर सकती है। यह दुकान करीब 61वर्षों से संचालित हो रही है। इसकी शुरुआत 1964 में वीके शर्मा ने की थी। उनके बाद वीके त्यागी ने इसकी कमान संभाली। वर्तमान में त्यागी परिवार के एक करीबी रिश्तेदार इसे चला रहे हैं। त्यागी रेस्टोरेंट में चार कचौड़ी, कद्दू की सब्जी, छोले की सब्जी, आलू टमाटर की सब्जी और अचार के साथ आप भरपेट भोजन का आनंद ले सकते हैं। आप घर बैठे स्विगी के माध्यम से भी आर्डर कर खाद्य सामग्री मंगा सकते हैं।

इसका मैन्यू पुराना है जो आज तक चला आ रहा है। आलू की सब्जी जरूर चटपटी है लेकिन कद्दू की सब्जी मीठी मिलेगी जिसे यहां बड़े चाव से खाया जाता है। सब कुछ गरमा-गरम और ताजा मिलेगा। वर्तमान में अब इस रेस्टोरेंट के बगल में छोले-भटूरे और छोले समोसे का भी आनंद लिया जा सकता है। पूरा त्यागी परिवार इन दोनों सिस्टम को चला रहा है. उनका कहना है कि 12 महीने हमारा स्वाद आपको एक जैसा ही मिलेगा।

प्रस्तुति-एल.एस. भंडारी, अनिल पटेल

अमृत विचार

मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

ज्ञान वह हथियार है जो हारने वाले को विजेता बनाता है। एक व्यक्ति को जीवन भर कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए।
–चाणक्य, राजनीतिज्ञ

चाहिए समग्र समाधान

उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम की समय-सीमा को निर्वाचन आयोग द्वारा एक सप्ताह बढ़ा दिया जाना केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि उस दबाव की स्वीकारोक्ति भी है, जो इस अत्यंत विस्तृत प्रक्रिया पर शुरू से ही साफ दिख रहा था। मतदाता सूची पुनरीक्षण अपने आप में एक विशाल अभियान है। हर घर जा कर सत्यापन, नए मतदाताओं का पंजीकरण, मृत अथवा स्थानांतरित मतदाताओं का विलोपन और त्रुटियों का सुधार, जिसके लिए समय और संसाधनों की पर्याप्त आवश्यकता होती है। ऐसे में समय वृद्धि का यह निर्णय पूरे अभियान की गति, विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाला है। निर्वाचन आयोग की यह स्वीकारोक्ति कि कम समय सीमा जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं, बीएलओ और अधिकारियों के लिए भारी समस्या पैदा कर रही थी, अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह बात समझना कठिन नहीं कि उत्तर प्रदेश जैसा जनसंख्या और भौगोलिक विस्तार वाला राज्य किसी भी राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए एक अलग कार्ययोजना और अपेक्षाकृत अधिक समय की मांग करता है। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आयोग को यह पूर्वानुमान पहले क्यों नहीं था? क्या यह अदूरदर्शिता नहीं कही जाएगी कि इतनी बड़ी प्रक्रिया को शुरू से ही सीमित समय में बांधा गया और फिर दबाव बढ़ने पर पुनः संशोधन की जरूरत पड़ गई? समय वृद्धि का सबसे बड़ा लाभ निःसंदेह बीएलओ और आम मतदाताओं को मिलेगा। बीएलओ पर वर्षों से काम का अतिरिक्त बोझ, अपर्याप्त प्रशिक्षण तथा जटिल एसआईआर रिपोर्टिंग की बाध्यता लगातार मानसिक और शारीरिक तनाव बढ़ाती रही है। मुरादाबाद में एक बीएलओ की दुखद मृत्यु और विपक्ष के इस आरोप कि भारी दबाव के चलते 20 बीएलओ अब तक आत्महत्या कर चुके हैं, एक गंभीर चेतावनी है। इस स्थिति में निर्वाचन आयोग को केवल खंडन या औपचारिक बयान भर नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर कठोर सुधारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए। कार्यभार का संतुलित बंटवारा, तर्क संगत डेडलाइन, सुरक्षित कार्य-परिस्थितियां तथा मनोवैज्ञानिक सहायता जैसे कदम अत्यंत आवश्यक हैं।

आज भी मतदाता सूची में संशोधन अथवा नए मतदाता के रूप में पंजीकरण करना, कागजी फॉर्म हो या ऑनलाइन प्रक्रिया- आम लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण है। देश में आधार, पैन, पासपोर्ट और बैंकिंग जैसी सेवाओं का व्यापक डिजिटलीकरण हो चुकने के बाद निर्वाचन आयोग अगर इन नियामक संस्थाओं के डाटा का प्रामाणिक उपयोग कर एक सरल, एकीकृत सत्यापन प्रणाली विकसित करता, तो मतदाता पंजीकरण न केवल सहज होता, बल्कि पुनरीक्षण प्रक्रिया भी अधिक कुशल और लगभग त्रुटिरहित बन सकती थी। फिलहाल केवल एक सप्ताह की समयवृद्धि से यह उम्मीद कि यह प्रक्रिया पूरी तरह सटीक और त्रुटिरहित हो जाएगी, व्यावहारिक नहीं। इससे इतना भर होगा कि कार्यकर्ताओं पर तात्कालिक दबाव घटेगा और कुछ हद तक गुणवत्ता में सुधार संभव है। बीएलओ की आत्महत्याओं पर रोक के लिए केवल समय बढ़ाना पर्याप्त नहीं, कार्यप्रणाली की समग्र समीक्षा और मानवीय दृष्टिकोण से बदलाव आवश्यक है।

प्रसंगवश

मौसम का पूर्वाकलन व नैतिकता का सवाल

इस बार बहुत ज्यादा सर्दी पड़ने वाली है, ऐसी खबरें मीडिया-सोशल मीडिया पर तैर रही हैं। गलत सूचनाओं से न सिर्फ लोगों का जीवन बल्कि इससे बाजार भी प्रभावित होता है। आने वाला मौसम कैसा होगा, इसकी सटीक भविष्यवाणी कर पाना इतना आसान नहीं है। ला-नीना फिनॉमीना का विगत का प्रीडिक्शन चार्ट और इसके बाद का घटनाक्रम देखने से मालूम होता है कि इसमें भविष्याकलन के बाद असली प्रभाव तीन-चौथाई या मिश्रित रहा है, जिसमें इलाका अथवा प्रभावित क्षेत्र बदल गया। प्रीडिक्शन के बारे में बताने के लिए एथिकल गाइडलाइन्स का ध्यान रखना जरूरी है। इसके पश्चात-प्रभावों पर किसी की नज़र नहीं पड़ती।

इस बार भीषण शीत रहेगी या नहीं रहेगी, यह जो जनवरी महीना

रनबीर सिंह
विज्ञान लेखक

बताएगा, जिसमें अभी एक महीने बाद का समय है। जो होगा वह 15 दिसंबर 2025 से 15 जनवरी 2026 के बीच मालूम हो जाएगा। हिमालय और इससे परे सुदूर उत्तर में रूस और चीन के इलाकों, हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों और भारत के मैदानी इलाकों के मौसम संबंधी असली आंकड़े देखने के बाद भारत में ला-नीना के असर के प्रकट होने के बाद ही इस बारे में कुछ कहना उचित होगा।

अभी से कह देना कि इस बार बहुत सर्दी पड़ेगी, उचित नहीं है। इस बार की सर्दी की ऋतु में कड़ाके की ठंढ होने या असल में हाड़ कंपाने वाली सर्दी पड़ने और नॉर्दन मोस्ट लैटिट्युड्स में इसके असर के बारे में ताज़ा वेदर रिपोर्ट्स का इंतजार करना नैतिकता का तकाज़ा है। मौसम के अल्पकालीन मिजाज़ के बारे में एक आकलन के बारे में कह देना काफी नहीं है, बल्कि वह एकदम से सत्य जैसा नहीं दिखना चाहिए बल्कि संभावना जैसा होना चाहिए। मास-मीडिया में सामान्य संभावना को बढ़ा-चढ़ा कर, अलंकारयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए भय और रोमांच पैदा करना एक खबरनुमा टेक्स्ट को कथा-कहानी बना देता है। ब्लो-अप करने के प्रयास की इकॉनोमिक और सोशल कॉस्ट बहुत होती है। एथिक्स का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

मौसम के बारे में विदेश से आई सूचना को आधार बना कर वस्तुस्थिति को जस का तस भारतीय मीडिया में चस्पा करना उचित नहीं है, बल्कि लोकल एक्सपर्ट्स और साइंटिस्ट्स से जान लेना जरूरी होता है। खेद है कि ऐसी ख़बरों के बारे में भारत का मौसम विज्ञान विभाग कोई टिप्पणी डिफेमेशन से बचने के लिए नहीं करता। उनकी अपनी वेबसाइट पर भी विदेशी जानकारी चस्पा रहती है, जिस पर उनकी कोई टिप्पणी नहीं होती।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिससे मध्य और पश्चिमी प्रशांत महासागर और तापमान और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज़ पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत् निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेश की खबर में, जिसे अनेक भारतीय चैनल्स ने उठाया है कि ऊपर की हवा मे 'रिवर्स गीयर' लग गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथ्वी की सतह से ऊपर होने वाली एक विशाल मशीनरी का यह नियमित व्यवहार है, जिसमें पोलर एयर करेंन्ट्स के भूमध्य रेखा के ऊपर उमड़ना-घुमड़ना एक सामान्य चर्या होती है। अमेरिका संचालित नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों के अनुसार, जिसे भारत मौसम विभाग का अनुमोदन भी प्राप्त है, हवाएं पश्चिमी से पूर्वी दिशा में तेजी से उलट रही हैं, जो सामान्य से दो-तीन महीना पहले हो रहा है। खासतौर से इसकी वजह से ला-नीना भी प्रभावित होगा।

खर्चीली शादियां दिखावे की आखिर इंतेहा क्या है!

अनिल त्रिगुणायत
लखनऊ

समय के साथ सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। जो कल था वह अतीत। जो आज है वह समयानुकूल और संभावित कल ही भविष्य। परिवार, कुनबा, समुदाय व समाज की सोच में समयानुरूप बदलाव समीचीन भी। समुचित आय व धन प्रवाह ने बाजार की रूपरेखा भी परिवर्तित कर दी है, लेकिन भारतीय बाजार का अवलंब की मान्यता वाला मध्यम वर्ग जीवन के कुछ उद्देश्यों से कदाचित भटक सा गया है। नई पीढ़ी जिसने दिखावे को अपना 'जीवन दर्शन' मान लिया है। विशेषतया खर्चीली शादियों को, जो 'अंतहीन होड़' की ओर चल पड़ी है।

विवाह हमारी संस्कृति का अतिआवश्यक संस्कार माना जाता है, लेकिन वर्तमान में होने वाले शादी-विवाह एक संस्कार न होकर 'सेलिब्रेशन व फैशन' की भेंट चढ़ता दिख रहा है। वैवाहिक आयोजन आज पूर्णतया बाजारवाद की गिरफ्त में आ चुका है। टीवी सीरियल और सोशल माडिया के 'रील्स' में दिखाए जाने वाले वैवाहिक 'चोंचलेबाजी' आज अधिकांश घरों में देखने को मिल रही है। विवाह की रस्मों अर्थात हल्दी, मेहंदी, संगीत, जयमाला, सप्तपदी, फेरे व सिंदूर-दान आधुनिक दिखावे की भेंट चढ़ चुके हैं। ऐसे नितांत पारिवारिक आयोजनों को बाजार ने एक बड़ा इवेंट बना दिया है। वैवाहिक बंधन में बंधने के पूर्व प्री-वेडिंग व डेस्टिनेशन वेडिंग के नाम पर अंधाधुंध खर्च किया जाने लगा है। नृत्य-संगीत, महंगे ड्रेसेज, नाना प्रकार के व्यंजनों वाले लंच-डिनर और उपहारों के आदान-प्रदान से मध्यम वर्ग के 'पांव चादर से बाहर' हो रहे हैं।

समाज में दिखावे का जज्बा यह कि संबंधित परिवार कर्ज लेकर हैसियत से अधिक खर्च कर रहे हैं। अधिकांश गार्जियन तो अपने जीवन की पूरी जमा-पूंजी शादी के दिखावे में 'हवन' कर दे रहे हैं। दिखावटी विवाहोपरांत इस वर्ग में पारिवारिक कलह, बिखराव व भांति-भांति की परेशानियां घर कर जा रही हैं। कई परिवार तो कर्ज के दलदल में ऐसे धंस रहे, जहां से वे जीवनपर्यंत नहीं निकल पा रहे हैं। प्रतिष्ठा का प्रतीक बनती दिखावे वाली शादियां समाज के लिए 'नासूर' बनती जा रही हैं। सोशल मीडिया पर ट्रेंड करते वैवाहिक वीडियोज तो आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। ऐसा केवल शहरों में ही नहीं हो रहा, बल्कि अब गांवों में भी देखने को मिल रहा है।

स्मरण करें, 1970 के दशक की शादियां प्रायः परंपरागत ही होती थीं। उस दौर की शादियां आपसी प्रेम व सादगी का पर्याय मानी जाती थीं। शहरों में न तो रिसार्ट होते थे, न ही अनगिनत मैरेज हाल। अधिकांश वैवाहिक कार्यक्रम वधू पक्ष के घरों में या उसके आसपास टेंट लगाकर कम से कम खर्च में संपन्न हो जाया करते थे। अधिकांश वैवाहिक कार्यकम एक रात में ही संपन्न होते थे। हां, ग्रामीण क्षेत्रों में उस वक्त दो दिन के बरात का चलन अवश्य था, जिसमें वर-वधू पक्ष एक-दूसरे के प्रति आदर भाव और सहयोगात्मक रवैया अपनाते थे। रिश्तों में मर्यादा सर्वोपरि व अपनत्व का भाव स्तरीय था। कम खर्च में शादियां हो जाया करती थीं। वर-वधू के रिश्तों में स्थिरता होती थी, दांपत्य जीवन अनचाही है, मुश्किलों से परे दिखता था। वर्ष 1980 के दशक की शादियां औपचारिकता व भव्यता का मिश्रण थीं।

वर्तमान में होने वाली शादियां संस्कार नहीं, वरन इवेंट का स्वरूप धारण करती जा रही हैं। समाज में अनावश्यक दिखावे का प्रचलन बढ़ गया है। धनाढ्य वर्ग की तरह ही मध्यमवर्गीय भी उसी प्रकार का दिखावा कर अपने बच्चों की शादियां कर रहे हैं। ऐसी शादियों में तथाकथित 'इवेंट मैनेजरों' की तो चांदी हो गई है। वर-वधू को अनेकानेक रस्मों में कब और क्या करना है, वही निर्णय ले रहे हैं। अब अधिकांश वैवाहिक कार्यक्रम एक रात का न होकर दो से तीन दिन तक का हो गया है। हल्दी, मेंहदी, द्वारचार, जयमाल, फेरों व विदाई के मामलों में इवेंट मैनेजर ही निर्णायक भूमिका निभाते दिख रहे हैं।

वर-वधू का मेकअप, पहनावा, तात्कालिक रहन-सहन, इवेंट वाले ही तय कर रहे हैं। डेस्टिनेशन वेडिंग का चलन तो अत्यंत खर्चीला हो चला है। शादियों में लकदक डेकोरेशन व जानदार आतिशबाजी के बीच राजसी वैभव, कैटरिंग के पर्दों से लेकर बर्तन तक भव्यतम हो चले हैं। सोशल मीडिया ने तो सामान्य परिवारों के लोगों को मानसिक रूप से धनाढ्य वर्ग के समीप ला खड़ा किया है। आज का वर-वधू 'नामचीन सेलिब्रिटी' की भांति ही विवाह करने का सपना देखता है। शादी के मंडप को फिल्मी सेट सरीखा बनाने को लालायित वह भूल जा रहा कि उक्त सेलिब्रिटी स्वयं के कमाए धन से खर्चीली शादियां कर रहे, अपना शौक पूरा कर रहे हैं। ब्याजखोरों, बैंक्स से महंगे ब्याज पर धन उधार लेकर अपनी शादी नहीं कर रहे।

शादी के स्थान की बात करें तो शहरों में छोटे बैंक्वेट, फाइव-स्टार हॉल से लेकर फार्महाउस तक, जगहों की कीमत अलग-अलग होती है। किसी बड़े होटल बैंक्वेट स्थल की कीमत सामान्यतया न्यूनतम सजावट, कैटरिंग आदि के साथ 20 से 30 लाख रुपये के मध्य तक तो होती ही है। कपड़ों व गहनों पर भी अमूमन 20 लाख रुपये खर्च हो ही जा रहे हैं। मध्यमवर्गीय परिवार अपने 'चादर का आकार' कदाचित भूलता जा रहा। परिणामस्वरूप 'मीडिया क्रेजी' शादियों में अनाप-शनाप खर्च कर कर्ज के जाल में फंस रहा है।

उन्हें खेती की जमीन, मकान, गहने तक को बेचना पड़ जा रहा है। शादी-विवाह पारिवारिक आयोजन होता है। इसे सादगीपूर्ण तरीके से ही संपन्न किया जाना चाहिए। रोज की जिंदगी में धन नितांत आवश्यक है, इसे बचाने की आवश्यकता है। इवेंट बनती शादियों में फिजूलखर्ची बुद्धिमानी तो कदापि नहीं है। मध्यमवर्गीय परिवारों को फिजूलखर्ची रोकने को चिंतन-मनन करना ही होगा। खास तौर पर संबंधित वर्ग के भावी वर-वधुओं को।

1970 के दशक की शादियां प्राय: परंपरागत ही होती थीं। उस दौर की शादियां आपसी प्रेम व सादगी का पर्याय मानी जाती थीं।

आमने

सभी से रिक्वेस्ट करूंगा कि जो मुद्दे हैं, उन पर सोचें। ड्रामा करने के लिए बहुत जगहें हैं। जो कोई भी ड्रामा करना चाहता है, कर सकता है। यहां ड्रामा नहीं, डिलीवरी होनी चाहिए। यहां नारों पर नहीं, पॉलिसी पर जोर होना चाहिए।
–नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

सामने

चुनाव की स्थिति, एसआईआर और प्रदूषण बहुत बड़े मुद्दे हैं। पार्लियामेंट किस लिए है? मुद्दे उठाना ड्रामा नहीं है। ड्रामा का मतलब है, चर्चा न होने देना। ड्रामा का मतलब है उन मुद्दों पर डेमोक्रेटिक चर्चा न करना जो जनता के लिए मायने रखते हैं। –प्रियंका गांधी
कांग्रेस सांसद

हास्य का विषय नहीं हो सकते हैं दिव्यांग

रमेश सर्राफ
स्वतंत्र पत्रकार

देश की सर्वाच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से दिव्यांगों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी से निपटने के लिए कड़े कानून बनाने पर विचार करने को कहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने एसएमए क्योर फाउंडेशन की याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार से दिव्यांगों और दुर्लभ आनुवंशिक विकारों से ग्रस्त व्यक्तियों का उपहास करने वाली अपमानजनक टिप्पणियों को अनुसूचित जाति-अनुसूचित जन जाति अधिनियम की तर्ज पर दंडनीय अपराध बनाने के लिए एक कानून बनाने को कहा है। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायामूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉय माल्या बागची की पीठ ने कहा कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अभद्र, आपत्तिजनक और अवैध सामग्री को नियंत्रित करने के लिए एक तटस्थ, स्वतंत्र और स्वायत्त निकाय की आवश्यकता है।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने इस बारे में पीठ को सूचित किया कि सरकार कुछ दिशा-निर्देश बनाने पर विचार कर रही है। केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि हास्य किसी की गरिमा की कीमत पर नहीं हो सकता। याचिका में इंडियाज गॉट लेटेंट के हॉस्ट समय रैना और सोशल मीडिया पर प्रभावशाली लोगों, विपुन गोयल, बलराज परमजीत सिंह घई, सोनाली ठक्कर और निशांत जगदीश तंवर के चुटकुलों की निंदा की गई थी। अदालत ने उन्हें भविष्य में अपने आचरण के प्रति सावधान रहने का निर्देश दिया। पीठ ने हास्य कलाकार रैना और अन्य को दिव्यांग व्यक्तियों, विशेष रूप से स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए धन जुटाने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की सफलता की कहानियों पर प्रत्येक माह दो कार्यक्रम या शो आयोजित करने का भी निर्देश दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक 'दिव्य क्षमता' है और उनके लिए 'विकलांग' शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी। इसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हें हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया, लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। तीन दिसंबर को विकलांग दिवस मनाया जाता है। विश्व विकलांग दिवस पर इस वर्ष का विषय है, सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए विकलांगता समावेशी समाजों को बढ़ावा देना। यह विकलांग व्यक्तियों को अपने भाग्य को आकार देने और समाज में योगदान देने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने के महत्व को रेखांकित करता है।

दुनिया में बहुत से ऐसे दिव्यांग हुए हैं, जिन्होंने अपने साहस, संकल्प और उत्साह से विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाया है। शक्तिशाली शासक तैमूर लंग हाथ और पैर से शक्तिहीन था। मेवाड़ के राणा सांगा तो बचपन में ही एक आंख गंवाने तथा युद्ध में एक हाथ एक पैर तथा 80 घावों के बावजूद कई युद्धों में विजेता रहे थे। महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख बचपन से ही खराब थी। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चंद्रन के दांई टांग नहीं है। फिल्म गीतकार कृष्ण चंद्र डे तथा संगीतकार रविंद्र जैन देख नहीं सकते थे। पूर्व क्रिकेटर अंजन भट्टाचार्य मूक-बधिर थे। वर्ल्ड पैरा चैम्पियनशिप खेलों में झुंझुनू जिले के दिव्यांग खिलाड़ी संदीप कुमार और जयपुर के सुंदर गुर्जर ने भाला फेंक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर भारत का मान बढ़ाया है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के पांचवें दौर का पहला चरण 2019-20 में आयोजित किया गया था। एनएफएचएस जनसंख्या, परिवार नियोजन, बाल और मातृ स्वास्थ्य, पोषण, वयस्क स्वास्थ्य और घरेलू हिंसा से संबंधित प्रमुख संकेतकों पर अनुमान प्रदान करता है। एनएफएचएस-5 सर्वेक्षण से एकत्र किए गए द्वितीयक डेटा के भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद प्रकाशन के विश्लेषण के अनुसार भारत में विकलांग लोगों की कुल व्यापकता जनसंख्या का 4.52 प्रतिशत है। यह डेटा दर्शाता है कि भारत में लगभग छह करोड़ 32 लाख 80 हजार लोग किसी न किसी प्रकार की विकलांगता के साथ जीवन यापन करते हैं। लोकोमोटर (गतिशील) विकलांगता सभी विकलांगताओं में सबसे आम है, इसके बाद मानसिक और वाक् (बोलने से संबंधित) विकलांगताएं हैं।

भारत में आज भी दिव्यांगता प्रमाण पत्र हासिल करना किसी चुनौती से कम नहीं है। सरकारी कार्यालयों और अस्पतालों के कई दिनों तक चक्कर लगाने के बाद भी लोगों को मायूस होना पड़ता है। हालांकि सरकारी दावे कहते हैं कि इस प्रक्रिया को काफी सरल बनाया गया है, लेकिन हकीकत इससे काफी दूर नजर आती है। दिव्यांगता का प्रमाणपत्र जारी करने के सरकार ने जो मापदंड बनाए हैं। अधिकांश सरकारी अस्पतालों के चिकित्सक, उनके अनुसार दिव्यांगों को दिव्यांग होने का प्रमाण पत्र जारी ही नहीं करते हैं, जिसके चलते दिव्यांग व्यक्ति सरकारी सुविधाएं पाने से वचिंत रह जाते हैं। दिव्यांग लोगों के प्रति अपनी सोच बदलने का समय आ गया है।

समय रैना एक बार फिर विवादों में है। यह विवाद शुरू हुआ एक कार्यक्रम में दिव्यांगों का मजाक बनाए जाने पर। सुप्रीम कोर्ट ने उनसे भविष्य में अपने आचरण के प्रति सावधान रहने को कहा है।

सोशल फोरम

पांडव पुत्रों का पालन और आज की पैरेंटिंग

महाभारत में एक गहरा प्रसंग आता है। पांडु की मृत्यु के बाद कुंती और माद्री दोनों सती होना चाहती थीं, पर माद्री ने कहा, "यदि आप सती हो गईं और मैं रह गई, तो मैं आपके तीनों बच्चों का पालन वैसे

नीलेश गुप्ता
ब्लॉगर

नहीं कर पाऊंगी, जैसे आप कर सकती हैं। अगर मैं सती हो जाऊं और आप रहें, तो आप मेरे दोनों बच्चों- नकुल और सहदेव को भी अपने ही बच्चों की तरह पाल लेंगी। दुनिया यही मानेगी कि कुंती के पांच पुत्र हैं।"

हुआ भी यही। एक स्त्री, अभाव, जंगल, संघर्ष और विधवापन, इन सभी परिस्थितियों में पांच ऐसे पुत्र तैयार करती है, जो आगे चलकर 'धर्म के स्तंभ' कहलाते हैं। जिस दिन भगवान को यह निर्णय करना पड़ा कि वे किसके पक्ष में खड़े होंगे, भगवान ने पांडवों का पक्ष चुना, क्योंकि एक स्त्री ने कठिनाइयों में भी सही 'लालन–पालन' किया था। दूसरी ओर हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र जन्मांध थे और गांधारी ने भी अपने पति की परिस्थिति देखकर अपनी आंखों पर स्वेच्छा से पट्टी बांध ली। जब घर में पिता पहले से नेत्रहीन हो और मां भी पट्टी बांधने का निर्णय ले ले तो, यह भी लालन–पालन का ही परिणाम है। महाभारत यह सिखाती है कि पालन-पोषण केवल शरीर पालना नहीं, बल्कि चरित्र, विवेक और भविष्य बनाना है।

यही बात आज हमें समझ नहीं आती। जब मैं क्लास 3–4 में था, हमें सिर्फ एक पेंसिल दी जाती थी। दूसरी पेंसिल तभी मिलती थी, जब पहली पूरी खत्म हो जाए और उसका फिज़िकल प्रूफ दिखाना पड़े। अगर पेंसिल खो जाए, तो नई पेंसिल नहीं मिलती, उल्टा डांट मिलती। इसी से हमने कम में मैनेज करना, पेंसिल बचाकर चलाना, दोस्तों से शेयर करना और हर चीज़ का मूल्य समझना सीखा। हम धीरे-धीरे रिसोर्सफुल बनते गए।

और आज? बच्चे रोज़ पेंसिल खो देते हैं और माता-पिता बिना पूछे रोज़ नई पेंसिल थमा देते हैं। बच्चे को न यह पता है कि चीज़ कहां से आती है? न इसका मूल्य क्या है? न जिम्मेदारी क्या होती है? अगर एक दिन पैरेंट कह दे, "आज नई पेंसिल नहीं मिलेगी"

महाभारत आज भी यही सिखाती है, पैरेंटिंग भविष्य बनाती है। कुंती ने अभावों में भी पांच धर्म–पुत्र बनाए। गांधारी ने आंखें बंद कर लीं। आज हम क्या कर रहे हैं? हम बच्चों को हर मुश्किल से बचा रहे हैं और इसी में उन्हें कमजोर बनाते जा रहे हैं। पैरेंटिंग का मतलब सुविधाएं देना नहीं, संस्कार, जिम्मेदारी और संघर्ष–क्षमता देना है।

सामयिकी

इन्हें काम नहीं कलम और किताब चाहिए

यूनीसेफ के एक सर्वे के अनुसार विश्वभर में 150 मिलियन बाल श्रमिक हैं। विश्व में बाल श्रमिकों की सबसे अधिक संख्या भारत में है। एक आकलन के अनुसार भारत में लगभग 33 मिलियन बाल श्रमिक हैं। फैक्टरियों, होटलों, रेस्टोरेंट, बागानों में काम करते, बोझा ढोते तथा जूते साफ करते बच्चे क्या बन पाते हैं-अशिक्षित, असमर्थ और साधनविहीन नागरिक, जो दूसरों की मर्जी के मुताबिक काम करने को मजबूर हैं। घर की जिम्मेदारी उठाने के लिए विभिन्न जोखिम भरे कार्यों में लगे दस-बारह वर्षीय बालक हमारे प्रजातंत्र के समानता के अधिकार को खुली चुनौती हैं। यह बाल श्रमिक हमारी आर्थिक प्रगति के खोखलेपन को भी सिद्ध करते हैं।

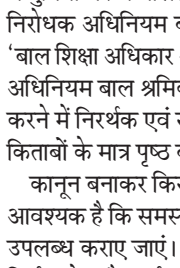

सुरेश बाबू मिश्रा
साहित्यकार

अनेकों मजदूर दिवस आए और चले गए। बाल श्रम को रोकने के लिए कानून बने। बाल श्रमिकों के लिए अनेकों कल्याणकारी योजनाएं बनीं। परंतु ग्यारह वर्षीय भोला के जीवन में इन सबसे कोई परिवर्तन नहीं आया। उसके नन्हे-नन्हे हाथ पूरे दिन लोगों के सैंडिल एवं जूते चमकाते रहते हैं। कभी-कभी अधिक रुपये पाने की लालसा में वह अपनी इकलौती कमीज से ही बाबू लोगों के जूते चमकाने लगता है। पांच रुपये के स्थान पर दस रुपये मिल जाने पर भोला के चेहरे पर ऐसी चमक आ जाती है, मानो उसे दुनिया भर की दौलत मिल गई हो।

प्रेस किए हुए कपड़े घर-घर पहुंचाने के लिए दस वर्षीय हरनाम गली-गली चक्कर काटता रहता है। तीसरी कक्षा के बाद ही उसके पिता ने उसकी पढ़ाई छुड़वा कर उसे काम में लगा दिया। रंग-बिरंगे चमकदार कपड़ों को हरनाम बड़ी हसरत भरी निगाहों से छू-छू कर देखता है। उसके बालमन में भी अच्छे कपड़े पहनने की इच्छाएं मचलती हैं, मगर उसका मजबूर बाप उसे साल में केवल दो जोड़ सस्ते कपड़े ही बनवा पाता है। कई बार तो उसे दूसरे लोगों की उतरन से ही काम चलाना पड़ता है।

घरेलू कार्यों के अतिरिक्त देश में बीड़ी, दियासलाई, सूती वस्त्रों के कारखानों, जूट मिलों, चाय के बागानों, पीतल उद्योग, कलई उद्योग, चूड़ी उद्योग, कालीन उद्योग तथा कार एवं आटो रिपेयर सेंटरों में लाखों बाल श्रमिक काम करते हैं। इन उद्योगों में बाल श्रमिक बुरी तरह शोषित होते हैं। अल्प वेतन, अत्याधिक कार्य, दोषपूर्ण वातावरण, अनैतिक एवं अमानवीय शोषण बाल श्रमिकों की मुख्य समस्याएं हैं।

भारत सरकार द्वारा बाल श्रम को नियंत्रित करने तथा बाल श्रमिकों को अधिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए सन् 1953 में 'बाल अधिनियम' तथा सन् 1958 में 'कारखाना अधिनियम' बनाए गए। सन् 1975 में बंधुआ मजदूरी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सन् 2002 में दुनिया भर में बालश्रम को रोकने के लिए यूनीसेफ द्वारा बाल श्रम निरोधक अधिनियम बनाया गया। भारत सरकार द्वारा सन् 2009 में 'बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम पूरे देश में लागू किया गया। परंतु यह अधिनियम बाल श्रमिकों की दशा सुधारने एवं बाल श्रम को नियन्त्रित करने में निरर्थक एवं खोखले सिद्ध हुए हैं। यह अधिनियम कानून की किताबों के मात्र पृष्ठ बनकर रह गए हैं।

कानून बनाकर किसी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। आवश्यक है कि समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएं। बाल श्रम की मुख्य समस्या इनके मां-बाप का निर्धन होना है। वर्तमान समय में भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है, परंतु इसके बावजूद देश के 29 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन यापन करने को मजबूर हैं। आर्थिक विषमता की बढ़ती खाई भी बाल श्रम का प्रमुख कारण है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं एलआईजी 23, प्रथम तल, आशियाना फेस-1, कांठ रोड मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- सुनील कुमार सिंह*** 0591-3551286(कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2020/79034 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुरादाबाद होगा)।

परमसत्ता से जुड़ने की प्रक्रिया है अध्यात्म

अध्यात्म पथ स्वयं को समग्र रूप से जानने की, उस परमसत्ता से जुड़ने की तथा आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार की प्रक्रिया है। कितने ही लोग इस पथ पर चल पड़ते हैं। बड़े उत्साह के साथ शुरुआत करते हैं। फिर रास्ते में ही कुछ हिम्मत हार बैठते हैं। कुछ सांसारिक राग-रंग को ही सब कुछ मान बैठते हैं। कुछ संकीर्ण स्वार्थ-अहंकार के धंधे में उलझकर, जीवन के आदर्श से समझौता कर बैठते हैं। कुछ आलस्य-प्रमाद में भ्रमित होकर बहुमूल्य जीवन को यों ही बर्बाद कर देते हैं। इसमें प्रायः इस समझ का अभाव मुख्य कारक रहता है कि अध्यात्म चेतना के परिष्कार का विज्ञान है, जिसमें जन्म-जन्मांतरों से मलिन चित्त एवं भ्रमित मन के साथ वास्ता पड़ रहा होता है। अचेतन मन के महासागर को पार करते हुए चेतना के शिखर का आरोहण करना होता है। आगे बढ़ना होता है।

निःसंदेह मार्ग कठिन है। दुरूह है। पूर्व में कृत कर्मराशि जब पहाड़ जैसा चट्टानी अवरोध बनकर राह में खड़ी हो जाती है, तो साधक की आस्था डांवाडोल हो जाती है। सस्ती पूजा-पत्री, भोग-चढ़ावे व चिह्न पूजा के सहारे धर्म-आध्यात्म के पथ पर बहुत कुछ बटोरने के फेर में चला पथिक मार्ग में ही धराशाई हो जाता है। यहां तक कि नास्तिक हो जाता है और भगवान तथा समर्थ गुरु तक को कोसने लगता है। जबकि धर्म-अध्यात्म पथ का अपना विधान है, विज्ञान है। इसकी थोड़ी सी भी समझ साधक को राजमार्ग से विचलित नहीं होने देती। वह पगडंडियों में नहीं उलझता। धर्म-अध्यात्म की शुरुआत धार्मिकता की प्राथमिक कक्षा से होती है, जिसमें पूजा-पाठ से लेकर कर्मकांड का सहारा लिया जाता है, लेकिन स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन के साथ साधक की समझ भी सूक्ष्म होती जाती है। आस्तिकता के भाव के जाग्रत के साथ, श्रद्धा-निष्ठा परिपक्व होती है। इसी तैयारी के बाद अध्यात्म की कक्षा में प्रवेश मिलता है।

डॉ. प्रदीप द्विवेदी 'रमण'
आध्यात्मिक लेखक

आश्चर्य नहीं कि अध्यात्म पथ पर चलने वाले ऋषियों ने इसे छुरे की धार पर चलने के समान दुस्साध्य बताया है, लेकिन इस विकट पथ का वरण करने वाले मुमुक्षु पथिकों ने भी कब हार मानी है। मार्ग की दुरूहता को जानते हुए भी अंतस की पुकार के बल पर वे हर युग में इस पथ का संधान करते रहे हैं। किसी समर्थ के अवलंबन के साथ अपार धैर्य, अनंत श्रद्धा और अनवरत प्रयास के साथ अभीष्ट को सिद्ध करते रहे हैं। निःसंदेह समर्थगुरु (पूर्णगुरु) का अवलंबन कार्य को और सरल बना देता है। हमारा परम सौभाग्य है कि अवतारी गुरुसत्ता का सानिध्य हमें मिला। हमारे गुरुवर के सिद्धसूत्रों के साथ अध्यात्म का व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक स्वरुप हमारे लिए सहज सुलभ है, लेकिन इनको जीवन में वरण करने, धारण करने के लिए साहस, निष्ठा एवं तैयारी की न्यूनतम मांग है। आखिर हर मांग अपनी कीमत मांगता है, जो चीज जितनी कीमती होती है, उसका उतना ही मूल्य भी चुकाना होता है। एक किसान, व्यापारी व विद्यार्थी तन-मन व धन की सारी पूंजी झोंक देता है। तब कहीं जाकर समस्त सुख-सुविधाओं को त्यागते हुए एकांतिक प्रयास एवं निष्ठा के बल पर अभीष्ट मंजिल तक पहुंचता है। इसी प्रकार आध्यात्म पथ भी अपनी कीमत मांगता है, जिसमें चित्त-चेतना की शुद्धि एवं परिष्कार मुख्य है। स्वयं को गलाकर-मिटाकर सब कुछ पाने की कला अध्यात्म है। इसमें सबसे पहले चित्त का परिष्कार करना होता है। इसी के साथ जन्मों से अज्ञान के परदे में ढका आत्मज्ञान का सूर्य प्रकाशित होता है और अपने ईश्वरीय अस्तित्व का बोध कराता है। वैसे तो समर्थगुरु (पूर्णगुरु) एवं परमात्मा की कृपा तो सदा ही उनकी सभी संतानों पर अनवरत रुपों में बरसती रहती है। इसको ग्रहण करने व धारण करने की क्षमता का अभाव ही मुख्य कारण है कि अधिकांशतया जीवन इनसे रीता रह जाता है। जिस मात्रा में साधक-शिष्य इसको धारण कर पाता है, उसी अनुपात में उसका आत्मिक विकास होता है। अध्यात्म विज्ञान का कार्य अंततः जीवन का कायाकल्प है। मनुष्य में देवत्व का उदय है। यह उसकी अंतर्निहित दिव्य संभावनाओं व क्षमताओं का जागरण एवं विकास है।

आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण

चित्त के प्रक्षालन के साथ इसका परिष्कार प्रारंभ होता है, जो स्वयं में समयसाध्य एवं कष्टसाध्य प्रक्रिया है। अपार धैर्य, अटूट श्रद्धा एवं निरंतर प्रयास के साथ यह कार्य संपन्न होता है। बार-बार असफलता के बाद भी साधक हिम्मत नहीं हारता और बार-बार प्रयास करता है। हजार असफलताओं के बाद हजार बार प्रयास करने का जीवट और हर हार के बाद पुनः उठकर आगे बढ़ने का अदम्य साहस अध्यात्म पथ को परिभाषित करता है। अध्यात्म पथ पर अभीष्ट को उपलब्ध सभी साधकों के जीवन दृष्टांत इसी सत्य की गवाही देते हैं। परमपूज्य गुरुदेव ने इसके निमित्त आत्मनिरीक्षण, आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार व आत्मनिर्माण की प्रक्रिया का प्रतिपादन किया है। दैनिक जीवन में आत्मबोध से लेकर तत्वबोध की व्यावहारिक साधना को बताया है, जिसमें संयम, स्वाध्याय और सेवा के साथ उपासना, साधना, आराधना की त्रिवेणी में अवगाहन करना पड़ता हैं। परमपूज्य गुरुदेव का यह मार्गदर्शन साधक को अपनी स्थिति के अनुरूप सीखने को प्रेरित करता है और देर-सवेर आध्यात्म पथ पर चलते हुए आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण के महान उद्देश्य को पूर्ण करता है।

गुरुदेव व दैवी कृपा साथ रहते हुए भी साधक को एकाकी ही इस पथ को पार करना होता है। अपनी अंतरात्मा की पुकार पर आध्यात्म पथ पर आरूढ़ साधक इस मार्ग का सहर्ष वरण भी करता है। इसके लिए पथ के काटों की चिंता नहीं करनी। लोग क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसकी चिंता कौन करे? गुरुकृपा से अपनी आत्मा ही मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त है। लोग अंधरे में भटकते हैं। भटकते रहें। हम अपने विवेक के प्रकाश का अवलंबन कर स्वतः ही आगे बढ़ेंगे। कौन विरोध करता है, कौन समर्थन इसकी गणना क्या करनी हमें? अपनी अंतरात्मा, अपना साहस अपने साथ है और हम वही करेंगे, जो करना अपने जैसे सजग साधकों के लिए उचित और उपयुक्त है।

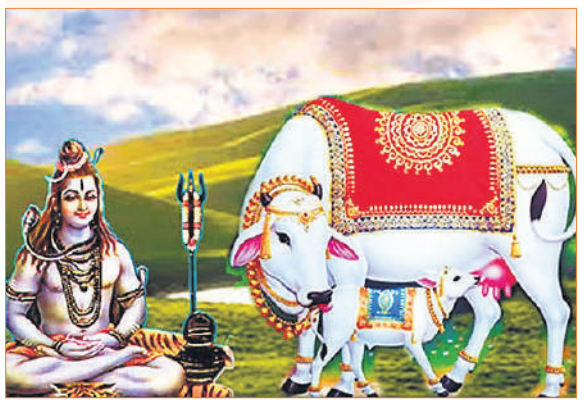

पौराणिक कथा

वृषभध्वज और गौ माता

महाभारत अनुशासन पर्व में वृषभ ध्वज की कथा आती है। एक बार गौ माता सुरभि का बछड़ा दूध पी रहा था। दूध पीते हुए बछड़े के मुख पर दूध की झाग लग गई। वही झाग हवा से उड़कर भगवान शंकर के मस्तक पर जा गिरी। ऐसा होने पर भगवान शिव कुछ क्रोधित हो गए। उस समय प्रजापति जी ने भगवान शंकर से कहा, "हे प्रभु! आपके मस्तक पर, जो दूध का छींटा पड़ा है। वह अमृत है। बछड़ों के पीने से गाय का दूध जूठा नहीं होता। जैसे अमृत का संग्रह करके चंद्रमा उसे बरसा देता है, वैसे ही रोहणी गायें भी अमृत से उत्पन्न दूध को बरसाती हैं। जैसे वायु, अग्नि, सुवर्ण, समुंद्र और देवताओं का पिया हुआ अमृत, कभी जूठे नहीं होते, वैसे ही बछड़ों को पिलाती हुई गौ भी कभी दूषित नहीं होती। ये गौमाता अपने दूध-घी से समस्त जगत का पोषण करती हैं। सभी लोग इन गौओं के अमृतमय पवित्र दूध रुपी ऐश्वर्य की इच्छा करते हैं।" तत्पश्चात प्रजापति जी ने महादेव जीको बहुत सी गौ और एक बैल दिया। इस पर शिवजी ने प्रसन्न होकर वृषभ अर्थात बैल को अपना वाहन बनाया और अपनी ध्वजा को उसी वृषभ के चिह्न से सुशोभित किया। इसी से उनका नाम 'वृषभ ध्वज' पड़ा। फिर देवताओं ने महादेव जी को पशुओं का स्वामी बना दिया और गौओं के बीच में उनका नाम 'वृषांक' रखा गया। **-फीचर डेस्क**

संस्कार: आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध

'संस्कार' मात्र धार्मिक कर्मकांड ही नहीं अपितु मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। यह मानव जीवन के सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं शैक्षिक मूल्यों को एक दिशा प्रदान करता है, जिसके आधार पर व्यक्ति दैहिक एवं भौतिक विकास के साथ ही सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कृत जीवनयापन करता है। संस्कारों का विधान अलौकिक पृष्ठभूमि में किया गया है तथा इनकी उत्पत्ति में मानवीय प्रवृत्तियों का विशेष येगदान माना गया है, जिनका आधार आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध है।

डॉ. रज्जन कुमार
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

संस्कार अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्वभव, वर्तमान जीवन एवं मृत्यु के पश्चात् भी गतिशील रहते हैं। संस्कृत साहित्य में मानव जीवन के इन विविध क्रमों से संबंधित संस्कार के कई प्रकार मिल जाते हैं। यद्यपि संस्कारों के भेद एवं उनके नामों के लेकर विद्वानों मे मतैक्य नहीं है फिर भी इस दिशा में एक रुपता लाने के प्रयास विद्वानों द्वारा समय-समय पर अवश्य हुए हैं। विद्वानों का इस दिशा में किया गया यह प्रयास ही संस्कारों को सुनियोजित एवं व्यावहारिक मूल्य प्रदान कर सका है। वर्तमान में मुख्य संस्कारों की संख्या कुछ नाम भेद के साथ 16 बताई गई हैं, जैसे-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, चूड़ाकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह एवं अन्त्येष्टि-श्राद्ध। इन षोडश संस्कारों में कुछ संस्कार आज भी भारतीय जनमानस में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं। जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, उपनयन, विवाह एवं अंत्येष्टि-श्राद्ध आदि संस्कारों में से उपनयन एवं विवाह संस्कार का सामाजिक जीवन के लिए तो महत्व अधिक है, परंतु इसके पीछे धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य का अभाव दृष्टिगोचर होता है। मृत्यु अथवा अन्त्येष्टि संबंधी संस्कार के पीछे धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य की प्रधानता होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि संस्कार संबंधी क्रियाओं को स्वीकार करने के पीछे भारतीय जनमानस में धार्मिक संचेतना के साथ-साथ आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्य की पृष्ठ भूमि भी गतिमान रही है। अतः हमें यह स्वीकार करने में कोई संशय नहीं रह जाता है कि आज भी संस्कार पहले की भांति धार्मिक एवं सामाजिक धरातल पर अपना अस्तित्व बनाए हुए है।

व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के वशीभूत होकर प्राप्त करता है एवं कुछ संस्कार उसकी मृत्यु के बाद भी कार्यरत रहते हैं।

व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के वशीभूत होकर प्राप्त करता है एवं कुछ संस्कार उसकी मृत्यु के बाद भी कार्यरत रहते हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि संस्कार पूर्वभव, वर्तमान जीवन एवं मृत्यु के पश्चात् भी गतिशील रहते हैं, जिनका मानव जीवन में अपना महत्व एवं मूल्य बना हुआ है। भारतीय संस्कृति में तीन प्रकार के शरीरों का वर्णन हुआ है-सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर एवं कारण या लिंग शरीर। इनमें स्थूल शरीर के द्वारा कृत कार्यों का समापन मृत्यु के उपरांत सूक्ष्म शरीर के द्वारा भी किया जाता है। तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म शरीर प्राप्त होने पर भी स्थूल शरीर द्वारा कृतकर्म क्षय को प्राप्त नहीं होते तथा पुनः जन्म लेने के बाद सूक्ष्म शरीरस्थ संस्कारों को व्यक्ति अपने क्रिया क्षेत्र में लाता है। क्योंकि प्रकृति के सूक्ष्म तत्वों से सभी प्रकार के शरीर बनते हैं, जो स्वरूपतः भौतिक हैं। अतः भौतिक पदार्थों से निर्मित शरीर को भैतिक सुखों की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म शरीर द्वारा किए गए कार्यों का संबंध स्थूल शरीर से होता है, जो हमारे मस्तिष्क में तथा स्थूल शरीर में व्याप्त हो जाते हैं, जो कि अन्य जन्मांतरों में साथ-साथ होने के कारण स्थूलशरीर द्वारा भोगे जाते हैं। सूक्ष्मशरीर की सत्ता का प्रमाण शास्त्रों में बहुधा प्राप्त होता है तथा बिना स्थूलशरीर के हम सब कुछ जान लेते हैं। उदाहरण स्वरूप जैसे नासिका के सामने कोई पुष्प लाया जाए तथा घ्राणेन्द्रिय का निरोध करके कान से यदि हम सूंघने का प्रयास करते हैं, तो कान रूपी इंद्रिय उस पुष्प की सुगंध को ग्रहण नहीं कर सकती। योगी लोग सूक्ष्म शरीर के स्थूल शरीर से पृथक कर सकते हैं तथा पुनः नए शरीर में भी प्रवेश कर सकते हैं। इस प्रकार वह स्वभावतः संस्कारों के भी बदल देते हैं। संस्कृत साहित्य में संस्कारों से संबद्ध परंपराओं एवं मान्यताओं का यथा स्थान विवेचन हुआ है, जिनसे यह संकेत मिलता है कि इस संसार में लौकिक एवं अलौकिक शक्तियां हैं, जिनके मध्य अटूट संबंध है, जो मानव जीवन को एक प्रेरणा प्रदान करता हैं। संस्कार यहां एक प्रेरकतत्व के रूप में विकसित हुआ है, जो मनुष्य को कई प्रकार की लौकिक एवं अलौकिक शक्तियों से युक्तकर उसके जीवन में सुख-शांति का आधान करता है। संस्कार जीवन के विभिन्न अवसरों पर संपन्न एवं आयोजित किए जाते हैं। तदनुसार ये अवसर एवं जीवन को महत्व एवं पवित्रता प्रदान करते हैं। संस्कार कदाचित् जीवन की घटनाओं के प्रति मनुष्य के भीतर व्याप्त उदासीनता को कम करने की प्रेरणा प्रदानकर जीवन के विकास के क्रम को महत्व प्रदान करउसे एक सामाजिक मूल्य प्रदान करते हैं। मनुष्य को इस बात का बोध हो जाता है कि जीवन की घटनाएं मात्र शारीरिक क्रियाओं का नाम नहीं अपितु एक चिरंतन प्रवाह है, जिनमें सामाजिक संचेतना है, आध्यात्मिक उत्क्रांति है तथा सांस्कृतिक मूल्य के संरक्षण का भाव है।

बोधकथा

ज्ञान कक्षा का मोहताज नहीं

एक समय की बात है, एक विद्यार्थी पढ़ाई में अत्यंत होशियार माना जाता था। उसकी लगन और समझदारी की चर्चा पूरे विद्यालय में थी, लेकिन अचानक वह एक गंभीर बीमारी की चपेट में आ गया। कई दिनों तक बिस्तर पर रहने के कारण उसकी विद्यालय में उपस्थिति बहुत कम हो गई। स्थिति ऐसी बन गई कि वह परीक्षा में बैठने की शर्त भी पूरी न कर सका।

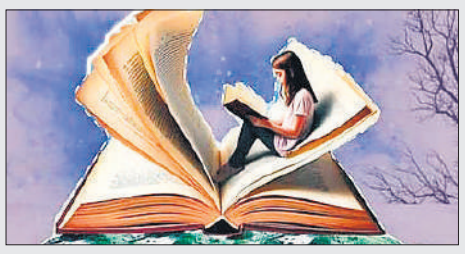

यह बात उसके लिए अत्यंत चिंता का विषय बन गई। उसे लगने लगा कि अब एक साल पीछे रह जाना तय है। उसका मन घबराहट और निराशा से भर गया। अंततः अपने मन का बोझ हल्का करने के लिए वह प्रख्यात विद्वान और मार्गदर्शक मदन मोहन मालवीय जी के पास पहुंचा। विद्यार्थी ने कांपती आवाज में अपनी व्यथा रखी, "बाबूजी, मैं बीमारी के कारण परीक्षा में नहीं बैठ पाऊंगा। लगता है मुझे एक साल और उसी कक्षा में रहना पड़ेगा।" मालवीय जी बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते रहे। फिर अत्यंत शांति से बोले, "एक बात बताओ बेटा, पढ़ना अच्छी चीज है या बुरी?"

विद्यार्थी ने तुरंत उत्तर दिया, "अच्छी चीज है।" मालवीय जी मुस्कुराए और बोले, "तो फिर पढ़ने से डर कैसा? विद्यार्थी को दर्जे का, कक्षा का, साल का इन सबका विचार छोड़कर पूरे मन से सीखने पर ध्यान देना चाहिए। ये दर्जे तो मनुष्य ने अपने सुविधा के लिए बना दिए हैं, ज्ञान इन्हें नहीं मानता।" उनकी बात सुनकर भी विद्यार्थी का चेहरा उदास बना रहा। उसकी मायूसी देखकर मालवीय जी ने गहरी आवाज़ में समझाया, "मेरा विश्वास मानो, असली पढ़ाई स्कूल और कॉलेज की चार दीवारों में सीमित नहीं रहती। जिन्हें सचमुच पढ़ना होता है, वे हर परिस्थिति में सीखते हैं। विद्या पाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है और यह तपस्या जीवनभर चलती है। दुनिया के अनुभव, परिस्थितियां, कष्ट- यही सबसे बड़े गुरुकुल हैं, जिसे सीखने की आग होती है, उसके लिए साल पीछे रह जाना कोई बाधा नहीं।" वे आगे बोले, "जीवन में हमें बहुत-सी बातें किताबों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों से सीखने को मिलती हैं। बीमारी, कठिनाइयां, संघर्ष-ये सब भी शिक्षक हैं। इसलिए यदि तुम सचमुच विद्वान बनना चाहते हो, तो दर्जे की चिंता छोड़कर ज्ञान का पथ पकड़े रहो।" मालवीय जी के इन शब्दों ने विद्यार्थी के मन का बोझ हल्का कर दिया। उसे समझ आ गया कि पढ़ाई सिर्फ परीक्षा पास करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को सही दृष्टि देने वाली साधना है। वह नए उत्साह से भरकर वापस लौटा। सच यही है, जो सीखने वाला हृदय रखता है, उसके लिए हर दिन, हर अनुभव, हर संघर्ष एक नई पाठशाला बन जाता है। यही इस कथा का संदेश है।

-नृपेन्द्र अभिषेक नृप

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	85,641.90	26,175 .75
गिरावट	64 .77	27 .20
प्रतिशत में	0 .08	0 .10

सोना 1,33,200 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,77,000 प्रति किलो

अमृत विचार
मुरादाबाद, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025
www.amritvichar.com

कारोबार

बिजनेस ब्रीफ

जीएसटी संग्रह 1.70 लाख करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली। सकल माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह नवंबर में 0 .7% की मामूली वृद्धि के साथ 1 .70 लाख करोड़ रुपये रहा है। घरेलू राजस्व में गिरावट से संग्रह कम हुआ है। सोमवार को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, जीएसटी संग्रह गत वर्ष नवंबर में 1 .69 लाख करोड़ से कुछ अधिक रहा था। आलोच्य महीने में सकल घरेलू राजस्व 2 .3% घटकर 1 .24 लाख करोड़ रुसे अधिक रहा। यह गिरावट 375 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कमी के बाद आई है। वस्तुओं के आयात से राजस्व 10 .2%बढ़कर 45,976 करोड़ रुपये रहा।

एसडब्लूआरईएल को 1,381 करोड़ का ठेका

नई दिल्ली। स्टर्लिंग एंड विल्सन रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (एसडब्ल्यूआरईएल) को गुजरात में अडाणी ग्रीन एनर्जी से 1,381 करोड़ का ठेका मिला है। एसडब्लूआरईएल ने सोमवार को शेयर बाजार को बताया कि उसने गुजरात के खावड़ा अक्षय ऊर्जा पार्क में आने वाली तीन सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अडाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) से 1,381 करोड़ का बैलेंस ऑफ सिस्टम (बीओएस) ठेका हासिल किया है। खावड़ा अक्षय ऊर्जा पार्क दुनिया के सबसे बड़े नवीकरणीय ऊर्जा केंद्रों में से एक है। एसडब्लूआरईएल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (वैश्विक) चंद्र किशोर ठाकुर ने इसकी जानकारी दी।

मीशो आईपीओ की राशि से देगी वेतन

नई दिल्ली। सॉफ्टबैंक समर्थित ई-कॉमर्स कंपनी मीशो की योजना आईपीओ से प्राप्त 480 करोड़ का उपयोग कृत्रिम मेधा (एआई) एवं प्रौद्योगिकी टीमों के वेतन के भुगतान के लिए करने की है। आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से जुड़े दस्तावेजों से इसकी जानकारी मिली। इस खुलासे के बाद सोशल मीडिया पर इस बात पर बहस छिड़ गई है कि क्या आईपीओ से हासिल राशि का ऐसा (कर्मचारियों के वेतन पर खर्च) उपयोग चिंताजनक होना चाहिए या यह प्रौद्योगिकी प्रतिभा पर दीर्घकालिक दांव लगाने का संकेत है। आईपीओ से प्राप्त राशि के उपयोग का विवरण देते हुए कंपनी ने बताया कि 480 करोड़ हमारी अनुषंगी कंपनी मीशो टेक्नोलॉजीज द्वारा एआई व प्रौद्योगिकी विकास को मशीन लर्निंग तथा एआई एवं प्रौद्योगिकी दलों के कर्मचारियों को वेतन के लिए निर्धारित किए गए हैं।

आईआईपी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर

अक्टूबर में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि सुस्त पड़कर 0.4% पर आई

- एनएसओ के अनुसार, आईआईपी में वृद्धि दर सालाना आधार पर घटी

नई दिल्ली, एजेंसी

विनिर्माण, खनन एवं बिजली क्षेत्रों के कमजोर प्रदर्शन से अक्टूबर में देश की औद्योगिक उत्पादन वृद्धि सुस्त पड़कर 13 महीनों के निचले स्तर 0.4% पर आ गई। सोमवार को आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) से जारी आंकड़ों के मुताबिक, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में वृद्धि दर सालाना आधार पर घटी है। एक साल पहले की समान अवधि में औद्योगिक उत्पादन 3.7% बढ़ा था। आईआईपी का पिछला निचला स्तर सितंबर, 2024 में दर्ज किया गया था जब यह स्थिर रहा था। इएनएसओ ने सितंबर, 2025 के आंकड़ों को संशोधित करते हुए वृद्धि दर को 4 से बढ़ाकर 4.6% किया है।

आंकड़ों के मुताबिक, अक्टूबर में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 1.8% पर आ गई, जबकि साल भर पहले यह 4.4% रही थी। आलोच्य महीने में खनन क्षेत्र के उत्पादन में 1.8% की गिरावट आई, जबकि गत वर्ष यह 0.9% बढ़ा था। इस दौरान बिजली उत्पादन में भी 6.9% की गिरावट दर्ज की गई जबकि पिछले साल यह दो प्रतिशत बढ़ा था। वित्त वर्ष 2025-26 के पहले सात महीनों (अप्रैल-अक्टूबर) में देश के औद्योगिक उत्पादन में कुल 2.7% की वृद्धि दर्ज की गई जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह 4% थी। विनिर्माण क्षेत्र में शामिल 23 में से नौ उद्योग खंडों ने अक्टूबर में सालाना आधार पर सकारात्मक वृद्धि रही।

उपयोग-आधारित वर्गीकरण के मुताबिक, पूंजीगत उत्पाद खंड में 2.4% की बढ़ोतरी हुई जबकि एक साल पहले यह 2.9% थी। टिकाऊ उपभोक्ता खंड में आलोच्य माह के दौरान 0.5% की गिरावट आई, जबकि एक साल पहले इसमें 5.5% की बढ़ोतरी हुई थी। अक्टूबर, 2025 में गैर-टिकाऊ उपभोक्ता खंड में उत्पादन 4.4% गिर गया जबकि एक साल पहले इसमें 2.8% की वृद्धि हुई थी। ढांचागत क्षेत्र/ निर्माण उत्पादों के खंड में उत्पादन बढ़कर 7.1% हो गया जबकि पिछले साल की समान अवधि में 4.7% बढ़ोतरी रही थी। आंकड़ों से पता चला कि प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन अक्टूबर माह में 0.6% घटा है जबकि एक साल पहले यह 2.5% बढ़ा था। मध्यवर्ती उत्पाद खंड में इस महीने 0.9% की बढ़त रही जबकि एक साल पहले इसमें 4.8%की वृद्धि हुई थी।

विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नौ माह के निचले स्तर पर

- पीएमआई अक्टूबर के 59.2 से घटकर नवंबर में 56.6 पर आया

नई दिल्ली। देश की विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नवंबर में नौ महीने के निचले स्तर पर आ गईं। चुनौतीपूर्ण बाजार स्थितियों की खबरों के बीच बिक्री एवं उत्पादन में धीमी वृद्धि इसकी मुख्य वजह रही। सोमवार को जारी एक मासिक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अक्टूबर के 59 .2 से नवंबर में 56 .6 पर आ गया। यह फरवरी के बाद से परिचालन स्थितियों में सबसे धीमी गति का संकेत देता है। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर का अंक विस्तार जबकि 50 से नीचे का अंक संकुचन दर्शाता है। एचएसबीसी के मुख्य भारत अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा कि नवंबर के पीएमआई आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि अमेरिकी शुल्क के कारण विनिर्माण विस्तार धीमा हुआ है। इसमें कहा गया कि कंपनियों ने हालांकि सुझाव दिया कि अंतर्राष्ट्रीय बिक्री का रुझान अनुकूल बना हुआ है जो अफ्रीका, एशिया, यूरोप और पश्चिम एशिया में ग्राहकों को अधिक बिक्री को दर्शाता है।

कोयला व लिग्नाइट की खोज की अनुमोदन प्रक्रिया हुई सरल

- कारोबार सुगमता और कुशल एवं टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देने के लिए उठाया कदम

नई दिल्ली, एजेंसी

कोयला मंत्रालय ने कोयला एवं लिग्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है। इस कदम का मकसद कारोबार सुगमता को बढ़ाना और कुशल एवं टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देना है। नई प्रक्रिया में अब 2022 में इस उद्देश्य के लिए गठित सरकारी समिति से मंजूरी की आवश्यकता नहीं है।

मंत्रालय के अनुसार, कोयला मंत्रालय ने पहले की कार्यप्रणाली की समीक्षा की है। क्यूसीआई-एनएबीईटी द्वारा मान्यता प्राप्त एवं अन्य एपीए द्वारा समकक्ष समीक्षा प्राप्त अधिसूचित मान्यता प्राप्त अन्वेषण एजेंसियों (एपीए) द्वारा तैयार कोयला एवं लिग्नाइट ब्लॉक के लिए अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट (जीआर) के अनुमोदन के लिए तंत्र को सरल बनाया है। देश की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए कोयला एवं लिग्नाइट संसाधनों का तेज, अधिक कुशल और प्रौद्योगिकी रूप से मजबूत अन्वेषण आवश्यक है।

कोल इंडिया का उत्पादन घटकर 45.35 करोड़ टन

नई दिल्ली। सरकारी कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) का कोयला उत्पादन चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-नवंबर के दौरान 3 .7% घटकर 45 .35 करोड़ टन रह गया। सरकार देश में कोयला उत्पादन बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए कई कदम उठा रही है, इसके बावजूद यह गिरावट आई। देश के कुल कोयला उत्पादन में 80% से अधिक हिस्सा रखने वाली कोल इंडिया ने पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 47 .1 करोड़ टन का कोयला उत्पादन किया था।

सोने में आया 3,040 रुपये का उछाल

नई दिल्ली, एजेंसी

- मजबूत वैश्विक रुख और शादियों के मौसम से आभूषणों की मांग से कीमती धातु को मिला समर्थन

मजबूत वैश्विक रुख और कमजोर डॉलर के कारण सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने की कीमतें 3,040 रुपये उछलकर 1,33,200 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गईं। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने कहा कि चल रहे शादियों के मौसम के बीच आभूषणों की सतत मांग से कीमती धातु को समर्थन मिला।

व्यापारियों ने कहा कि सोना अब अपने सर्वकालिक उच्च स्तर 1,34,800 रुपये प्रति 10 ग्राम (99.9% शुद्धता) और 1,34,200 रुपये प्रति 10 ग्राम (99.5%) के करीब है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) सौमिल गांधी ने कहा कि सोने ने पिछले हफ्ते की तेजी को आगे बढ़ाया, जिसे डॉलर के कमजोर होने, अगले हफ्ते फेडरल रिजर्व के द्वारा ब्याज दर कटौती की बढ़ती उम्मीदों, बड़े बैंकों के अच्छे अनुमानों और सेंट्रल बैंक की मजबूत खरीदारी से समर्थन मिला, ये सभी बाजार को ऊपर ले जाने में मदद कर रहे हैं।

सर्राफा संघ के अनुसार, चांदी पांचवें दिन ऊपर चढ़ती रही, जो 5,800 रुपये बढ़कर 1,77,000 रुपये प्रति किग्रा (सभी टैक्स) हो गई। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में हाजिर सोना 42.29 डॉलर या 1% बढ़कर 4,261.52 डॉलर प्रति औंस हो गया, जबकि डॉलर सूचकांक 0.19% घटकर 99.27 रह गया, जिससे सर्राफा कीमतों को समर्थन मिला। साल की शुरुआत से सोने की कीमत 63.6%बढ़ गई है। लगातार छठे दिन बढ़ते हुए, हाजिर चांदी 2% बढ़कर वैश्विक बाजारों में 57.85 डॉलर प्रति औंस के नए रिकॉर्ड पर पहुंच गई। पिछले हफ़्ते चांदी 15.7% उछली और 2025 में अब तक दोगुनी गई गई। ऑगमोंट में शोध प्रमुख रेनिशा चैनानी ने कहा कि चांदी की कीमत सिर्फ़ 11 महीनों में दोगुनी हो गई है और सोने से ज्यादा बढ़ी है, भले ही वर्ष 2025 में सोना सबसे लोकप्रिय जिंस था।

शेयर बाजार रिकॉर्ड ऊंचाई से नीचे फिसला

- वित्तीय शेयरों में मुनाफावसूली से दोनों सूचकांक में आई गिरावट
- सत्र के दौरान सेंसेक्स 452.35 और निफ्टी 122.85 अंक चढ़ा

मुंबई, एजेंसी

स्थानीय शेयर बाजार सोमवार को रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद अंत में मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। उच्चस्तर पर मुनाफावसूली और विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी से दोनों मानक सूचकांक... बीएसई सेंसेक्स में 65 अंक की गिरावट आई जबकि एनएसई निफ्टी 27 अंक के नुकसान में रहा।

बीएसई का सेंसेक्स शुरुआती बढ़त गंवाकर 64.77 अंक की गिरावट के साथ 85,641.90 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, 452.35 अंक चढ़कर 86,159.02 अंक के रिकॉर्ड उच्चस्तर पर पहुंचा था। वहीं, एनएसई का निफ्टी 27.20 अंक की गिरावट के साथ 26,175.75 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, यह 122.85 अंक चढ़कर 26,325.80 अंक के उच्चस्तर पर पहुंचा था। विशेषज्ञों के अनुसार, दूसरी तिमाही में उम्मीद से बेहतर जीडीपी वृद्धि के बाद इस सप्ताह आरबीआई के प्रमुख ब्याज दर में कटौती की उम्मीद कम होने से बाजार में उच्चस्तर पर गिरावट देखी गई। जीएसटी संग्रह में धीमी वृद्धि और उच्चस्तर पर मुनाफावसूली से भी बाजार नुकसान में रहा। बाजार शुरुआती कारोबार में अपने रिकॉर्ड उच्चस्तर पर पहुंचा था। इसका कारण जुलाई-सितंबर में भारत की अर्थव्यवस्था के अनुमान से अधिक 8.2% की दर से बढ़ने के बाद निवेशकों की धारणा सकारात्मक थी। यह छह तिमाहियों में सबसे तेज वृद्धि है।

मिडकैप नीचे, स्मॉलकैप में मामूली बढ़त

मझोली कंपनियों से संबंधित बीएसई मिडकैप सूचकांक 0 .19% नीचे आया जबकि छोटी कंपनियों से संबंधित स्मॉलकैप सूचकांक मामूली 0 .05% की मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ। एशिया के अन्य बाजारों में, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंग सेंग सकारात्मक दायरे में बंद हुए, जबकि दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और जापान का निक्की गिरावट के साथ बंद हुए। यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में गिरावट का रुख था। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुए थे।

डीआईआई ने 4,148.48 करोड़ के शेयर खरीदे

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 3,795 .72 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 4,148 .48 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1 .96 प्रतिशत बढ़कर 63 .60 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। शुक्रवार को सेंसेक्स 13 .71 अंक की मामूली गिरावट के साथ 85,706 .67 अंक पर बंद हुआ था। वहीं निफ्टी 12 .60 अंक के नुकसान में रहा था।

राष्ट्रीय

वक्फ संपत्ति विवरण पर समय सीमा बढ़ाने से सुप्रीम इन्कार

उम्मीद पोर्टल पर विवरण अपलोड करने संबंधित याचिका पर हुई सुनवाई

- पीठ ने याचिकाकर्ताओं से कहा- समय सीमा से पहले संबंधित न्यायाधिकरणों से करें संपर्क

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को 'उम्मीद' पोर्टल पर 'वक्फ बाय यूजर' सहित सभी वक्फ संपत्तियों के अनिवार्य पंजीकरण के लिए समय बढ़ाने से इन्कार कर दिया। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने याचिकाकर्ताओं से कहा कि वे समय सीमा से पहले संबंधित न्यायाधिकरणों से संपर्क करें।

हमारा ध्यान धारा 3बी के प्रावधान की ओर आकर्षित किया गया है। चूंकि आवेदकों के पास न्यायाधिकरण के समक्ष उपाय उपलब्ध है इसलिए हम सभी आवेदनों का निपटारा करते हुए उन्हें छह महीने की अवधि की अंतिम तिथि तक न्यायाधिकरण का रुख करने की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) के अलावा ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन (एआईएमआईएम) नेता असदुद्दीन ओवैसी और कई अन्य ने सभी वक्फ संपत्तियों के अनिवार्य पंजीकरण के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध करते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया है। इससे पहले एक वकील ने कहा था कि वक्फ के अनिवार्य पंजीकरण की छह महीने की अवधि समाप्त होने वाली है। उच्चतम न्यायालय ने 15 सितंबर को वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के कुछ प्रावधानों पर रोक लगा दी, जिनमें यह भी है कि केवल वे लोग ही किसी संपत्ति को वक्फ के रूप में दे सकते हैं जो पिछले पांच साल से इस्लाम का पालन कर रहे हैं। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा था कि केंद्र ने दुरुपयोग को देखते हुए 'वक्फ बाय यूजर' प्रावधान को हटा दिया और प्रत्याशित रूप से यह 'मनमाना' नहीं था। वक्फ बाय यूजर से आशय ऐसी संपत्ति से है, जहां किसी संपत्ति को औपचारिक दस्तावेज के बिना भी धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उसके दीर्घकालिक उपयोग के आधार पर वक्फ के रूप में मान्यता दी जाती है, भले ही मालिक द्वारा वक्फ की औपचारिक, लिखित घोषणा न की गई हो।

असम में विशेष संक्षिप्त संशोधन कराने के चुनाव आयोग के फैसले को दी चुनौती

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में चुनाव आयोग के उस फैसले को चुनौती दी गई है, जिसमें असम में चुनाव नामावली का केवल विशेष संक्षिप्त संशोधन करने का निर्णय लिया गया है, जबकि बिहार सहित 12 अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष गहन संशोधन कराया जा रहा है। यह याचिका गुवाहाटी हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष मृणाल चौधरी ने दायर की है। याचिका में 17 नवंबर को जारी चुनाव आयोग के आदेश पर सवाल उठाया गया है। याचिका में कहा गया है कि जहां एक ओर छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप और पुडुचेरी में विशेष गहन संशोधन का निर्देश दिया गया है, वहीं असम में कम स्तर का संशोधन चुना गया है। यह फैसला आयोग के अपने ही रुख के खिलाफ है।

आपदा तैयारियों के मुद्दे पर केंद्र व अन्य को नोटिस

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केंद्र और अन्य से उस याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें अग्निशमन सेवाओं, सड़क आपातकालीन प्रतिक्रिया और आपदा तैयारी में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और कर्मियों की कमी का आकलन करने और उसे पूरा करने के लिए निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। न्यायमूर्ति विक्रमनाथ और संदीप मेहता की पीठ ऐसे व्यक्ति की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसने 2019 में सूरत में आग लगने की घटना में अपनी बेटी को खो दिया था। शीर्ष न्यायालय ने केंद्र और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) सहित अन्य को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में याचिका पर जवाब दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा कि नोटिस जारी करें, जिसका जवाब चार हफ़्तों के भीतर दिया जाए। याचिकाकर्ता व्यक्तिगत रूप से पेश हुआ और उसने दावा किया कि भारतीय राष्ट्रीय भवन संहिता, 2016 का सख्ती से पालन नहीं किया जा रहा है और देश भर में आग लगने की घटनाएं हो रही हैं।

बिश्नोई गिरोह से सुरक्षा पर विचार से इन्कार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के व्यक्ति की याचिका पर विचार से इन्कार कर दिया, जिसने लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से धमकी मिलने का दावा करते हुए 24 घंटे सुरक्षा मुहैया देने मांग की गई थी। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील से पूछा, आपको कौन धमकी दे रहा है? लॉरेंस बिश्नोई उत्तर प्रदेश में भी काम करता है? वकील ने कहा कि याचिकाकर्ता 24 घंटे सुरक्षा की मांग कर रहा है। जब पीठ ने कहा कि बिश्नोई गिरोह राजस्थान और पंजाब में सक्रिय है, तो वकील ने कहा, वह हर जगह सक्रिय है।

ईडी ने मसाला बॉण्ड मामले में सीएम विजयन व इसाक को भेजा नोटिस

नई दिल्ली/तिरुवनंतपुरम। ईडी ने केआईआईएफबी मसाला बॉण्ड मामले में केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन, पूर्व वित्त मंत्री थॉमस इसाक और मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव के. एम. अब्राहम को 467 करोड़ के फेमा उल्लंघन से संबंधित कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

अधिकारियों ने बताया कि ईडी ने विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के प्रावधानों के तहत यह नोटिस 12 नवंबर को जारी किया था। उन्होंने बताया कि यह नोटिस केरल इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड (केआईआईएफबी) व उसके प्राधिकारियों द्वारा फेमा प्रावधानों और आरबीआई के मुख्य निर्देशों के कथित उल्लंघन से संबंधित है, जिसकी राशि 466.91 करोड़ है। केआईआईएफबी के अध्यक्ष के रूप में विजयन, बोर्ड के उपाध्यक्ष पूर्व वित्त मंत्री इसाक व केआईआईएफबी के सीईओ अब्राहम के अलावा संस्थान को भी नोटिस जारी किए गए हैं। केरल सरकार ने मामले में गड़बड़ी से इन्कार किया है।

नए सभापति सभी को दें बोलने का अवसर

नई दिल्ली, एजेंसी

राज्यसभा में सोमवार को प्रधानमंत्री, सदन के नेता, नेता प्रतिपक्ष सहित विभिन्न दलों के नेताओं ने नये सभापति सी पी राधाकृष्णन को यह दायित्व संभालने के लिए बधाई देते हुए उम्मीद जतायी कि सांसद के रूप में उनके अनुभव से सदन के कुशल संचालन में मदद मिलेगी। कई दलों के सदस्यों ने सदन के सभी पक्षों को बोलने का समान अवसर देने का अनुरोध किया।

राधाकृष्णन का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि साधारण पृष्ठभूमि से उठकर सी. पी. राधाकृष्णन का उपराष्ट्रपति पद तक पहुंचना भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति को प्रदर्शित करता है।

सितंबर में चंद्रपुरम पोनुसामी (सी. पी.) राधाकृष्णन देश के 15वें उपराष्ट्रपति चुने गए थे। प्रधानमंत्री ने कहा, मैं आपको बधाई देता हूं और भरोसा है कि इस सदन का हर सदस्य इसकी परंपराओं का सम्मान करेगा और आपकी गरिमा को बनाए रखेगा।

संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन राधाकृष्णन का स्वागत करते हुए सदन के नेता जेपी नड्डा ने उम्मीद जतायी वह संसद के उच्च सदन का कुशलतापूर्वक संचालन करेंगे।

विपक्ष की ओर से खरगे ने सभापति का स्वागत करते हुए कहा कि कांग्रेस संवैधानिक मूल्यों और सदन की परंपराओं के साथ दृढ़ता से खड़ी है और कार्यवाही के सुचारू संचालन में सहयोग करेगी। पूर्व प्रधानमंत्री एवं जनता दल (एस) के एचडी देवेगौड़ा ने उम्मीद जतायी कि वह इस सदन की लम्बी परंपरा के अनुसार इसका संचालन करेंगे। टीएमसी के डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि विपक्ष को सदन में अपनी बात रखने का मौका दिया जाना चाहिए। द्रमुक के तिरुचि शिवा, आप के राघव चड्ढा, माकपा के जान ब्रिटास, जद(यू) के रामनाथ ठाकुर, सपा के जावेद अली खान, राकंपा के प्रफुल्ल पटेल और राकंपा (एसपी) की फौजिया खान ने सभापति से सदन में बोलने देने की उम्मीद जताई।

डब्ल्यूएमओ को हवाईअड्डे पर जीपीएस स्पूफिंग के स्रोत का पता लगाने का सरकार ने दिया निर्देश

नई दिल्ली। सरकार ने सोमवार को कहा कि दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, अमृतसर, हैदराबाद, बैंगलोर और चेन्नई हवाई अड्डों पर 'जीपीएस स्पूफिंग' होने की खबर है, और वायरलेस निगरानी संगठन (डब्ल्यूएमओ) को 'स्पूफिंग' के स्रोत का पता लगाने का निर्देश दिया गया है। नागर विमानन मंत्री के राममोहन नायडू ने राज्यसभा को बताया कि कुछ उड़ानों ने नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के आस-पास जीपीएस स्पूफ़िंग की सूचना दी, जब वे रनवे 10 पर पहुंच रहे थे, और जीपीएस आधारित विमान उतारने की प्रक्रिया का इस्तेमाल कर रहे थे। नायडू ने कहा, दूसरे रनवे पर, जहां पारंपरिक नौवहन प्रणाली चालू थी, उड़ानों के परिचालन पर कोई असर नहीं पड़ा। इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा देश का सबसे हवाई अड्डा है।

चुनाव सुधारों पर चर्चा की मांग को लेकर संसद परिसर में प्रदर्शन की तैयारी में विपक्षी दल

नई दिल्ली। विपक्षी गठबंधन के घटक दल संसद के वर्तमान शीतकालीन सत्र के दौरान चुनाव सुधारों के विषय पर चर्चा की मांग करते हुए मंगलवार को संसद परिसर में प्रदर्शन कर सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि विपक्षी दलों के सांसद मंगलवार सुबह संसद भवन के मकर द्वार के निकट एकत्र होकर विरोध प्रदर्शन की तैयारी में हैं। विपक्षी सदस्यों ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर सोमवार को लोकसभा में हंगामा किया जिससे सदन की कार्यवाही बाधित हुई। विपक्षी दलों के नेताओं ने सोमवार को संसद के शीतकालीन सत्र के लिए अपनी रणनीति पर चर्चा की।

प्रेमी के शव से शादी करने वाली युवती ने पुलिस पर मढ़े आरोप

नांदेड, एजेंसी

- कहा- प्रेमी की हत्या के लिए उसके भाई को पुलिस ने ही उकसाया था

महाराष्ट्र के नांदेड जिले में प्रेमी के शव से शादी करने के एक दिन बाद 21 वर्षीय युवती ने सोमवार को इतवारा थाने के दो पुलिसकर्मियों पर युवक की हत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया। युवती के दावे पर पुलिस की ओर से अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

मृतक के घर पहुंची आंचल ममीदवार ने प्रेमी की हत्या के लिए अपने भाई को फांसी देने की अपील की। आंचल ने बताया कि हत्या वाले दिन, मेरा भाई हिमेश मुझे सुबह इतवारा थाने ले गया और सक्षम के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने को कहा। उसके इन्कार करने के बाद पुलिस के दो अधिकारियों ने उसके भाई को यह कहकर उकसाया कि उसे दूसरे लोगों से लड़ने के बजाय उस आदमी को मार देना चाहिए जिससे मैं प्यार करती हूं। हिमेश ने सक्षम की हत्या के बाद थाने वापस आने की चुनौती दी थी। उसने पुलिस से कहा कि वह सक्षम की हत्या करने के बाद थाने आएगा। फिर उसने उसे (सक्षम को) मार डाला। मेरी बस यही मांग है कि आरोपियों (उसके भाई और पिता) को भी उसी तरह मारा जाए जैसे सक्षम को मारा गया।

प. बंगाल : बीएलओ के प्रदर्शन के बीच सीईओ कार्यालय के बाहर तनाव

कोलकाता, एजेंसी

प. बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया में लगे बीएलओ के एक वर्ग ने गणना प्रक्रिया के दौरान कथित अत्यधिक कार्यभार को लेकर सोमवार को सीईओ कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया, जिसके बाद अधिकारियों को प्रदर्शन स्थल पर पुलिस की तैनाती बढ़ानी पड़ी। विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में भाजपा का प्रतिनिधिमंडल चुनाव अधिकारियों के साथ बैठक के लिए वहां पहुंचा तो प्रदर्शनकारियों ने विरोध में नारे लगाए और पुलिस बैरिकेड तोड़ने का प्रयास किया। हालांकि, अधिकारी और कई अन्य भाजपा विधायकों ने अधिकारियों के साथ बैठक जारी रखी।

बैरिकेड तोड़ने का प्रयास करते प्रदर्शनकारियों को रोकती पुलिस।

पुलिस ने शुभेंदु के दौरे से पहले कई स्तर पर बैरिकेड लगाए थे और अतिरिक्त बल तैनात किया था। भाजपा प्रतिनिधिमंडल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय परिसर में प्रवेश करने के कुछ ही मिनट बाद प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड तोड़ने की कोशिश की और इस बात पर जोर दिया कि उन्हें भी ज्ञापन सौंपने के लिए अंदर जाने दिया जाए। समिति के सदस्य बीएलओ के लिए बेहतर कार्य स्थितियों की मांग को लेकर कुछ दिनों से सीईओ कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं।

यहां बर्फ ही बर्फ...

सर्दियां शुरू होने के साथ ही जम्मू-कश्मीर की वादियों में बर्फ भी पड़ने लगी है। पेड़ों और घरों पर यह बर्फ मनोहारी दृश्य भी उपस्थित कर रही है। शोपियां में एक ठंडे दिन में पड़े पाले ने सूखे पत्तों को इस तरह ढक लिया जैसे किसी ने चित्रकारी की हो।

जीपीएस स्पूफिंग : विमानों की सुरक्षा से खिलवाड़

जीपीएस स्पूफिंग की ताजा घटना इसी महीने के शुरू में भारत में हुई थी। इसकी वजह से दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आठ सौ से ज्यादा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें प्रभावित हुई थीं। इस घटना से भारतीय उड्डयन उद्योग के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। दरअसल, जीपीएस स्पूफिंग के कारण कई बार आधुनिक नेविगेशन सिस्टम भी निष्क्रिय साबित हो जाते हैं। आसमान में पायलट को रनवे ढूंढने में भी दिक्कत होती है। जाहिर है कि ऐसे में हजारों यात्रियों की जिंदगी दांव पर लग जाती है। कई बार यात्रियों की सुरक्षा के लिए फ्लाइट को डाइवर्ट करना पड़ता या लंबा इंतजार करना पड़ता है। जीपीएस स्पूफिंग स्मार्टफोन एप्स और लोकेशन डाटा में भी गड़बड़ी कर सकता है। इसके अलावा जीपीएस डाटा पर निर्भर नेटवर्क सिस्टम और महत्वपूर्ण ढांचों पर भी इसके जरिए साइबर हमले किए जा सकते हैं।

जीपीएस स्पूफिंग कितना बड़ा खतरा

जीपीएस स्पूफिंग एक साइबर हमला है जिसमें नकली जीपीएस सिग्नल का उपयोग करके नेविगेशन सिस्टम को गुमराह किया जाता है। इससे विमान को गलत स्थान, दिशा या समय की जानकारी मिलती है, ऐसे में विमानों के लिए यह एक बेहद गंभीर सुरक्षा खतरा बन जाता है। जीपीएस स्पूफिंग के कारण विमान को लगता है कि वह किसी दूसरी जगह है। हालांकि वह हकीकत में असल जगह से कई किमी दूर होता है। जीपीएस स्पूफिंग विमानों के नेविगेशन को गड़बड़ कर सकता है, इनर्शियल रेफरेंस सिस्टम जैसे बैकअप ऐसी स्थिति में मददगार होते हैं।

क्या है जीपीएस स्पूफिंग

यह एक साइबर हमला है जिसमें जीपीएस रिसीवर को गलत उपग्रह संकेत भेजकर धोखा दिया जाता है। यह जीपीएस सिग्नल को जाम करने से अलग है, इसमें सिग्नल रोकने के बजाय गलत जानकारी दी जाती है। जीपीएस स्पूफिंग के परिणामस्वरूप विमान, जहाज और वाहन गलत स्थान पर होने की रिपोर्ट दे सकते हैं।

कैसे की जाती है स्पूफिंग

अमेरिका का जीपीएस सिस्टम (नेवस्टार) 31 सैटेलाइट के समूह से बना है, ये सैटेलाइट पीआरएन कोड नागरिकों और अमेरिकी सेना दोनों को प्रसारित करते हैं। सेना के लिए भेजे जाने वाले कोड एन्क्रिप्टेड होते हैं, लेकिन नागरिकों को भेजे जाने वाले कोड एन्क्रिप्टेड नहीं होते। इसी वजह से वे साइबर हमले के शिकार हो जाते हैं। सबसे पहले हैकर यह पता लगता है कि किस जीपीएस सैटेलाइट का सिग्नल स्पूफिंग के समय आसपास होगा। इसके लिए सैटेलाइट की ऑर्बिट को देखा जाता है।

विमानों की सुरक्षा में भूमिका

- स्पूफिंग विमानन सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है क्योंकि यह नेविगेशन सिस्टम को भ्रमित कर सकता है, जिससे विमान गलत रास्ते पर जा सकता है।
- विमानों में इनर्शियल रेफरेंस सिस्टम जैसे बैकअप सिस्टम स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। जीपीएस विफल होने पर इनका इस्तेमाल किया जाता है।
- स्पूफिंग केवल वाणिज्यिक विमानों को ही नहीं बल्कि निगरानी विमानों को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा होता है।
- जीपीएस जैमिंग के विपरीत स्पूफिंग का पता लगाना कठिन होता है क्योंकि इसमें रिसीवर को यकीन दिलाया जाता है कि सब कुछ ठीक है।

वार जोन में भी इस्तेमाल

स्पूफिंग और जैमिंग वार जोन में भी होती है, मिडिल ईस्ट में यह कई बार हो चुका है। युद्धरत देश स्पूफिंग में महंगी और शक्तिशाली मशीनों का इस्तेमाल करते हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

अतीत की गलतियों पर आत्ममंथन करे जापान

बीजिंग। चीन ने जापान से अपने अतीत पर गहराई से आत्मनिरीक्षण करने, अपनी अनाप-शनाप टिप्पणियों को वापस लेने और ठोस कार्रवाई के माध्यम से चीन के प्रति अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं को प्रदर्शित करने का आग्रह किया है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने सोमवार को एक नियमित समाचार ब्रीफिंग में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा, अत्यधिक महत्व के मुद्दों पर, जापानी पक्ष को यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि वे टाल-मटोल कर सकते हैं।

तेल टैंकरों पर यूक्रेन के हमलों की निंदा की

मास्को। रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया ज़खारोवा ने काला सागर में दो तेल टैंकरों और एक बंदरगाह पर हाल ही में हुए यूक्रेनी हमलों की निंदा की। मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार ज़खारोवा ने कहा कि गाम्बिया के झंडे तले रूसी बंदरगाह नोवोरोस्सिएस्क जा रहे दो टैंकरों पर शुक्रवार और शनिवार को हमले में मानवरहित नावों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि यूक्रेनी खुफिया सेवाओं ने इन हमलों की ज़िम्मेदारी ली है। प्रवक्ता ने कहा कि लक्षित नागरिक ऊर्जा अवसंरचना वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सैन्य बल मुख्यालय पर हमले की कोशिश

कराची। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में अर्धसैनिक बल के मुख्यालय पर हमले की कोशिश को सुरक्षाकर्मियों ने नाकाम करते हुए प्रतिबंधित संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के तीन चरमपंथियों को ढेर कर दिया। अर्धसैनिक बल के एक प्रवक्ता ने बताया कि रविवार रात चगाई जिले के नोकुंडी कस्बे में फ्रंटियर कोर के मुख्यालय पर एक आत्मघाती हमलावर द्वारा हमला किए जाने के बाद चरमपंथियों ने वहां घुसने का प्रयास किया।

खालिदा जिया को वेंटिलेटर पर रखा

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की हालत बहुत खराब है और उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया है तथा स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा विशेषज्ञ उनके इलाज की निगरानी कर रहे हैं। यह जानकारी उनकी पार्टी के नेताओं ने सोमवार को दी। बीएनपी की अध्यक्ष जिया को 23 नवंबर को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जैविक हथियार: चुनौती से निपटने को खाका तैयार करने की जरूरत

जैविक हथियार संधि की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित सम्मेलन में बोले जयशंकर

- बीडब्ल्यूसी में अब भी बुनियादी ढांचे की कमी : विदेश मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत ने सोमवार को अनिश्चित अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा माहौल को देखते हुए जैविक हथियारों के संभावित दुरुपयोग पर रोक लगाने के लिए एक वैश्विक तंत्र की जरूरत बताई। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि सरकार से इतर तत्वों द्वारा जैविक हथियारों का दुरुपयोग किया जाना अब दूर की बात नहीं है और ऐसी चुनौती से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जरूरी है। उन्होंने जैविक हथियार संधि (बीडब्ल्यूसी) की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जैविक आतंकवाद एक गंभीर चिंता का विषय है, जिसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पूरी तरह से तैयार रहना होगा।

हालांकि, बीडब्ल्यूसी में अब भी बुनियादी संस्थागत ढांचे की कमी है। विदेश मंत्री ने कहा कि इसमें कोई अनुपालन प्रणाली नहीं है, कोई स्थायी तकनीकी संस्था नहीं है और नए वैज्ञानिक घटनाक्रमों पर नजर रखने के लिए कोई तंत्र नहीं है। भरोसा मजबूत करने के लिए इन खामियों को दूर करना आवश्यक है। मंत्री ने कहा कि भारत ने लगातार बीडब्ल्यूसी के अंदर मजबूत अनुपालन उपायों की मांग की है, जिसमें आज की दुनिया के अनुरूप सत्यापन भी शामिल है। उन्होंने कहा कि भारत शांतिपूर्ण इस्तेमाल के उद्देश्य से सामग्री और उपकरणों के आदान-प्रदान को संभव बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं मदद का समर्थन करता है। विदेशमंत्री ने कहा कि हमने वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की व्यवस्थित समीक्षा की मांग की है ताकि शासन वास्तव में नवाचार की गति के साथ तालमेल बिठा सके। जयशंकर ने कहा कि भारत ने लगातार बीडब्ल्यूसी के भीतर मजबूत अनुपालन उपायों का आह्वान किया है, जिसमें आज की दुनिया के लिए तैयार की गयी सत्यापन व्यवस्था भी शामिल है। उन्होंने कहा कि भारत शांतिपूर्ण उपयोग के लिए सामग्रियों और उपकरणों के आदान-प्रदान को संभव बनाने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सहायता का समर्थन करता है। विदेश मंत्री ने कहा कि भारत ने एक राष्ट्रीय कार्यान्वयन मसौदा प्रस्तावित किया है जिसमें उच्च जोखिम वाले किरदारों की पहचान, दोहरे उपयोग वाले अनुसंधान की निगरानी, घटना प्रबंधन और निरंतर प्रशिक्षण शामिल है। उन्होंने कहा कि बीडब्ल्यूसी 50 वर्षों से एक साधारण विचार पर कायम है कि मानवता इसे अस्वीकार करे। लेकिन मानदंड तभी जीवित रहते हैं जब राष्ट्र उनका नवीनीकरण करते हैं। अगले 50 वर्षों में ठोस कार्रवाई की आवश्यकता होगी। विदेशमंत्री ने कहा कि हमें संधि को वर्तमान के अनुरूप बनाना होगा, हमें विज्ञान के साथ तालमेल रखना होगा और वैश्विक क्षमता को मजबूत करना होगा ताकि सभी देश जैविक जोखिमों का पता लगा सकें, उन्हें रोक सकें और उनका जवाब दे सकें।

नई दिल्ली में जैविक हथियार संधि की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते विदेश मंत्री एस जयशंकर।

भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार

जयशंकर ने कहा कि भारत ग्लोबल साउथ के लिए एक विश्वसनीय भागीदार और वैश्विक जैव सुरक्षा के प्रतिबद्ध समर्थक की भूमिका के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण अधिक अनिश्चित हो गया है और प्रौद्योगिकी में तीव्र विकास के कारण परिष्कृत जैव प्रौद्योगिकी उपकरणों की उपलब्धता और सामर्थ्य में वृद्धि हुई है तथा निर्माण की लागत में कमी आई है। जयशंकर ने कहा कि कोविड-19 महामारी सहित हाल के प्रकोपों ने सभी को प्रभावित किया है।

श्रीलंका में ऑपरेशन सागर बंधु के तहत चक्रवात प्रभावित क्षेत्र से लोगों को निकालते हुए भारतीय वायुसेना के जवान।

सकारात्मक रही अमेरिका-यूक्रेन के बीच बातचीत

हॉलैंडेल बीच। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध के समाधान की संभावनाओं को तलाशने के लिए अमेरिका और यूक्रेन के अधिकारियों ने रविवार को लगभग चार घंटे तक बातचीत की। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने बाद में बताया कि बातचीत सकारात्मक रही लेकिन शांति समझौते को अमल में लाने के लिए अब भी काम किया जाना बाकी है। रुबियो ने कहा, यह केवल उन शर्तों की बात नहीं है जो लड़ाई को खत्म करती हैं। बल्कि यह उन शर्तों की भी बात है जो यूक्रेन को दीर्घकालिक समृद्धि के लिए तैयार करती हैं। मुझे लगता है कि हमने आज उस दिशा में प्रगति की है, लेकिन अभी और काम किया जाना बाकी है। फ्लोरिडा में यह उच्च स्तरीय बातचीत हुई।

श्रीलंका में फंसे भारतीयों को निकाला, राहत कार्य में तेजी

कोलंबो, एजेंसी

- तिरुवनंतपुरम पहुंचा 104 भारतीयों का अंतिम समूह

भारत ने श्रीलंका में चक्रवात दितवा के कारण मची तबाही के बाद कोलंबो में बचाव अभियान में तेजी लाते हुए वहां फंसे भारतीय नागरिकों के आखिरी समूह को सोमवार को निकाल लिया। कोलंबो में भारतीय उच्चायोग ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि भंडारनायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर फंसे 104 भारतीयों का आखिरी समूह 'ऑपरेशन सागर बंधु' के तहत भारतीय वायु सेना के विमान से सुबह करीब साढ़े छह बजे तिरुवनंतपुरम पहुंचा।

उच्चायोग ने कहा कि श्रीलंका के बचाव प्रयासों में भारत ने अपनी मदद तेज कर दी है और अभियान का विस्तार कई प्रभावित क्षेत्रों तक किया है। अधिकारियों के अनुसार चेतक हेलीकॉप्टर ने कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जबकि वायु सेना के कई हेलीकॉप्टर ने कोटमाले में तलाश अभियान संचालित किया जो सबसे ज्यादा प्रभावित मध्य पर्वतीय क्षेत्र है तथा भूस्खलन एवं बाढ़ के कारण यहां सड़क संपर्क टूट गया है। कहा कि खोज एवं बचाव अभियानों के लिए भारत की विशेषीकृत आपदा प्रतिक्रिया एजेंसी एनडीआरएफ और एचएडीआर की टीम कल कोलंबो पहुंची। उन्होंने श्रीलंका के अधिकारियों के साथ मिलकर कोच्चिकाडे में बचाव अभियान संचालित किया।

ईसा मसीह पर बनी पेंटिंग 27 लाख डॉलर में बिकी

वर्सलीज। बारोक काल के महान चित्रकार पीटर पॉल रूबेन्स की एक लंबे समय से खोई हुई पेंटिंग रविवार को वर्सलीज में हुई नीलामी में 27 लाख डॉलर में बिकी। यह पेंटिंग चार सदी से अधिक समय बाद हाल में पेरिस के एक निजी टाउनहाउस में मिली थी। इसमें ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने का दृश्य दर्शाया गया है। यह एक फ्रांसीसी संग्रह का हिस्सा थी और शुरू में यह माना जा रहा था कि यह उस समय मौजूद रूबेन्स की कई कार्यशालाओं में से किसी एक में बनाई गई कृति है। नीलामीकर्ता जीन-पियरे ने बताया कि पेंटिंग को रुबेनियानम से प्रमाणित कराया।

जमीन घोटाला मामले में हसीना को 5 साल की सजा

ढाका, एजेंसी

- बांग्लादेश की पूर्व पीएम की बहन और भांजी को भी सुनाई सजा

बांग्लादेश की एक अदालत ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को जमीन घोटाला मामले में सोमवार को पांच साल की जेल और उनकी भांजी एवं ब्रिटिश सांसद ट्यूलिप सिद्दीक दो साल जेल की सजा सुनाई। ढाका के विशेष न्यायाधीश की अदालत-4 के न्यायाधीश मोहम्मद रबीउल आलम ने हसीना की बहन शेख रेहाना को भी सात साल जेल की सजा सुनाई। भ्रष्टाचार के इस मामले में 17 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। कोर्ट ने तीन आरोपियों की गैरमौजूदगी में यह फैसला सुनाया। शेष 14 आरोपियों में से प्रत्येक को पांच साल की जेल हुई। अदालत ने हसीना, रेहाना और सिद्दीक समेत सभी 17 दोषियों में से प्रत्येक पर एक लाख टके का जुर्माना भी लगाया और जुर्माना नहीं भरने पर उन्हें छह महीने की अतिरिक्त जेल काटनी होगी।

पाकिस्तान में एक आत्मघाती हमले में पुलिसकर्मी की मौत

पेशावर। उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा में सोमवार को एक पुलिस वाहन के पास हुए आत्मघाती हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई जबकि तीन अन्य घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह घटना लक्की मारवात जिले में हुई। ताजोरी पुलिस थाने की एक पुलिस वैन के समीप एक आत्मघाती हमलावर ने खुद को विस्फोट से उड़ा लिया। विस्फोट में हेड कांस्टेबल अलाउद्दीन की मौत हो गई जबकि घायल हुए अन्य पुलिसकर्मियों को अस्पताल ले जाया गया। हमलावर का साथी भागने में सफल रहा।

भारतीयों से अमेरिका को हुआ फायदा

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- मस्क बोले-एच1बी वीजा बंद करने से यूएस को होगा नुकसान

अमेरिका की एयरोस्पेस कंपनी 'स्पेसएक्स' के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क ने एच1बी वीजा का पुरजोर समर्थन करते हुए कहा कि अमेरिका को भारत से आए प्रतिभाशाली लोगों का अत्यंत फायदा मिला है और चेतावनी दी कि यदि इसे बंद कर दिया गया तो यह अमेरिका के लिए बहुत बुरा होगा।

अमेरिका के प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अरबपति कारोबारी ने एक पॉडकास्ट के दौरान यह टिप्पणी की, जो रविवार को प्रसारित हुआ। मस्क ने कहा कि हां, मुझे लगता है कि अमेरिका को उन प्रतिभाशाली भारतीयों से बहुत

लाभ हुआ है जो अमेरिका आए... अमेरिका, भारत की प्रतिभा से अत्यंत लाभान्वित हुआ है। एच-1बी वीजा को लेकर टेस्ला के सीईओ ने कहा कि भले ही इस कार्य वीजा कार्यक्रम का कुछ दुरुपयोग हुआ है लेकिन इसे बंद नहीं किया जाना चाहिए।

अवैध आव्रजन से नकारात्मक प्रभाव

मस्क ने आरोप लगाया कि पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के कार्यकाल में बड़े पैमाने पर अवैध आव्रजन हुआ, जिसने नकारात्मक प्रभाव पैदा किया। उन्होंने कहा अगर अमेरिका में अवैध रूप से आने और सरकारी लाभ पाने का बड़ा आर्थिक प्रलोभन होगा, तो स्वाभाविक रूप से लोग अमेरिका आने की कोशिश करेंगे। यह पूरी प्रोत्साहन संरचना ही गलत थी। जब उनसे पूछा गया कि भारत के युवा उद्यमियों के लिए उनका संदेश क्या है, तो मस्क ने कहा कि वह उन सभी का सम्मान करते हैं जो कुछ बनाना चाहते हैं। कहा कि आप जो पाना चाहते हैं, उससे अधिक देने का लक्ष्य रखें।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 2 दिसंबर, मंगलवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, द्वादशी 03 .57 तक तत्पश्चात त्रयोदशी।

आज का पंचांग

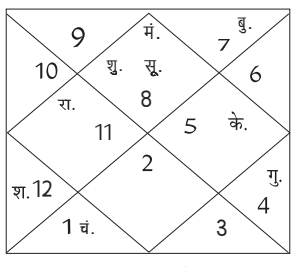

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-अश्विनी 08 .51 तक तत्पश्चात भरणी।

मेष — आज आप कारोबार को लेकर मित्रों से सहायता ले सकते हैं। रुके हुए कार्य पुनः से प्रारम्भ होंगे। छात्र पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। बेरोजगार लोगों को नई नौकरी मिल सकती है। किसी मांगलिक उत्सव में आप सम्मिलित हो सकते हैं।

वृष — आज कार्यक्षेत्र को लेकर मन में उत्साह की कमी देखने को मिलेगी। नजदीकी लोगों के साथ आपके रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। आज आपको धैर्य और संयम के साथ अपने काम पर ध्यान देना चाहिये। दूसरों की सलाह पर अधिक ध्यान न दें।

मिथुन — आज कार्यक्षेत्र में आपको पदोन्नति मिल सकती है। संतान के विवाह में आ रही बाधा दूर होगी। जीवनसाथी और बच्चों से आपको प्रेम और सम्मान दोनों ही प्राप्त होंगे। आपके विचारों से लोग प्रभावित रहेंगे। सरकारी मामलों में आपको सफलता मिलने की संभावना है।

कर्क — आज परिवार में उत्सव का वातावरण रहेगा। सहकर्मियों की तुलना में आपका प्रदर्शन विशेष और अच्छा रहेगा। किसी बहूमूल्य वस्तु को खरीद सकते हैं। कच्चे माल के आयात-निर्यात में उत्तम धन लाभ हो सकता है। आपकी भावनाओं का अनादर हो सकता है।

सिंह — आज आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। निजी समस्याओं का निराकरण होगा। कुछ कठिन काम आसानी से अचानक बनने से मन प्रसन्न होगा। गैस और एसिडिटी की समस्या हो सकती है। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रशंसा होगी।

कन्या — आज पारिवारिक आयोजन किसी कारणवश टल सकते हैं। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। किसी के उकसावे में आकर काम न करें। अन्य दिनों की अपेक्षा दिन कुछ कमजोर रहेगा। अधीनस्थ कर्मचारियों पर नाराज हो सकते हैं।

तुला — आज आपकी कोई मनोकामना पूर्ण हो सकती है। कोई भी बड़ा काम शुरू करने से पहले बड़ों की राय अवश्य लें। भोग-विलास का भरपूर आनंद उठायेंगे। आपका मनोबल बढ़ा हुआ रहेगा। व्यवसाय में सारी परिस्थितियां आपके अनुकूल रहने वाली हैं।

वृश्चिक — आज आपके व्यक्तित्व में तीव्र आकर्षण रहेगा। इसके कारण आप लोकप्रिय रहेंगे। खर्च करने से पहले बजट का ध्यान अवश्य रखें। गले में खराश और बुखार जैसी समस्या हो सकती है। अनुसंधान संबंधी कार्यों में सफलता मिल सकती है।

धनु — आज कार्यक्षेत्र में आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। प्रेम संबंधों में कुछ अनबन हो सकती है। लोग आपकी बातों को अत्यन्त गंभीरता से लेंगे। विद्वान लोगों से भेंट हो सकती है। शाम के समय मित्रों के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

मकर — आज नई परियोजनाओं में सफलता देर से मिलेगी। मानसिक स्थिति नकारात्मक हो सकती है। व्यर्थ में अपने शुभचिंतकों पर संदेह न करें। अधिक भागदौड़ से आपको बचना चाहिए। धन को लेकर दिक्कतें उत्पन्न हो सकती हैं।

कुंभ — आज कारोबारी यात्राओं से आपको लाभ मिलेगा। दूसरों की बातों में आकर अपना समय बर्बाद न करें। रचनात्मक गतिविधियों में सुखद समय बीतेगा। वैवाहिक जीवन में मधुरता बनी रहेगी। परिवार में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के अवसर मिलेंगे।

मीन — आज नए व्यावसायिक संपर्क विकसित होने के योग बन रहे हैं। आपके विनम्र व्यवहार से विपरीत लिंगी लोग आपसे आकर्षित रहेंगे। दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप न करें। घर में कुछ रिश्तेदार आ सकते हैं। विदेश में व्यापार कर रहे लोगों को कारोबार में विस्तार के अवसर मिल सकते हैं।

सुडोकू -178

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

			1			2		
		1						
8								3
7								
				9				
		2					6	
	4							

सुडोकू - 177 का हल

1	2	8	6	5	3	4	9	7
5	7	4	1	8	9	2	3	6
6	9	3	7	2	4	8	1	5
4	1	5	8	9	6	3	7	2
9	8	2	3	7	1	5	6	4
7	3	6	5	4	2	1	8	9
8	6	9	4	3	5	7	2	1
2	5	7	9	1	8	6	4	3
3	4	1	2	6	7	9	5	8

कप्तान के रूप में रोहित हमेशा टीम को यह दिखाते रहे हैं कि वह उनसे क्या चाहते हैं। टी20 और वनडे क्रिकेट में भारत जिस आक्रामक अंदाज की बल्लेबाजी से गुजरा है उसका बहुत सारा श्रेय रोहित और राहुल भाई को जाता है।

-आर अश्विन

स्टेडियम

अमृत विचार

www.amritvichar.com

मुरादाबाद, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

हाईलाइट

सिफत को राष्ट्रमंडल में निशानेबाजी की वापसी की उम्मीद

जयपुर : ओलंपियन सिफत कौर सामरा को भरोसा है कि भारत 2030 में जब राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करेगा तो निशानेबाजी को इन खेलों में शामिल किया जाएगा और इससे देश के पदकों की संख्या में काफी इजाफा होगा। राष्ट्रमंडल खेलों के बर्मिंघम 2022 और 2026 ग्लास्गो 2026 दोनों सत्र के लिए निशानेबाजी को पदक प्रतियोगिता के रूप में शामिल नहीं किया गया लेकिन भारत की मेजबानी में देश के निशानेबाजों को अपनी प्रतिभा दिखाने और घरेलू दर्शकों के सामने पदक जीतने का मौका मिलेगा।

पीएनबी की ब्रांड एंबेसडर बनीं हरमनप्रीत

नई दिल्ली : पब्लिक सेक्टर के पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने सोमवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर को अपना पहला महिला ब्रांड एंबेसडर बनाया है। यह घोषणा बैंक के कॉरपोरेट कार्यालय में 'बैंकिंग ऑन चैंपियंस' थीम के तहत समारोह में हुई। इस अवसर पर हरमनप्रीत कौर को उनके नाम और नंबर वाली एक फ्रेमयुक्त पीएनबी जर्सी, साथ ही एक कस्टम-उत्कीर्णित पीएनबी बैट भेंट किया गया।

फुटबॉल में रुकावट को खत्म करने का प्रयास

नई दिल्ली : खेल मंत्रालय ने फुटबॉल की मौजूदा रुकावट को खत्म करने के लिए इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) और आई-लीग क्लबों समेत सभी स्टेकहोल्डर्स के साथ तीन दिसंबर को बैठक बुलाई हैं। ऐसा माना जा रहा है कि केन्द्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया इन बैठकों की अध्यक्षता करेंगे। इसको लेकर खेल मंत्रालय ने सोमवार को ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (एआईएफएफ) को एक पत्र जारी किया है। मंत्रालय के पत्र में कहा गया इस मामले पर असरदार तरीके से बातचीत के लिए सभी संबंधित स्टेकहोल्डर्स -आईएसएल क्लब, संभावित कमर्शियल पार्टनर्स, एफएसडीएल, ब्रॉडकास्टर्स और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स, आई-लीग और लोअर डिवीजन क्लब्स वगैरह की मौजूदगी जरूरी होगी।

राष्ट्रीय निशानेबाजी में 16 हजार प्रतिस्पर्धी

नई दिल्ली : 68वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप प्रतियोगिता (एनएससीसी) की राइफल, पिस्टल और शॉटगन स्पर्धाओं की अलग-अलग कैटेगरी में क्वालीफाई करने वाले 16 हजार से अधिक निशानेबाज सोमवार से डॉ. कर्णी सिंह रेंज में शुरु हुई प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं। दोहा में चार से नौ दिसंबर तक चलने वाले आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल को ध्यान में रखते हुए इस चैंपिनशिप को महत्वपूर्ण माना जा रहा है।आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल के लिए 15 भारतीयों ने क्वालिफाई किया है। शॉटगन में क्वालिफ़िकेशन राउंड आज डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में शुरू हुए। शॉटगन के साथ-साथ पिस्टल स्पर्धाएं भी डॉ. कर्णी सिंह रेंज में होंगी, जबकि राइफल इवेंट भोपाल में मध्य प्रदेश स्टेट शूटिंग एकेडमी में होंगे। पिस्टल स्पर्धाएं 11 दिसंबर से शुरू होंगी और चार जनवरी, 2026 तक चलेंगे।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में होगा गिल की फिटनेस का आकलन

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय टीम के उप कप्तान शुभमन गिल अनिवार्य फिटनेस आकलन के लिए सोमवार को बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में पहुंचेंगे। इस आकलन के नतीजे के आधार पर नौ दिसंबर से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शुरू हो रही पांच मैच की सीरीज में उनकी वापसी पर फैसला किया जाएगा।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में पहले क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन बल्लेबाजी करते हुए गिल की गर्दन में चोट लगी थी और इसके बाद वह दूसरे टेस्ट और मौजूदा एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सीरीज में नहीं खेल पाए। भारत की टी20 अंतर्राष्ट्रीय टीम में किसी हैरान करने वाले नाम को जगह मिलने की उम्मीद नहीं है, बशर्ते कोई खिलाड़ी चोटिल नहीं हो। अजित अगरकर की अगुआई वाली चयन समिति को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की खेल विज्ञान टीम से गिल की फिटनेस रिपोर्ट का इंतजार है।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर पीटीआई को बताया, ''गिल को इंजेक्शन लगाया गया था और उन्हें 21 दिन के आराम और रिहैबिलिटेशन की सलाह दी गई थी जिसमें चोट से प्रभावित मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए विशिष्ट व्यायाम शामिल थे। सूत्र ने कहा ट्रेनिंग के दौरान खेल विज्ञान टीम के उनकी मूवमेंट का आकलन करने तक कुछ नहीं कहा जा सकता। यह भी नहीं पता कि बल्लेबाजी करते हुए वह बिल्कुल भी असहज नहीं है। मौजूदा स्थिति को देखते हुए दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिए गिल की वापसी की संभावना 50 प्रतिशत है।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में चीजों की जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने बताया 21 अक्टूबर से 30 नवंबर तक हार्दिक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से बाहर भी नहीं निकले और उन्होंने अपना रिहैब और 'रिटर्न टू प्ले' प्रोटोकॉल पूरे किए। उन्हें टी20 में खेलने की पूरी स्वीकृति (बल्लेबाजी और गेंदबाजी करने की) मिली है और वह पंजाब के खिलाफ मैच के लिए बड़ौदा टीम से जुड़ भी गए हैं। वह चार दिसंबर को गुजरात के खिलाफ खेलेंगे और अगर भारतीय टीम प्रबंधन उन्हें पहले नहीं बुलाता है तो वह छह दिसंबर को हरियाणा के खिलाफ मैच में खेलने की भी योजना बना रहे हैं।

टी-20 प्रारूप में खेलेंगे हार्दिक पंड्या

भारतीय प्रशंसकों के लिए हालांकि अच्छी खबर भी है क्योंकि हार्दिक पंड्या को टी20 प्रारूप में खेलने की स्वीकृति मिल गई है और वह मंगलवार को हैदराबाद में बड़ौदा के लिए पंजाब के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी मुकाबले के साथ लगभग ढाई महीने बाद अपना पहला मैच खेलेंगे। उनके चार दिसंबर को बड़ौदा और गुजरात के बीच होने वाले मैच में भी खेलने की संभावना है। राष्ट्रीय चयनकर्ता प्रज्ञान ओझा दोनों मैच के दौरान उपस्थित रहेंगे जिसके कि टीम की घोषणा से पहले उनकी फिटनेस को परख सकें।

विराट कोहली की तारीफों के बांधे पुल

बल्लेबाजी कोच ने कहा- विराट के भविष्य को लेकर सवाल ही नहीं उठता, उनकी फिटनेस और फॉर्म बरकरार

रांची, एजेंसी

भारतीय बल्लेबाजी कोच सीतांशु कोटक का मानना है कि विराट कोहली के वनडे में भविष्य को लेकर अटकलें नहीं लगनी चाहिए क्योंकि इस दिग्गज खिलाड़ी की 50 ओवर के क्रिकेट में फिटनेस, फॉर्म और प्रभाव पहले की तरह बरकरार है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैच की सीरीज से पहले सवाल उठाए जा रहे थे कि क्या कोहली और रोहित शर्मा 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के लिए मुख्य कोच गौतम गंभीर की योजना में शामिल हैं या नहीं। कोटक ने नाराजगी जताते हुए कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि कोहली के भविष्य को लेकर बहस क्यों हो रही है।

कोटक ने रविवार को यहां दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे में भारत की 17 रन की करीबी जीत के बाद कहा मुझे वास्तव में नहीं पता कि हमें इन सब बातों पर गौर करने की जरूरत क्यों है। वह बहुत अच्छी बल्लेबाजी कर रहे हैं और हमें उनके भविष्य के बारे में बात करने की क्या जरूरत है। वह जिस तरह से प्रदर्शन कर रहे हैं, उनकी फिटनेस जिस तरह से है उसे देखकर किसी भी चीज को लेकर कोई सवाल ही नहीं उठता। कोटक ने कहा कि भूमिकाओं को लेकर स्पष्टता, वास्तविक समय में सीख और सीनियर खिलाड़ियों का अनुभव इस समय भविष्य की योजनाओं से कहीं ज्यादा मायने रखते हैं।

उन्होंने कहा वह वाकई शानदार है यार। जब तक वह इसी तरह बल्लेबाजी करता रहेगा, किसी और चीज़ के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। बल्लेबाजी कोच ने जोर देकर कहा कि न तो खिलाड़ी और न ही टीम प्रबंधन विश्व कप के बारे में सोच रहे हैं और सीनियर खिलाड़ियों के बारे में इस संदर्भ में चर्चा करने की तो बात ही छोड़ दीजिए। मुझे नहीं लगता कि इस बारे में चर्चा होनी चाहिए। रोहित और कोहली दोनों शानदार हैं। वे अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और टीम में योगदान दे रहे हैं। एक बार जब टीम आ जाती है और अभ्यास शुरू हो जाता है, तो हम बस उसका आनंद लेते हैं। हम 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के बारे में कोई बात नहीं कर रहे हैं।

कोटक ने कहा कि रविवार को कोहली का वनडे करियर का 52वां शतक न केवल उनकी विरासत की याद दिलाता है, बल्कि यह इस बात का भी उदाहरण है कि जिस प्रारूप को वह अब प्राथमिकता देते हैं, उसमें वह कितनी सहजता से जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

कोटक ने कहा यह एक शानदार पारी थी। उन्होंने वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी की, जिम्मेदारी ली और एक बार फिर दिखाया कि वह कितने असाधारण खिलाड़ी क्यों हैं। पारी के दौरान कोहली की पीठ में मामूली तकलीफ के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा जहां तक मुझे पता है, वह ठीक हैं।

कोटक ने टेस्ट सीरीज में हार के बाद रोहित शर्मा और कोहली दोनों की टीम में वापसी पर भी बात की। उन्होंने कहा वे अनुभवी खिलाड़ी हैं और जिस तरह से वह बल्लेबाजी कर रहे हैं और साझेदारियां निभा रहे हैं उससे बहुत फर्क पड़ता है। वे अपना अनुभव युवा खिलाड़ियों के साथ साझा करते हैं, और यह अपने आप में एक बड़ा फायदा है। कोटक ने इसके साथ ही मैच के बारे में बात करते हुए बाएं हाथ के तेज गेंदबाज हर्षित राणा की विशेष प्रशंसा की, जिनके कठिन परिस्थितियों में शुरुआती झटकों ने दक्षिण अफ्रीका को मैच जीतने से रोक दिया।

उन्होंने कहा शुरुआती विकेट लेने का बहुत सारा श्रेय हर्षित को जाता है। कूकाबुरा गेंद से आपको केवल शुरुआती दो से पांच ओवर तक ही स्विंग मिलती है और उसने इसका पूरा फायदा उठाया।

दूसरे एकदिवसीय मैच के लिए विराट कोहली रांची एयरपोर्ट से रायपुर के लिए रवाना हुए। एजेंसी

इस उम्र में भी खेलने की भूख के लिए स्टेन ने खुशी जताई

रांची : अपने कैरियर के सर्वश्रेष्ठ दौर से गुजरने के बाद अधिकांश खिलाड़ी घर पर अपने परिवार और कुत्ते के साथ रहना पसंद करते हैं, लेकिन 37 वर्ष के विराट कोहली अभी भी मैदान पर चुस्ती के साथ दौड़ते और डाइव लगाते देखे जा सकते हैं और दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज डेल स्टेन खेलने को लेकर उनके इसी जुनून के कायल हैं। टी-20 और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने वाले कोहली ने दिखाया कि वनडे क्रिकेट में अब भी उनका कोई सानी नहीं है। कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे में यहां अपने करियर का 52वां शतक लगाया। स्टेन ने जियोस्टार से कहा जब आप 37 या 38 साल के अधिकतर खिलाड़ियों से बात करते हैं तो वे कहते हैं कि उन्हें घर, अपने कुत्ते, अपने बच्चों को छोड़ना पसंद नहीं है। लेकिन कोहली मानसिक रूप से ऐसी स्थिति में हैं जहां वह पहले की तरह भारत के लिए खेलने के लिए उत्सुक हैं। आप इसे विकेटों के बीच दौड़, फ़ील्डिंग करते और डाइव लगाते हुए देख सकते हैं। वह मानसिक रूप से युवा और तरोताज़ा हैं और क्रिकेट में बने रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा कोहली ने पिछले 15-16 साल में 300 से अधिक वनडे खेले हैं इसलिए वह काफी अनुभव रखते हैं। यह उनके शरीर और दिमाग में है। अगर वह तीन दिन की बारिश के बाद भी यहां पहुचते तो भी उनकी तैयारी पर कोई असर नहीं पड़ता। वह मानसिक रूप से मजबूत हैं, अच्छी तरह से सोच सकते हैं और गेंद को बल्ले पर आते हुए देख सकते हैं। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी यही करते हैं। स्टेन ने कहा वह स्वयं पर भरोसा रखते हैं क्योंकि वह पिछले लंबे समय से खेल रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अब भी पहले की तरह खेलने को लेकर उत्साहित रहते हैं।

रायपुर के लिए रवाना होते दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ी। एजेंसी

कोहली को जमने के बाद रोकना लगभग असंभव : यान्सेन

रांची : दक्षिण अफ्रीका के हरफनमौला मार्को यान्सेन ने कहा कि विराट कोहली जैसे विश्वस्तरीय बल्लेबाज को एक बार जम जाने के बाद रन बनाने से रोकना लगभग असंभव हो जाता है तथा स्वीकार किया कि इस भारतीय स्टार की सूत्रधार की भूमिका निभाने की क्षमता उन्हें गेंदबाजी करने के लिए सबसे कठिन प्रतिद्वंद्वियों में से एक बनाती है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच यहां खेले गए पहले वनडे में कोहली ने शतक लगाया जिससे भारतीय टीम यह मैच जीतने में सफल रही। यान्सेन ने कहा कि विश्वस्तरीय बल्लेबाजों के सामने गेंदबाज के पास शुरू में ही कुछ अवसर होते हैं। जब आप विश्वस्तरीय बल्लेबाजों को गेंदबाजी करते हैं तो उन्हें आउट करना काफी मुश्किल होता है। मैं हमेशा बल्लेबाज को उसकी पहली 10 या 15 गेंदों पर आउट करने की कोशिश करता हूं क्योंकि वह तब विकेट से सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर रहा होता है। उन्होंने कहा लेकिन एक बार जब वह लय हासिल कर लेते हैं तो उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में आप प्लान बी या सी पर चलते हैं। कोहली ने रविवार को अपना 52वां वनडे शतक जड़कर भारत को 17 रन से जीत दिलाई जिससे मेज़बान टीम ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। यानसन ने भारत के 2017-18 के दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान 17 वर्षीय नेट गेंदबाज के रूप में पहली बार कोहली को गेंदबाजी की थी।

आक्रामक बल्लेबाजी का श्रेय रोहित और द्रविड़ को : अश्विन

नई दिल्ली : भारत के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने सीमित ओवर प्रारूप में भारत की आक्रामक बल्लेबाजी की रणनीति का श्रेय पूर्व कप्तान रोहित शर्मा और पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ को दिया। टीम को इस रवैये से पिछले कुछ वर्षों में काफी सफलता मिली है।

अश्विन ने कहा कि इन दोनों दिग्गजों ने ना केवल अधिक आक्रामक शैली अपनाने पर जोर दिया बल्कि खुद भी उदाहरण पेश किया। इससे टी20 अंतर्राष्ट्रीय और वनडे में भारत के रवैये में बदलाव आया। अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल 'ऐश की बात' पर कहा कप्तान के रूप में रोहित हमेशा टीम को यह दिखाते रहे हैं कि वह उनसे क्या चाहते हैं। टी20 और वनडे क्रिकेट में भारत जिस परिवर्तनकारी बल्लेबाजी से गुजरा है उसका बहुत सारा श्रेय रोहित और राहुल भाई को जाता है।

शाहरुख खान ने रसेल को योगदान के लिए शुक्रिया कहा

नई दिल्ली : बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने आईपीएल टीम कोलकाता नाइट राइडर्स से संन्यास लेने वाले वेस्टइंडीज के क्रिकेटर आंद्रे रसेल के योगदान की तारीफ करते हुए सोशल मीडिया पर उनके लिये लंबा संदेश लिखा है।

आक्रामक हरफनमौला रसेल ने 16 दिसंबर को होने वाली मिनी नीलामी से पहले रविवार को आईपीएल से संन्यास की घोषणा के साथ बताया कि वह तीन बार की विजेता केकेआर के कोचिंग स्टाफ में पावर कोच के तौर पर शामिल होंगे। शाहरूख ने एक्स पर लिखा बेहतरीन यादों के लिये शुक्रिया आंद्रे। चमकते कवच में हमारा शूरवीर। केकेआर के लिये आपका योगदान इतिहास में दर्ज हो गया और अब एक खिलाड़ी के तौर पर नये अध्याय की शुरुआत। पावर कोच, जो अपना ज्ञान, अनुभव और ताकत का राज केकेआर के खिलाड़ियों के साथ साझा करेगा।

स्विट्जरलैंड के खिलाफ कमजोरियों को दूर करना चाहेगी भारतीय टीम

जूनियर हॉकी विश्व कप

मदुरै, एजेंसी

भारतीय टीम बेहतरीन फार्म में चल रही है लेकिन अभी तक उसे असली चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा है और ऐसे में वह मंगलवार को यहां एफआईएच जूनियर पुरुष विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट के नाकआउट चरण से पहले अपने अंतिम ग्रुप लीग मुकाबले में स्विट्जरलैंड के खिलाफ जीत की लय जारी रखने और अपने कमजोर पक्षों को दूर करने की कोशिश करेगी। भारत और स्विट्जरलैंड दोनों ही पूल बी में दो-दो मैच जीतकर अजेय हैं, लेकिन भारतीय टीम बेहतर गोल अंतर के आधार पर तालिका में शीर्ष पर है। चेन्नई में पहले दो मैच में भारतीय टीम ने गोल की बरसात करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने पहले मैच में चिली को 7-0 से और फिर ओमान को 17-0 से हराया। दूसरी ओर स्विट्जरलैंड ने ओमान को 4-0 से हराया और फिर चिली पर 3-2 से जीत हासिल की। भारतीय टीम से उम्मीद की जा रही है कि वह अपना विजय अभियान जारी रखकर नॉकआउट से पहले बड़ी जीत हासिल करने की कोशिश करेगी।

सोमवार को चेन्नई में मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में जापान और न्यूजीलैंड के बीच रोमांचक मुकाबला हुआ।

जापान (लाल) और न्यूजीलैंड के खिलाड़ी चेन्नई में मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में हॉकी पुरुष जूनियर वर्ल्ड कप के दौरान मुकाबला करते हुए। एजेंसी

भारत हांगकांग मास्टर्स एशिया कप हॉकी में जीता

नई दिल्ली : भारत ने हांगकांग में आयोजित हांगकांग मास्टर्स एशिया कप 2025 में 40 वर्ष से अधिक उम्र के पुरूष और महिला मास्टर्स वर्ग में स्वर्ण पदक जीते। हांगकांग फुटबॉल क्लब पर 26 से 30 नवंबर तक हुई विश्व मास्टर्स हॉकी एशिया चैम्पियनशिप में भारतीय पुरुष टीम ने ग्रुप चरण में हांगकांग को 4-0 और 5-4 से तथा सिंगापुर को 4-0 और 3-2 से हराकर शीर्ष स्थान हासिल किया।

महिला वर्ग में भारत ने ग्रुप चरण में सिंगापुर को 7-2 से हराया जबकि हांगकांग से 1-1 से ड्रॉ खेला। न्यूजीलैंड के खिलाफ उसे 2-4 से पराजय झेलनी पड़ी लेकिन फाइनल में हांगकांग को 2-0 से हराकर खिताब जीता। हॉकी इंडिया ने दोनों टीमों की तस्वीरें साझा करते हुए एक्स पर लिखा चैम्पियंस ऐसे दिखते हैं।

अप्रत्याशित घटना | निजी कारणों का हवाला दिया, सूत्रों ने टीम का खराब प्रदर्शन बताया

महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच ने दिया इस्तीफा

नयी दिल्ली, एजेंसी

एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने निजी कारणों का हवाला देकर तुरंत प्रभाव से पद से इस्तीफा दे दिया है।

हॉकी इंडिया ने देर शाम जारी बयान में खबर की पुष्टि करते हुए कहा भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने निजी कारणों से पद से इस्तीफा दे दिया है। हरेंद्र सिंह ने अप्रैल 2024 में ही पद संभाला था और समझा जा रहा था कि वह लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 तक टीम के साथ रहेंगे। सूत्रों ने बताया, टोक्यो ओलंपिक 2020 में चौथे स्थान पर रही टीम के मुख्य कोच नीदरलैंड के शोर्ड मारिन की भारतीय टीम में इस पद पर वापसी हो सकती है।

अचानक हुए घटनाक्रम में हरेंद्र सिंह ने हॉकी इंडिया को ईमेल भेजकर सूचित किया है कि वह तुरंत प्रभाव से पद छोड़ रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह विशुद्ध रूप से उनका 'निजी फैसला' है।

सूत्रों ने बताया कि मारिन की भारतीय महिला हॉकी टीम के कोच के रूप में वापसी हो सकती है जिनके मार्गदर्शन में भारतीय टीम तोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए चौथे स्थान पर रही थी। मारिन ने अगस्त 2021 में महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच के पद से इस्तीफा दिया था। सूत्रों ने इस्तीफे का कारण टीम का खराब प्रदर्शन बताया है। हॉकी इंडिया के एक सूत्र ने कहा पिछले डेढ साल में टीम ने अपेक्षित नतीजे नहीं दिये हैं जबकि सारी मनचाही सुविधायें कोच को दी गई।

फिटनेस भी बड़ा मसला रहा है और टीम में दर्जन भर खिलाड़ी चोटिल हैं। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने बयान में कहा हम हरेंद्र सिंह को उनकी सेवाओं के लिये धन्यवाद देते हैं। भारतीय हॉकी के लिये उनकी प्रतिबद्धता जगजाहिर है। हम जल्दी ही उनके विकल्प की घोषणा करेंगे।

हरेंद्र सिंह लखनऊ विश्व कप 2016 विजेता भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के कोच रहे थे। वह भारतीय महिला टीम के मुख्य कोच के रूप में वापसी से पहले 2021 से 2024 तक अमेरिका की राष्ट्रीय पुरुष हॉकी टीम के कोच थे। वह सितंबर 2017 में भारतीय सीनियर महिला टीम के मुख्य कोच बने जिसने उस साल महिला एशिया कप जीता था।

2024 अप्रैल में संभाला था पद

2028 लॉस एंजिलिस ओलंपिक तक रहना था टीम के साथ

- **नीदरलैंड के शोर्ड मारिन की हो सकती है वापसी**

भारतीय महिला हॉकी टीम का कोच रहना मेरे कैरियर की बड़ी उपलब्धि रही है। मैने निजी कारणों से इस्तीफा देने का फैसला किया है लेकिन मेरा दिल हमेशा इस बेहतरीन टीम के साथ रहेगा। हॉकी इंडिया के साथ सफर मेरे लिये खास रहेगा और मैं भारतीय हॉकी को शीर्ष स्तर तक ले जाने के उनके प्रयासों में सहयोग करता रहूंगा।

-हरेंद्र सिंह